वर्ष 47 अंक: 2 1.6.2024 शनिवार (मार्च-अप्रैल) वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

योगी परिवार आनंदोत्सव 2024

प.पू. गुरुजी
87वाँ प्राकट्योत्सव

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या श्रीजी भक्तिस्तु सर्वदा ॥

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

7 मार्च प्रातः 'अक्षरतीर्थ' पर
गुरुहरि काकाजी महाराज के स्मृति दिवस निमित्त अखंड परिक्रमा...

7 मार्च 2024
सायं

1934 - Forever

'अक्षरतीर्थ' में
ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी के
दिव्य अस्थि कुंभ की स्थापना...

अति समर्थ प.पू. गुरुजी की निश्रा में
आध्यात्म मार्ग पर चलने तत्पर हुए दीक्षार्थी...

दिव्य कुटुंब के मुक्तों द्वारा दीक्षार्थियों का पूजन एवं शुभकामनायें...

'अक्षरतीर्थ' यानि गुणातीत समाज के सर्जकों का संगम स्थल...

7 मार्च—गुरुहरि काकाजी महाराज का अंतर्धान दिन हम सब के लिए विशिष्ट प्रार्थना करने का दिन! अपने 'स्व' की अस्मिता पिघाल कर अनंत के सागर में विलीन होने का दिन!! और... अपने इष्टदेव को व्यापक में निहार कर शाश्वत् कर लेने का मंगलकारी दिन!!!

इस वर्ष **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** के स्मृति दिन को 38 वर्ष पूर्ण हुए। **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** तो धुन के राजा थे। उनसे कोई भी मिलने आता, तो सहजभाव से कहते—राजा, चलो 2 मिनट धुन कर लेते हैं। फिर 2 मिनिट से 10 मिनिट और कब आधा घंटा या घंटों बीत जाते, वो किसी को पता ही नहीं चलता था। इस हेतु पिछले कई वर्षों से **'अक्षरतीर्थ'** पर अखंड परिक्रमा-धुन एवं वार्षिक भजन संध्या का कार्यक्रम आयोजित होता है। भक्त बहुत ही भावपूर्ण हृदय से इस दिन का इंतज़ार करते हैं और ख़ास समय निकाल कर, धुन करते-करते प्रदक्षिणा व प्रार्थना करते हैं। **प.पू. गुरुजी** की आयु को मद्देनज़र रखते हुए, उनकी दिव्य हाज़िरी मान कर इस बार **प.पू. राजुभाई ठक्कर, पू. सुहृदस्वामीजी,** संतों एवं मुक्तों ने दीप प्रज्वलित करके सुबह 11:00 बजे अखंड प्रदक्षिणा का शुभारंभ किया। अक्षरज्योति की बहनों के साथ सत्संग की भाभियों द्वारा बनाये कृत्रिम फूलों के तोरणों से अक्षरतीर्थ को बहुत सुंदर सजाया था। यह अद्भुत सुसज्जा देख कर भाभियों की सेवा के प्रति सहज ही दिल नतमस्तक हो गया कि अपने घर की जिम्मेदारियाँ संभालने के साथ-साथ, समय निकाल कर मंदिर के प्रति अपनी भक्ति अदा करने का अवसर वे चूकती नहीं।

सायं 6:00 बजे आरती हुई और फिर **प.पू. दीदी** की निश्रा में सभी बहनों-भाभियों ने गरबा करके प्रभु के प्रति अपना भाव प्रकट किया। तदोपरांत **सेवक पू. शिवम्** एवं **पू. सरल** जो कि **11 मार्च** को साधु की दीक्षा लेने वाले थे और **पू. नक्षत्र** जो कि **13 मार्च** को सेवक की दीक्षा लेने वाले थे, उन्होंने दूल्हे की भाँति बढ़िया पोशाक पहनी थी। प.पू. गुरुजी की गाड़ी के आगे भक्तों के साथ वे भांगड़ा करते हुए **'अक्षरतीर्थ'** तक आये। **'अक्षरतीर्थ'** में **प.पू. गुरुजी** के सोफे पर आसीन होने के बाद भजन संध्या आरंभ हुई। **पू.राकेशभाई, पू. डॉ. दिव्यांग, पू. सौरभजी, पू. पंकज रियाज़जी, सेवक पू. विश्वास** इत्यादि ने भजन प्रस्तुत करके वातावरण को दिव्यता से भर दिया।

26 अक्टूबर 1992—अन्नकूट के शुभ दिन **गुरुहरि पप्पाजी महाराज** के वरद् हस्तों से **गुरुहरि काकाजी महाराज** का **'अस्थि कुंभ'** यहाँ स्थापित करवा कर, **प.पू. गुरुजी** ने स्थानिक

मुक्तों के मनोरथ-शुभ संकल्पों की प्रार्थना हेतु एक पवित्र स्थल प्रदान किया था। तब **गुरुहरि पप्पाजी** ने **गुरुहरि काकाजी** की स्मृति करते हुए कहा था—

गुणातीत समाज के प्रेरक, प्रवर्तक एवं प्राणाधार यहाँ विराजमान हैं

और

प.पू. ज्योति बहन ने कहा था— ***यही हमारे लिये अक्षरदेरी है।***

(अक्षरदेरी अर्थात्—गुजरात के गोंडल में मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामीजी का समाधि स्थल)

सो, प.पू. गुरुजी ने इसे **'अक्षरतीर्थ'** नाम देकर दिल्ली मंदिर में एक तीर्थ स्थल बनाया।

फिर 21 जनवरी 1995 को **ब्रह्मस्वरूपिणी सोनाबा** के अक्षरधामगमन के बाद, स्थानिक मुक्तों की हाज़िरी में **प.पू. गुरुजी** ने प.पू. सोनाबा का अस्थि कुंभ इसमें स्थापित करवाया।

गुरुहरि पप्पाजी के स्वधामगमन के उपरांत **11 जुलाई 2006—गुरुपूर्णिमा** के मंगलकारी दिन उनका अस्थि कुंभ भी यहीं स्थापित किया गया।

26 जुलाई 2021 को **ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी** ने स्थूल रूप से विदाई ली। इस 7 मार्च को उनका **'अस्थि कुंभ'** भी अक्षरतीर्थ में स्थापित करने का सुनिश्चित किया था। सो, भजन संध्या पूर्ण होने के बाद **ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी** के 'अस्थि कलश' के पूजन विधि का कार्यक्रम आरंभ हुआ। सायं 8:35 पर सर्वप्रथम **प.पू गुरुजी** ने कलश का पूजन किया। तत्पश्चात् **प.पू. राजुभाई ठक्कर, पू. सुहृदस्वामीजी** के साथ दिल्ली मंदिर से जुड़े नींव के हरिभक्तों एवं अलग-अलग प्रांत के मुक्तों ने कलश का पूजन करके पुष्प अर्पण किये। इसी प्रकार, **प.पू दीदी** के साथ **पू. स्मिता दीदी**, ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी के प्रति अनन्य निष्ठा से जुड़े **पू. अवस्थी मामा** की बेटी **पू. कश्यपी दीदी** तथा कुछ भाभियों ने कलश का पूजन किया और फिर पू. आशिष शाह ने कुंभ गर्भग्रह में स्थापित किया। इस दौरान प.पू. स्वामीजी की वाणी में बजती स्वामिनारायण धुन सुनते हुए ऐसा अनुभव हो रहा था कि मानो वे स्वयं यहीं हाज़राहज़ूर हैं।

जिस प्रकार श्री अक्षरपुरुषोत्तम संस्था के संस्थापक **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज** एवं **गुरुहरि योगीजी महाराज** को भुलाया नहीं जा सकता, ऐसे ही **गुणातीत समाज की नींव की त्रिपुटी गुरुहरि काकाजी महाराज, गुरुहरि पप्पाजी महाराज** एवं **ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी को गौण करना भयंकर भूल नहीं, अपराध कहा जाये। क्योंकि आज गुणातीत समाज में जो विकास, रौनक-शौनक दिखती है, वह इन्हीं स्वरूपों के अथक् परिश्रम की बदौलत है।** इसी भावना से प.पू. गुरुजी ने ये कुंभ एक साथ स्थापित कराये हैं।

विधि संपन्न होने के बाद ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी द्वारा तैयार किये आत्मीय-सर्वदेशीय समाज का संक्षिप्त दर्शन कराते हुए **प.पू. गुरुजी** ने मुक्तों को आशिष देकर निम्न सूझ दी– ***आज 7 मार्च, काकाजी का स्थूल शरीर छोड़ने का दिवस। इन्होंने अपने शरीर के सिवा कुछ छोड़ा नहीं है। वे सदैव हमारे साथ ही रहे हैं और हमेशा रहेंगे।*** *दूसरा, स्वामीजी और काकाजी का अद्वैत हर जगह, हर प्रकार से साकार और सिद्ध ही होता है।* ***हमारी ये कश्यपी (पू. अवस्थी मामा की सुपुत्री) हरिधाम से जुड़ी हुई है, लेकिन वो हरिधाम, अनुपम मिशन, गुणातीत ज्योत, पवई या दिल्ली मंदिर और इससे भी आगे प्रमुखस्वामी महाराज, महंतस्वामी महाराज के BAPS के केन्द्रों के प्रति भी कोई फ़र्क़ महसूस नहीं करती है। ये बहुत-बहुत बड़ी भगवद् कृपा मानी जाये।*** *वर्ना थोड़ा कुछ तो मन में रह जाये कि ये हमारा केन्द्र, ये तो BAPS का है, ये साहेब का है, ये तो गुणातीत ज्योत बहनों का अलग है। उसके मन में कोई फ़र्क़ नहीं है।* ***हम सब भी ऐसे अद्वैतभाव से सारे समाज के अंदर जुड़ जायें, यही आज के दिन प्रार्थना*** *और काकाजी के आशीर्वाद तो ऐसे भावना रखने वालों पर हमेशा बरसते ही रहेंगे। हरिप्रसादस्वामीजी का अस्थि कुंभ पधरा दिया है। यहाँ जो परिक्रमा करे, जो मन्नत माने – वो काकाजी सिद्ध करते रहें, ऐसी प्रार्थना...*

प.पू. गुरुजी के उपरोक्त मार्गदर्शन से सभी को यही अनुभव होता है कि **'अक्षरतीर्थ'** कोई सामान्य स्थल नहीं है। क्योंकि गुरुहरि काकाजी, गुरुहरि पप्पाजी, ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी एवं ब्रह्मस्वरूपिणी सोनाबा जैसी प्रभुधारक विभूतियों ने तो अध्यात्म मार्ग पर अग्रसर होते पथिकों की प्रगति के लिये निम्न जीवन मंत्र प्रदान किये हैं–

गुरुहरि काकाजी महाराज – 'हर क्रिया करने से पहले प्रभु के नाम का नमक डालो।'

गुरुहरि पप्पाजी महाराज – 'पहले प्रभु, फिर कदम।'

ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी– 'दास का दास बन कर रहो।'

ब्रह्मस्वरूपिणी सोनाबा– 'नियमित रूप से पूरे दिन में आधा घंटा भजन ज़रूर करें।'

सो, अब हम इन जीवनमंत्रों के अनुसार स्वयं को ढाल कर, सभी गुणातीत स्वरूपों की मरज़ी में वर्तते हो जायें, ऐसी प्रार्थना। अंत में सत्संगी कुटुंबों ने दीक्षा ले रहे सेवक **पू. शिवम्, पू. सरल व पू. नक्षत्र का पूजन किया** और महाप्रसाद लेकर प्रस्थान किया।

11 मार्च– प.पू. गुरुजी की 87 वीं प्राकट्य तिथि के मंगलकारी दिन गुणातीत स्वरूपों की निश्रा में

सेवक पू. शिवम् और पू. सरल की पार्षदी दीक्षा विधि की महापूजा...

राह मोक्ष की न दिखाये
जग में जोगी जैसी कोय
नारायणी सेना के सैनिक जैसी
पदवी कोई न होय
लेने अभयदान आओ जी रे, तुम आओ जी रे
जिसके **गुरुजी** शूरवीर सरदार...

प.पू. गुरुजी के 87वें प्राकट्य पर्व की मंगल बेला पर युवक बने 'नारायणी सेना' के सैनिक...

फाल्गुन शुक्ल एकम् हिन्दू पंचांग की एक विशेष तिथि है, जो फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष के पहले दिन को सूचित करती है। यह तिथि हिंदू धर्म में विभिन्न कार्यों और उत्सवों के लिए शुभ मानी जाती है और भारतीय समाज में धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण है। ऐसी मंगलकारी तिथि पर हमारे **प.पू. गुरुजी का प्राकट्य** होना भी सांकेतिक कहा जाये कि उन्होंने हमारा हाथ थाम कर, हमें सर्व संपन्न-सुखी करने का दायित्व स्वयं लिया है। सो, किसी भी प्रकार की चिंता करने की आवश्यकता नहीं। हाँ, उनके कहे अनुसार प्रभु का चिंतन किया करें।

हम सभी की जीवनडोरी समान ऐसे प.पू. गुरुजी को सन् 1953-54 में युवा दिलीप के रूप में **गुरुहरि योगीजी महाराज** (बापा) का संबंध हुआ। इन दिनों प.पू. बापा ने बिगुल बजाया था कि पढ़े-लिखे 51 युवकों को साधु बनाना है। इस भगीरथ कार्य के लिये उन्होंने **गुरुहरि काकाजी** और **गुरुहरि पप्पाजी** को चुना...

गुरुहरि पप्पाजी तो युवकों से कहते—

'बापा के वचन से साधु हो जाओ, एक-एक को भगवान जैसा बना देंगे...'

'नारायणी सेना' के बापा जैसे **शूरवीर सरदार** के करकमलों से दीक्षित ये संत प्रभु की अखंड धारक विभूति के रूप में आज सबको माया के पाश से छुड़वा कर, भगवान की मूर्ति बाँटने का कार्य कर रहे हैं और... मुमुक्षुओं को 'साधुता' की सर्वोच्च पदवी प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर करवाने के लिये वे खूब गरजू बने हैं।

अपने स्वानुभव द्वारा वे यही माहात्म्य संदेश देते हैं कि मातृभूमि के प्रति दृढ़ निष्ठा रखने वाले सैनिक अपनी देह कुर्बान करने से भी पीछे नहीं हटते, तो **'नारायणी सेना'** के सैनिक बनने का गौरव महसूस करते हुए, यदि साधक अपनी देह को सेवा में लगा दें और देहभाव को ठुकरा कर अपने सत्पुरुष की अनन्यभाव से भक्ति करने सर्वस्व का समर्पण कर दें, तो जीतेजी अक्षरधाम का सुख स्वयं प्राप्त करेंगे और अन्यों को भी उससे लाभांवित कर सकेंगे।

प.पू. गुरुजी ने खूब ही अनुग्रह करके **11 व 13 मार्च 2024—अपने प्राकट्योत्सव** पर **सेवक पू. शिवम** एवं **पू. सरल** को साधु की और **पू. नक्षत्र** व **पू. नीरेक** को सेवक की दीक्षा देकर, **'नारायणी सेना'** में भर्ती करके उन्हें तथा उनके कुटुंब को निहाल कर दिया। इन मुक्तों का अत्यंत सौभाग्य कहा जाये कि **प.पू. गुरुजी** के कृपा पात्र बने!

11 मार्च दोपहर से ही एक ओर पार्षदी दीक्षा ले रहे सेवक पू. शिवम् एवं पू. सरल की मुंडनविधि आरंभ हो गई थी, तो दूसरी ओर संतभगवंत साहेबजी के आगमन की तैयारियाँ हो रही थी। तकरीबन शाम 5:30 बजे **संतभगवंत साहेबजी** मंदिर में पधारे, तो उनके स्वागत हेतु **प.पू. गुरुजी** जेतलपुर में विराजमान थे और प्रांगण में **पू. सुहृदस्वामीजी**, संतों, सेवकों, हरिभक्तों एवं **प.पू दीदी** के साथ बहनों ने नमन करते हुए तालियों की गड़गड़ाहट से उनका स्वागत किया।

मंदिर के 'चिदाकाश' हॉल में विराजमान होने के बाद, दीक्षार्थी **सेवक पू. शिवम** के पिताजी **पू. सुशील भास्करजी** का परिचय संतभगवंत साहेबजी से कराया गया, तो आशीर्वाद देते हुए **संतभगवंत साहेबजी** ने सहजता से कहा— *जिसके बच्चे भगवान भजें, वो माँ-बाप धन्य हैं! योगी बापा अपने समय के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरूजी का उदाहरण देते हुए कहते थे कि अगर उनके सेक्रेटरी तुम्हें appointment दें, तो कितने खुश हो जाते हैं। यहाँ तो* ***साक्षात् भगवान के स्वरूप ने खुद अपना बेटा बना लिया, तो कितनी खुशी की बात है।***

साथ ही **पू. मीरा भास्करजी** को आशीर्वाद देते हुए कहा— *योगीजी महाराज कहते थे कि कोई लाख या करोड़ रुपये दे, ज़मीन-ज़ायदाद दे, वो बड़ी बात नहीं। लेकिन,* ***कोई अपना लड़का सेवक-साधु बनने दे, वो सबसे सर्वोपरि सेवा है। दीदी की आज्ञा में रहोगे, तो सब टल जाएगा।***

सच, संतभगवंत साहेबजी ने ये आशीर्वाद केवल भास्कर परिवार को ही नहीं, बल्कि हम सबको दे दिये और... बहनों के लिये संक्षिप्त में प.पू. दीदी की आज्ञा का महत्व समझा कर जो सूचन किया, उनके लिये उन्हें कोटि-कोटि नमन!

अल्पाहार के पश्चात् संतभगवंत साहेबजी एवं प.पू. गुरुजी कल्पवृक्ष हॉल में पधारे। सायं 6:30 बजे **पू. मैत्रीस्वामीजी** द्वारा महापूजा विधि आरंभ हुई। **प.पू. वशीभाई** ने दीक्षार्थियों को महापूजा दौरान **संकल्प विधि** करवाई एवं **प.पू. गुरुजी** ने भी उनके **चैतन्य के रक्षण का संकल्प** किया। **प.पू. भरतभाई** ने दीक्षार्थियों को मंगलस्वरूप कलावा बांधा, **प.पू. बापुस्वामीजी** ने पूजन करके दीक्षार्थियों को जनेऊ पहनाया, **प.पू. दासस्वामीजी** ने पूरे कपाल पर चंदन की अर्चा करके कंठी पहनाई, **प.पू. गुरुजी** ने गातरिया ओढ़ा कर कान में गुरुमंत्र दिया, **संतभगवंत साहेबजी** ने पाघ पहनाई और अंत में **प.पू. दिनकर अंकल** ने पूजा देकर पार्षदी दीक्षाविधि संपन्न की। तत्पश्चात् नये पार्षदों ने सभी स्वरूपों का पूजन करके श्री ठाकुरजी की आरती करके पाँच बार साष्टांग दंडवत् प्रणाम किया।

पार्षदी दीक्षा निमित्त गुरुवंदना करते हुए **सद्गुरु संत मनोजदासजी** ने प्रार्थना के रूप अपने निम्न भाव प्रस्तुत किये –

*...आज **वि.सं. 2080, रंग और सुगंध के फाल्गुन मास के पवित्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के पवित्र दिन हम सबके प्यारे ब्रह्मस्वरुप प.पू. मुकुंदजीवनस्वामी महाराज-गुरुजी का परम दिव्य प्रागट्य मंगल!** श्री ठाकुरजी महाराज-सर्व गुणातीत स्वरूपों से प्रार्थना है हम सबका शेष जीवन जहाँ तक रहे, बस ऐसे ही गुरुजी के दर्शन हमें प्राप्त होते रहें। **सदैव आपके सान्निध्य में रहें और सान्निध्य का अर्थ यह नहीं कि सदेह आपके निकट बैठे रहें। हम कहीं भी रहें, लेकिन आपका सान्निध्य, आपका सत्संग, आपकी स्मृति, आपका स्मरण सदैव हम प्राप्त कर सकें।** ऐसी कृपाशीष श्री ठाकुरजी महाराज एवं सर्व गुणातीत स्वरूपों हम सब पर बरसायें यही प्रार्थना है। आज के इस पवित्र महामंगलकारी दिन को ऐतिहासिक बनाया गया है। आने वाली कई सदियों में प.पू. गुरुजी का यह जन्मदिन, श्री नारायण की नारायणी सेना में दो युवा सेनानियों के जुड़ने के साथ याद किया जायेगा। **पू. शिवम्** एवं **पू. सरल** का हम सबकी नारायणी सेना में स्वागत, अभिवादन, अभिवंदन एवं प्रणाम है। मंदिर के इस खंड को **'कल्पवृक्ष'** नाम दिया गया है। पुराण में जो कथाएं हैं, उसके अनुसार यह स्वर्ग में स्थित है। सो, तात्पर्य यह हुआ कि हम सब यहाँ अक्षरधाम में विराजमान हैं। ऐसे अक्षरधाम में विराजमान होते हुए, प.पू. गुरुजी के आशीर्वाद से **प.पू. मैत्रीस्वामीजी** ने बड़े भक्तिभाव से षोडशोपचार सहित अद्भुत दिव्य पार्षदी दीक्षा महापूजा विधि संपन्न की। **इस महापूजा विधि के दरम्यान अखंड नहीं, किन्तु कम से कम कुछ क्षण के लिये ऐसा लगा कि आह्वान करने से साक्षात् प्रभु-गुणातीत स्वरुप यहाँ प्रगट थे। प.पू. मैत्रीस्वामीजी को हम सबका हृदयभाव से वंदन है...** आज के इस पवित्र दिन सहज मन से प.पू. शिवम एवं प.पू. सरल के माता-पिता को भी कोटि-कोटि भावपूर्ण हृदय से वंदन है कि जिन्होंने इस धरातल पर ऐसे दिव्य चैतन्यों को अवतरित करने के लिये कितनी भक्ति, तपस्या एवं साधना की होगी?*

*एक उक्ति है कि हे माता, अगर आपको संतान की प्राप्ति करनी हो, तो साधु-संत या किसी शूरवीर को जन्म देना... शुभ संयोग देखिये कि दोनों पार्षदों के नाम भी **अध्यात्म से प्रचुर हैं– सरल-शिवम।** गुणातीतभाव में जो अगणित गुण हैं, उसमें से एक श्रेष्ठतम गुण दासत्वभक्ति है और इसकी नींव सरलता में है। जहाँ सरलता है, वहीं दासत्वभक्ति सहजरूप से प्रगट हो जाती है और जहाँ सरलता-दासत्व है, वहीं शिवतत्त्व है। **जहाँ सरल एवं शिवम है, वहीं 'परम'***

सहज रूप से प्राप्त होता है। *प.पू. सरल एवं प.पू. शिवम एक ऐसे कालखण्ड में दीक्षित होने जा रहे हैं, जो असामान्य है। अत्यंत तेज गति से सब कुछ बदल रहा है। बहुत बड़े परिवर्तन-बहुत बड़ी आध्यात्मिक उत्क्रांति का कालखण्ड चल रहा है। प्रकृति अपने रूप-रंग रोज़ बदल रही है। समस्त वैश्विक स्तर पर बहुत बड़े परिवर्तन आ रहे हैं, आने वाले हैं। समाज-जीवन किसी नई दिशा की ओर जा रहा है, ऐसा प्रतीत हो रहा है। भारत में सामाजिक जीवन की नींव परिवार-कुटुंब है। 25-30 सालों में परिवारों में भी बहुत बड़े परिवर्तन देख रहे हैं। आने वाले समय में ये और भी ज़्यादा होंगे। विज्ञान और तकनीक न केवल स्थूल चीजों को बल्कि युग को प्रभावित कर रही है... ये परिवर्तन किस दिशा में है और क्या परिणाम लायेगा, वो अभी देखना बाकी है। ऐसे बहुत ही नाजुक समय में श्रीनारायण की सेना के जो सेनानी बनने जा रहे हैं, उनके लिये बहुत संभल कर चलने का ये काल है।*

...बहुत प्रसन्नता हुई कि ***दीक्षा की विधि में स्वयं भगवान के तत्त्व के धारक प.पू. गुरुजी ने भी प्रभु के बल से, प्रभु के जरिये एक प्रतिज्ञा लेकर दीक्षार्थियों की हर तरह की जिम्मेदारी स्वीकार की। तो, भले ही समय नाजुक है, लेकिन जिन्होंने साक्षात् भगवान का तत्त्व सांगोपांग धारण किया है ऐसे प.पू. ब्रह्मस्वरूप गुरुजी ने आपका हाथ थामा है...***

एक बात साझा करता हूँ— आज से करीब 14 साल पहले ब्रह्मज्योति के 'परिमल' निवास में कुछ साधक रात को पौने दो-दो बजे कुछ सेवा कार्य में व्यस्त थे। कहीं दूर का विचरण करके संतभगवंत साहेबजी वापिस ब्रह्मज्योति पधारे थे... तब 'परिमल' में ही पहली मंजिल पर उनका एक कक्ष था। तो, स्वाभाविक रूप से वहाँ से गुज़रते हुए कमरे के बाहर कुछ पादुकायें और बत्ती जली देख उन्होंने दरवाज़ा खोला और पूछा कि क्या कर रहे हो? संतों ने कहा कि साहेब छोटा-सा प्रोजेक्ट है। साढ़े पांच घंटे की मार्गीय यात्रा करके आने के बावजूद वे वह प्रोजेक्ट देखने बैठे। इस दौरान कुछ संवाद हुए, तो एक साधक ने निर्दोषभाव से साहेबजी से पूछा— ***आपके जीवन का उद्देश्य क्या है?*** *तनिक भी विलंब किये बिना* ***साहेबजी*** *ने 5 बातें कहीं, जो हमें आज भी काम आयेंगी और संपूर्णतः निश्चिंत कर देंगी—*

हमारे जीवन का तो बस इतना ही उद्देश्य है—

1. ***भगवान के स्वरूप में मन की अखंड वृत्ति रखनी है।***
2. ***शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज के कार्य को वेगवंत (गतिशील) रखना।***

गढडा प्रथम प्रकरण का प्रथम वचनामृत यही बात कहता है कि भगवान के स्वरूप में मन

की वृत्ति अखंड रखने से बड़ी न तो कोई स्थिति है न कोई सिद्धि है। तो, भगवान के स्वरूप में मन की वृत्ति अखंड रखते हुए शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज के कार्य को कार्यशील रखना है।

3. *गुरु तथा भगवान की प्रसन्नता के लिये सब कुछ करना है।*
   ये नहीं कि मैं बड़ा बन जाऊं, मेरा शिष्यवृंद बड़ा हो जाये, मेरा आश्रम बड़ा बन जाये, भक्तों की संख्या बड़ी हो जाये, सब सत्संगी हो जायें।
4. ***गुरु और प्रभु जिस प्रवृत्ति में सम्मिलित करें, उस प्रवृत्ति में जुड़ें।***
5. *Without any complaint-**किसी भी प्रकार की फरियाद किये बिना, भगवान और उनके भक्तों की संप, सुहृदभाव और एकता से सेवा करना।***

हम सब एक ही मार्ग के सहयात्री हैं। आगामी 7 सालों द्वारा आने वाले 100 सालों की नींव रखी जायेगी। यह मैं इसलिये कह रहा हूँ कि

2027—जागास्वामीजी का द्विशताब्दी महोत्सव

2029—ब्रह्मस्वरुप भगतजी महाराज का द्विशताब्दी महोत्सव

2031—भगवान स्वामिनारायण के जन्म के 250 वर्ष—सार्ध द्विशताब्दी मनाई जायेगी।

भगवान स्वामिनारायण ने एक वचनामृत में कहा है कि आप लोग मेरे कहे जाते हो, तो आप में मैं कोई कसर नहीं रहने दूँगा। हम सिर्फ कहलाने के लिये आश्रित नहीं हैं। हम जीवन के प्रतिक्षण संतभगवंत साहेबजी के दिये पाँच सूत्रों को नज़र समक्ष रखते हुए, प्रभु और गुरु की आज्ञा तथा प्रसन्नता के लिये, अपने आपको भगवान और भगवान के भक्तों की सेवा में दासत्वभक्ति से संप, सुहृदभाव और एकता के लिये संपूर्णतया समर्पित करने की चाह रखते हैं। सो, फ़रियाद किये बिना और अपनी मन की वृत्ति प्रभु में रखते हुए इन 7 साल के दौरान हम सब इसी राह पर चल सकें—ऐसी शक्ति, ऐसा अच्छा बुद्धियोग श्री ठाकुरजी महाराज एवं सारे गुणातीत सत्पुरुष जो यहाँ विराजमान हैं, सर्व संतजन-गुरुजन यहाँ विराजमान हैं, वो हमें प्रदान करें।

तदोपरांत दीक्षार्थियों के प्रति अपना हर्ष व्यक्त करते हुए **प.पू. दिनकर अंकल** ने आशीष वर्षा करी—

*...**गुरुजी ने यहाँ बहुत भव्यातिभव्य समाज खड़ा किया है।** सालों पहले **शास्त्रीजी महाराज** ने **श्री गुलजारीलाल नंदाजी** को **श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज** की मूर्ति देकर आशीर्वाद दिये थे—*

छपिया-अयोध्या में पूर्णपुरुषोत्तम नारायण सहजानंदस्वामी महाराज प्रगट हुए, तो दिल्ली की पवित्र भूमि पर आप अक्षरपुरुषोत्तम का महिमा गान करो। इसलिये मैं ये मूर्ति देता हूँ और बहुत बड़ा काम होगा।

नंदाजी से जितना हो सका, उतना किया होगा। ***लेकिन योगीजी महाराज द्वारा दोहराया वह संदेश काकाजी ने आत्मसात् करके, गुरुजी को यह सेवा कार्य दिया। गुरुजी ने भी बहुत अच्छी तरह से ये समाज का सर्जन किया। गुजरात में स्वामिनारायण भगवान और उनके संतों का इतना अतिशय महिमागान होता रहता था, वहाँ वह संभव है। लेकिन, जहाँ स्वामिनारायण का 'स' किसी को पता नहीं था, वहाँ गुरुजी ने ऐसी युवा पीढ़ी को तैयार किया।***

दो दिन के बाद हमारा नक्षत्र, जो High School से graduate भी नहीं हुआ है, वो सेवक की दीक्षा ले रहा है। किसी के कहने पर नहीं, बल्कि अपने दिल से ले रहा है। इसके अंदर कितने पावरफुल संस्कार हैं, वो काम कर रहे हैं। ***आज से ढाई साल पहले 13 सितंबर 2021 को हमारे 'सरल' को सेवक की दीक्षा दी गई थी। ढाई साल में बड़ा वृक्ष बन गया कि अब साधु बन गये।*** *उनका नाम पहले 'सौरभ' था। उसमें से* ***सरल*** *बने और अब* ***गुणातीत स्थिति पाने के लिये साधु बन रहे हैं।*** *ऐसे ही हमारे* ***'शिवम्' video या still photos खींच कर हृदय में मूर्ति बसाते हैं। Very happy smiling personality.*** *इन्हें देख कर स्वामिनारायण भगवान के समय के नित्यानंदस्वामी और baps के भद्रेशदासस्वामी की मिठासभरी स्मृति होती है...* ***गुरुजी ने अपने ऐसे संतों के मां-बाप को भी कितना प्रेम दिया होगा!*** *मैं तो ये सोचता हूँ कि* ***जब उनके मां-बाप ने जन्म लिया होगा, तब शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज की दृष्टि उन पर पड़ी होगी। वही चैतन्य अक्षरधाम से यहाँ पधारे हैं।*** *तभी अपने बच्चों को साधु बनने के लिये 'हाँ' कह सकते हैं और हमारे गुणातीत समाज की शोभा बढ़ा रहे हैं... दोनों पार्षदों के चरणों में साष्टांग दंडवत् सहित प्रार्थना-प्रणाम है कि* ***आप ये गुणातीत समाज की बहुत-बहुत शान बढ़ाओ और जैसे अर्जुन निमित्त बना, ऐसे आप हमारे निमित्त बनो,*** *वही प्रार्थना।*

प.पू. गुरुजी ने छोटे-बड़े, युवा-वृद्ध, भाइयों-बहनों, सभी मुक्तों को उनकी कक्षा के अनुरूप अपनापन-अद्भुत स्मृतियाँ देकर, उन्हें केवल प्रभु की मूर्ति में लयलीन होने के मार्ग पर प्रशस्त किया है। सो, अक्षरज्योति की साधक बहन **पू. नित्या दीदी** ने **प.पू. गुरुजी** के गुणों, उनके प्रेम, उनके छुपे प्रयासों के प्रति नतमस्तक होते हुए, अपने हृदय के भावों को निम्न कविता के रूप में लिखा था। जिसे **पू. भद्रायुभाई** ने पू. नित्या दीदी की ओर से अलंकारिक रूप से प्रस्तुत करके, स्वरूपों से आशीर्वाद प्राप्त किया। संतभगवंत साहेबजी को तो कविता इतनी पसंद आई कि उसके बाद उन्होंने **'पसंद'** शब्द को कई बार दोहरा कर अनोखी स्मृति दी!

‘क्योंकि मुझे आप पसंद हैं’

कोई क़ाबिलियत कोई हुनर न होते हुए भी,
आपने मुझे अपनी सेवा में लिया,
मुझे आपका यह अनुग्रह बहुत **पसंद** है!
आपकी सेवा में रहना
और
उस सेवा के लिए पहले से ही जाकर तैयारियाँ करना
मुझे उन तैयारियों में आपका अनुसंधान बहुत **पसंद** है!
सफ़र तो कई बार हम सभी करते हैं
पर आपके साथ के सफ़र में,
आपकी गाड़ी को follow करना,
और
दर्शन करते-करते सफ़र तय करना बहुत **पसंद** है!
यूँ तो साधक की नज़र,
गुरु की एक दृष्टि की मोहताज़ है;
और फिर गुरु की नज़र से नज़र मिल जाये,
वो सोने पे सुहागा जैसा अनुभव है,
मुझे उस सिहरनभरी पल का एहसास बहुत **पसंद** है!
एक बात बताऊं प्रियवर,
वैसे तो आपकी हर अदा ही मोहक है
पर हास्य मुद्रा के समय,
वो भृकुटियों को उठाती आपकी मूर्ति,
मुझे मंत्रमुग्ध करता ये अंदाज़ बहुत **पसंद** है!
ए103 में एक हाथ में धोती,
एक में नैपकिन पकड़े हुये वो अलमस्त चाल
और अब
लुंगी-कुर्ते में अपने कर्ण-अर्जुन का हाथ थामे,
वो धीमी-धीमी बांके बिहारी सी निराली चाल,

आँख बंद कर मानसी में
आपके साथ ठुमकते चलना बहुत **पसंद** है!
आप भले मुझे देखो-न देखो, पूछो-न पूछो
इसके बावजूद भी मेरे दिल में
ये प्रतीति कराना कि **'मैं हूँ ना'**
निश्चिंतता देता यह एहसास बहुत **पसंद** है!
कभी आप ब्रह्माण्ड के विचरण में हो
और तब नज़र हम पर टिक जाए,
एकटक देखती निगाहों से मेरी चेतना की
हो रही Scanning का आभास बहुत **पसंद** है!
आपके साथ खरीदारी करने जायें तब
सेवक से आपका कहलवाना,
जो लेना हो ले लो, payment मैं कर दूंगा
आपके अपनेपन से भरी वो आवाज़ बहुत **पसंद** है!
हो गृहस्थ के जीवन का मनमुटाव,
या
साधक की साधना की रुकावट की बात
भारी मन लेकर जो आये
उसे हल्का फूल बना देना
मुक्तों के लिये प्रभु आपका यह आयास बहुत **पसंद** है!
स्थावर मंदिर तो बहुत सुन्दर बन गया मेरे प्रभु
मेरा अंतर हो जाये आपका मनोहर मंदिर
जिसमें रहो आप अखंड हाज़िर
प्रागट्यदिन पर करूँ प्रार्थना मेरे गुरुवर
निरामय रहें आप, आनंद करते और कराते
आपके मुख पर उन्मुक्त हास्य मुझे बहुत **पसंद** है!

इसके पश्चात् प.पू. गुरुजी के कहने पर पू. नक्षत्र के Principal **P. David Sir** ने अपने निम्न भाव प्रगट किये –

Good evening to everyone. Its my pleasure that I am here. Guruji's presence is a blessing for me. Coming over here is always like a homecoming for me. I feel so blessed, so peaceful and I never expected to always get such attention. Every time I come and really feel blessed being here. Thats what I would say. And today I wanted to make it by all means when I heard that two saints are being initiated. Just to be frank with you I am a christian catholic. I never felt that I would be accepted in a temple like this in the presence of everyone. ***Whenever I come I feel like a part of this family. And Guruji has made me in such a way that everyone accepts me so well you know, as a family. Not only me, but to my family also. That's what actually makes me to come again and again to become closer to everyone and closer to Guruji.***

I have never failed even in our own places, among the christians, among my friends, even in the church, to share my thoughts about Guruji and whatever the little things that I know how the temple works you know. *I feel really happy to share, because its always, what I learned is whatever is good in others, we should always accept... Everyone has got something good in them. Every religion has got something good in their own. Why not we take the good things, and if required, adopt it as a person. Each one's faith is different, that is what I really felt. It is actually always accepted and respected by Guruji.* ***Whenever I leave the place after going here, Guruji always blessed me saying the words let Jesus Christ bless you.*** *See that is something that comes from him.* ***This is something different.*** *He always says this. Why should he take the name of Jesus?*

...Last time when we brought the statue of a lady for didi's place, and one thing that ***Guruji said was this Mother Mary as he said she is the most respected person in the world.*** *That is why I am giving this Mother Mary statue there. I do not know to how many people I have shared this with. Because we can never think that this could be kept in a place like this. The thinking that she is a mother, that basic thing. We respect our mother and she is mother to the entire world, this I did not say.* ***The words came from Guruji's mouth you know. That is the beauty. Means how he appreciates!*** *He remains quiet, however much he studies a person.* ***But even if he expresses one thing, it means a lot.*** *It shows that he knows the persons. So that way I am really very very grateful. I wanted to see this entire ceremony.*

Because I have seen in our own, how things take place. People come forward to become a nun or a priest. It takes long years, we have seen. But I have never witnessed such. This is my first one. So when I got the invitation, I said whatever the time is, I will be there. So thank you from my heart for always inviting me for every event at the temple...

I was very happy when I heard about Nakshatra. I knew that he is something different, from the day I have seen him. Whenever I came here I realised that yes, there is something in him. I tell Guruji that if students like Nakshatra and our other devotees kids in the school, if such students are there in every school, then no teacher will ever have any problem with them. *They will be very happy to have such children instead of the naughty ones with the controlling and discipline problem.* ***I don't think any of the teachers have ever complained regarding any of the students coming from the temple. They are so happy and peaceful, so they can concentrate on other students.*** *Everybody appreciates. We do understand.* ***We can see there is something there in them and that is reflecting outside. That I could see in Nakshatra from day 1.*** *When I saw him in the temple that how closely he is associated with. Something told me that he is going to be in the temple forever. Day after tomorrow, he is becoming a sewak. I look forward to that ceremony too. I will certainly be there. It has become my part of being here with this entire Holy Family and Guruji. Thanks for this opportunity.* ***I always talk very highly about Guruji, the temple. The little thing I know, I keep spreading it in my capacity.***

समय अधिक होने के कारण **संतभगवंत साहेबजी** ने आशीर्वाद देने के लिये मना किया और अंत में **प.पू. गुरुजी** के निम्न आशीर्वाद से इस विशिष्ट सभा का समापन हुआ–

*...David Sir की बातें हम सबने सुनीं। **नक्षत्र ने स्कूल में रहते हुए किस प्रकार अपने सत्संग का परिचय दिया है, वो इससे ज़ाहिर होता है।** कोई Principal ऐसे मंदिर में जाकर अपने स्कूल students का appreciation नहीं करेगा। यदि करेगा तो with some reserve mind से, जबकि ये खुले दिल से बात करते हैं। **मैं ये चाहता हूँ कि अपने मंदिर के हरेक लड़के, हरेक लड़कियाँ इसी प्रकार सत्संग करते हुए ऐसे बनें। खूब सत्संग किया होगा, तभी दूसरों को बात कर पायेंगे और वो बात दूसरों को touch करेगी।** वर्ना हम कितनी भी बातें करें वो बातें यदि अपने जीवन में नहीं होंगी, तो सामने वाली व्यक्ति को वो touch नहीं करेगी। तो, ऐसा सत्संग हम सब करते रहें, हमारे सब बच्चे करते रहें– यही प्रार्थना...*

12 मार्च शाम 6:30 बजे से आवाहन धुन से सभा की शुभ शुरुआत हुई और **पू. राकेशभाई शाह, पू. हितेनभाई** (पवई), **पू. डॉ. दिव्यांग, पू. ऋषभ नरूला** एवं **सेवक पू. विश्वास** ने भजन प्रस्तुत करके वातावरण को दिव्यता भर दिया। गुणातीत ज्योत-परम प्रकाश के **पू. इलेशभाई** ने '**गुरुमां श्रीहरिनो वास**' गुजराती भजन गाकर गुरुजी के चरणों में अपना भाव अर्पण किया। तत्पश्चात् एक कविता द्वारा मुंबई के **पू. रमेशभाई त्रिवेदी** अपने भाव प्रगट करे। तत्पश्चात् सभी भक्तों ने **प.पू. बापुस्वामीजी** से निम्न आशीर्वाद प्राप्त किया—

*...**गुणातीतानंदस्वामी की बातों में है और योगीजी महाराज भी कहते कि जहाँ पंचविषय एवं देहभाव का खंडन होता हो और भगवान व भगवान के भक्तों की महिमा की बातें होती हो, वो अक्षरधाम का केन्द्र है।** इसलिये हम सभी अक्षरधाम की सभा में विराजमान हैं। गुरुजी का 87वाँ प्रागट्य दिन और हमारे छोटे बाल युवक सरल एवं शिवम का दीक्षा लेने का दिन है। गुरुजी और साहेब की हमारे ऊपर अत्यधिक कृपा है। जब से मैं सत्संग में आया; तब से वे मुझे अपना मानते हैं, वो उनका बड़प्पन है... कल गुरुजी ने प्रतिज्ञा पत्र में नवयुवकों की जिम्मेदारी लेते हुए जो प्रतिज्ञा ली, वो बहुत दर्शनीय है। जब 51 योगश्वरों को दीक्षा दी गई, तब योगीजी महाराज खूब प्रसन्न थे, क्योंकि योगीजी महाराज का 40 साल का संकल्प पूरा हो रहा था। योगीजी महाराज कहते थे कि अक्षरदेरी में गुणातीतानंदस्वामी से मैंने 40 साल तक प्रार्थना की, तब ये 51 नवयुवकों को दीक्षा मिली है। ये आसान बात नहीं है। उनकी छाया में हम भी घूमते थे, जैसे अभी नक्षु, पुण्यम् और संबंध घूम रहे हैं... BAPS में रहने वाले बड़े-बड़े स्वरूप ये मानते थे कि योगीजी महाराज उनके हैं, लेकिन वे तो गुणातीत समाज के थे। **काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी, मुकुंदस्वामीजी, साहेबजी, अश्विनभाई, शांतिभाई के साथ से हमें कभी महसूस नहीं हुआ कि हमारे साथ योगीजी महाराज नहीं हैं। गुणातीतानंदस्वामी** कहते थे— **मन, इंद्रियाँ और देह शत्रु है।** हम हमेशा शत्रुओं के बीच रहते हैं, घूमते हैं, खाते-पीते हैं। **ये सारे शत्रु किस प्रकार से दूर भागेंगे? तो, इन दिव्य स्वरूपों की कृपा से भागेंगे...** हमको ऐसा लगता है कि हम इन स्वरूपों की महिमा समझते हैं। लेकिन असल में ये हमारी महिमा अधिक समझते हैं।*

***गुणातीतानंदस्वामी** यह भी कहते— कथा करें, कीर्तन करें, बातें करें; मगर ऐसा मानना कि **मैं देह नहीं हूँ और इसके लिये आठों प्रहर भजन करना।** आठ प्रहर भजन तो तपस्वी पुरुष कर*

सकते हैं, सामान्य मनुष्य का ये काम नहीं। फिर भी ***इनकी छाया में रहते हैं, तो जितना हो सके इतना रुचि रख कर भजन करेंगे, तो उसे वो बहुत ज़्यादा मान लेते हैं।***

...योगीजी महाराज ने हमें दिव्य पुरुषों के साथ जोड़ दिया, तो आज सभी भक्तों की सेवा कर सकते हैं। ***भक्तों को दिव्य मानने में कभी तकलीफ़ भी होती है, मगर यही मानना है कि जो कुछ हो रहा है, वो भगवान ही कर रहे हैं।*** *पत्थर के ऊपर बार-बार जो रस्सी घिसती है, उस पर निशान पड़ जाता है। जब से सत्संग में आये हैं, तब से ये बात सुनी है कि* ***भगवान के भक्तों की माहात्म्ययुक्त सेवा करो तो अंतर में अशुभ संकल्प रहेगा नहीं।*** *आज सभा में बैठे स्वरूप ऐसे हैं कि जिनका अंतर ठंडा है और अच्छा संकल्प हो रहा है।* ***आज के दिन तक हमें अक्षरधाम में रखा है, आगे भी रखने वाले हैं ऐसा हमारे दिल में भरोसा है और खूब आनंद है।*** *आनंद ऐसा कि जब 1966 में हम संस्था से निकले, तो उससे पहले जब काका, पप्पा, बा और ये स्वरूपों का दर्शन हुआ, तब से आज के दिन तक हमें कोई दुःख या पश्चाताप नहीं हुआ है, बस आनंद में ही रखा है। उस समय तो थोड़ा कठिन मार्ग था, अब तो इन स्वरूपों ने गुलाब की पंखुड़ियों जैसा मार्ग बना दिया है। तो, किसी को भी दुःख नहीं आयेगा। अच्छी तरह से भगवान का भजन कर सकेंगे। ये दिव्य स्वरूप जिन-जिनकी जिम्मेदारी लेते हैं, वे आनंद-उमंग और महिमा से कूद-कूद कर सेवा कर रहे हैं। ऐसी सेवा और दिव्य स्वरूपों का माहात्म्य हमारे दिल में सदैव स्थिर रहे और माहात्म्युक्त सबकी सेवा करते रहें, जिससे हमारा अंतर ठंडा रहे और शुभ संकल्प अंतर में बढ़ता रहे...*

तत्पश्चात् **पैठण गादी के महंतश्री प्रकाशराजजी** ने अंग्रेज़ी में हृदय के उद्‌गार प्रकट किये, जिसका सार यही था कि **अगर तुम प्रभु के दास, तो प्रभु तुम्हारे दास**... इनके वक्तव्य के बाद **पू. डॉ. दिव्यांग** ने प.पू. गुरुजी का प्रिय गुजराती भजन—**'लागे वैकुंठथी रुडु वड़ताल**...' प्रस्तुत किया। 11 मार्च की सायं देर होने के कारण, भक्तों की सुविधा का ध्यान रख कर **संतभगवंत साहेबजी** ने आशीर्वाद देने से मना किया था। परंतु, आज नये दीक्षार्थियों के साथ-साथ सबके भाग्य का पार नहीं रहा जब सभा के अंत में **संतभगवंत साहेबजी** ने अपनी आंतरिक प्रसन्नता व्यक्त करते हुए निम्न आशीर्वाद दिये, जो कि खूब मननीय हैं—

...गुरुजी के सान्निध्य में दो दिन से ब्रह्मानंद चल रहा है। यूँ तो हमेशा ही ब्रह्मानंद चलता रहता है। ***कल गुरुजी की प्रागट्य तिथि के दिन दो युवाओं ने दीक्षा ली—सरल एवं शिवम्।***

दोनों भाग्यशाली युवाओं को हम सबकी ओर से अभिनंदन और उनके माता पिता को ज़्यादा अभिनंदन! योगीबापा *युवकों को दीक्षा देते समय कहते थे—**જનની જીવો રે ગોપીચંદની, પુત્રને પ્રેર્યો વૈરાગ્ય જી... ऐसी माताओं और पिताओं को धन्य है कि जिन्होंने अपने पुत्र और पुत्रियों को प्रभु ओर चलने के लिये समर्पित किया है, ये बहुत बड़ा काम है।***

- *आज सुबह दिल्ली का **National War Memorial** का दर्शन किया। **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई के शब्दों में कहें तो हम 140 करोड़ भारतवासी शांति व आनंद से जीवन व्यतीत कर रहे हैं, उसके पीछे भगवान की कई शक्तियाँ काम करती हैं। उसमें से एक Army वाले हैं।** उनके द्वारा पूरे देश की सीमा पर हमें protection मिलता है। जो दुश्मनों से लड़ते हुए शहीद हो गये। ऐसे हजारों सैनिकों की कुर्बानी को नमन करते हुए जो War Memorial बना है, वो देखने लायक है। इन सबके समर्पण से ही हम भारत में परम शांति और आनंद से अपना कारोबार चला सकते हैं। **हमारे जीवन में ये physical body का protection तो सबको दिया है, लेकिन भीतर से हम परम शांति, परम आनंद, परम सुख से जो अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं, उसके पीछे संतों की शक्ति काम करती है।** जब ऐसे युवा साधु बनते, तो बापा **राजा गोपीचंद** को याद करते थे। गोपीचंद राजकुंवर थे, अपने पिता के देहांत के बाद राजा बनने वाले थे। उनकी माता ऊपर झरोखे में खड़ी थी, वहीं नीचे वो बैठे थे। उनके मुख पर गरम-गरम बूंदें गिरीं, तो वो सोचने लगा कि अभी बारिश तो है नहीं ये बूंदें कैसे गिरी? तो ऊपर देखा तो उसकी माता रो रही थीं। वो माँ के पास गया और पूछा कि आपको क्या दुःख है? तुम राजमाता हो, क्या कमी, तकलीफ़ या दुःख है? माँ बोली—मुझे कोई तकलीफ़ नहीं है। पर बेटा, मैं तुझे देखकर सोचती हूँ कि तेरे पिता कैसे शक्तिशाली, रुपवान, कितने अच्छे थे, लेकिन वे चले गये। इसी तरह तू भी चला जायेगा। अपनी आत्मा के लिये तू क्या करेगा? फिर जिस प्रकार **उनकी माता ने उपदेश दिया, तो गोपीचंद राजपाट छोड़कर जंगल में चला गया और संन्यासी बन गया। इसी प्रकार ये माता-पिता अपने लड़के-लड़कियों की आत्मा के कल्याण के लिये सोचते हैं।** हम सबकी materialistic life है। बच्चा छोटा होता है, तब से यही पूछा जाता है कि बड़ा होकर क्या करेगा? Doctor, Engineer वगैरह-वगैरह... माँ-बाप को भी ऐसा रहता है कि अपने लड़के को Doctor, Engineer या Prime Minister बनाना है। वो इसलिये*

*कि पैसा, मान-सम्मान सब मिलेगा। कोई माता पिता ये नहीं चाहते कि मुझे मेरे लड़के का मोक्ष करवाना है। **शास्त्र और ऋषि-मुनि ऐसा कहते हैं कि 84 लाख जन्म के चक्कर में भटकने के बाद मानव देह मिलता है, जो श्रेष्ठ है। उस जन्म में यदि अपना मोक्ष हो जाये, तो अपना काम पूरा हो जाता है। जिन माता-पिता का अपने बच्चे को भगवान के लिये समर्पित करने में योगदान है, उसका पूरा यश माता-पिता और गुरु को मिलता है... कल मनोजभाई ने notice किया कि गुरुजी ने संकल्प किया कि प्रभु के बल से दोनों की जिम्मेदारी लेता हूँ। योग और क्षेम दोनों गुरुजी ने अपने सिर लिया है।** तो, गुणातीत समाज में ये क्या अलौकिकता बन रही है! संन्यासी तो कई लोग होते हैं, पर स्वामिनारायण भगवान इस ब्रह्मांड में आये, वो उन्होंने बहुत कृपा की। योगीजी महाराज कहते थे कि किसी ने तपस्या, अभीप्सा या यज्ञ नहीं किया है, स्वयं कृपा करके मानव रूप धारण करके अयोध्या के पास छपिया में महाराज प्रगट हुए। विशेषतौर से अपने साथ में मूल अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदस्वामी को लेकर आये और वरदान दिया कि ऐसे गुणातीतभाव में जो साधु रहते हैं, उनके द्वारा मैं पृथ्वी पर अखंड रहूंगा। सो, भगवान प्रगट ही रहे...*

*शिवम् और सरल को पूछो कि तुझमें क्या वैराग्य आ गया? क्या लोगों का थप्पड़ तुमने खाया? क्या प्रॉब्लम थी? गुजराती भाषा में कहें तो **तने शुं भीडो हतो के संसार छोडी दीधो...** उनके पास एक ही उत्तर होगा कि **गुरुजी के प्रति हेत के कारण संसार छूट गया! ये गुणातीत साधु का दर्शन है।** कितना भी किसी के साथ प्रेम हो, पर उसे बोलो कि तंबाकू-सिगरेट छोड़ दो या Doctor कहें कि तंबाकू कैंसर की बीमारी देता है, तब भी नहीं छोड़ते हैं। लेकिन **गुरुजी ने युवाओं को कहा कि संसार छोड़ दो, तो उन्होंने छोड़ दिया। सामान्य मनुष्य और गुरुजी के कहने में फ़र्क़ पड़ गया।***

✸ *1969 में हम कॉलेज में research कर रहे थे। तब हमारी गुणातीत ज्योत के नज़दीक The Union Bank Limited की branch थी। तब parliament में Prime Minister को विचार आया कि भारत की जो जानी-मानी बड़ी बैंक हैं, इन सबको हम Nationalize करके राष्ट्र की बैंक ज़ाहिर करते हैं। तो क्या हुआ कि पहले तो board पर लिखा था— The Union Bank Limited, उसी दिन दोपहर को The और Limited निकल कर दूसरा board लग गया, जिस पर लिखा था— Union Bank. इंदिरा गांधी उसे लगाने के*

लिये नहीं आई थीं, उन्होंने तो declare कर दिया, तो सब forces काम पर लग गईं। मैं या तुम बड़े tower पर खड़े होकर यदि ऐसा करने कहें, तो क्या होगा? इंदिरा गांधी बोले और सामान्य व्यक्ति बोले, उसमें फ़र्क़ इस प्रकार है कि ***हम सिर्फ बोलते हैं और गुरुजी प्रभु में रहकर बोलते हैं, उनके द्वारा प्रभु बोलते हैं, तो सबका संसार छूट गया। उन्होंने प्रभु की सत्ता धारण की है, प्रभु उनमें प्रगट हैं वही निशानी है। सबकी आत्मा में परमात्मा है, लेकिन आत्मा-परमात्मा के बीच में माया की layer है। तो, गुरुजी के साथ हेत करने से, उनके साथ जुड़ जाने से, उनकी कोई भी क्रिया जंचाने से वो layer हट जाती है, तब परमात्मा प्रकाशित होते हैं। गुरुजी के साथ आत्मबुद्धि-प्रीति होने से माया की layer निकल जाती है और भीतर का प्रकाश बढ़ जाता है, संसार छूट जाता है।***

- *गुरुजी ने जिम्मेदारी की जो प्रतिज्ञा ली, वो क्या? जैसे कि जब* ***गोपीचंद दीक्षित हुए, उसी काल में राजा भरथरी भी राजपाट छोड़कर संन्यासी बन गये।*** *ऐसा प्रसंग है कि एक गाँव में गोपीचंद और भरथरी इकट्ठे हुए और एक धर्मशाला में रुकने के लिये गये। वहाँ उन्हें कोई पहचानता नहीं था। धर्मशाला के आगे के दरवाज़े से भरथरी और पीछे के दरवाज़े से गोपीचंद दाख़िल हुए। दोनों के पास झोली थी। धर्मशाला में एक ही कील थी। एक ओर से भरथरी उस कील पर झोली टांगने के लिये आगे बढ़े, तो दूसरी ओर से गोपीचंद फटाफट उस कील के पास पहुँच गये कि मैं पहले अपनी झोली टांग दूँ। उनके पीछे खड़े भरथरी ने कहा—इस हॉल में पहले मैंने प्रवेश किया और कील पर पहले मेरी नज़र पड़ी है, इसलिये कील पर झोली टांगने का अधिकार मेरा है। गोपीचंद बोले कि कील के पास तो मैं पहले पहुँचा हूँ, तुम्हारा अधिकार कैसे हो गया? दोनों की आपस में बहस होने लगी। देखो, संन्यासी थे और कील के लिये लड़ पड़े। वहाँ पर एक बहन बैठे-बैठे माला फेर रही थी और यह देख कर बोली कि आप किस प्रकार के संन्यासी हो?* ***राजा भरथरी और गोपीचंद ने तो राजपाट छोड़ दिया और आप दोनों कील के लिये झगड़ते हो। वो जिनके नाम ले रही थी, वो ही वे दोनों थे। तब दोनों को अंतर्दृष्टि हुई कि हमने सारा राजपाट छोड़ दिया और एक कील के लिये लड़ रहे हैं। ऐसे हम सबके भीतर बहुत कीलें हैं, वो निकालने की जिम्मेदारी गुरुजी ने ली है। वे भीतर से सब कीलें निकाल देंगे। जब कील ही नहीं रहेगी, तो टांगने की ज़रूरत ही नहीं रहेगी।***

- *हम सब ऐसे थे कि क्या करना? कहाँ जाना? क्या बोलना? खबर नहीं थी। बस* ***जवानी के जोश में सब घूमते थे, लेकिन योगीजी महाराज मिले और उनकी दृष्टि हो गयी। सारा remote control उनके हाथ में आ गया। Television खुद अपना channel फट-फट नहीं बदलता, वो तो जिस आदमी के हाथ में remote control हो, उसकी मरज़ी से होता है। ऐसे ही योगीजी महाराज की जब से हम सब पर दृष्टि पड़ी, तो हमारे जीवन का पूरा control उनके पास चला गया।*** *हम क्या बनना चाहते हैं? कहाँ जाना चाहते हैं? कुछ नहीं चुना और सब माला फेरने लग गये। ऐसे प्रभु की शक्ति काम करती है और* ***वही योगीजी महाराज की प्रसन्नता के पात्र बनकर योगीरूप बने गुरुजी का प्रागट्य पर्व है। ऐसे गुरु मिलना, भगवान की अपरंपार कृपा है।*** *फिर ख्याल पड़ता है कि मैं देह नहीं हूँ, यह देह तो नाशवंत है। देह के भीतर रहती आत्मा अक्षर-ब्रह्म है, इसमें परब्रह्म परमात्मा प्रगट विराजमान हैं। उनकी महिमा क्या है? तो, वे सर्वोपरि, सर्व अवतारों के अवतारी, सर्व के कारण, मेरी-तुम्हारी सबकी बुद्धि के प्रवर्तक-प्रगट प्रमाण हैं। ऐसे सत्पुरुष के प्रति आत्मबुद्धि एवं प्रीति दृढ़ हो।*
- *अब तो सब पढ़े-लिखे हैं, सिरदर्द होने पर pain killer ले लेते हैं। लेकिन, 6 घंटे के बाद दर्द दोबारा शुरू हो जाता है। पर, सिरदर्द कोई दर्द नहीं है, बल्कि भीतर में कुछ problem है, उसका वो signal देता है। आप Doctor के पास जाओगे, तो वो जाँच करके बतायेगा कि B.P. High, indigestion या किस कारण दर्द है। Doctor diagnose करके जो दवाई देते हैं, उससे सिरदर्द ग़ायब हो जाता है।* ***रोग की पुस्तकों में तो बहुत लिखा भी है कि ये बीमारी है तो ये दवा लो, वो बीमारी है तो वो दवा लो, मगर diagnose कौन करेगा? उसके लिये Doctor की ज़रूरत होती है। इसी तरह अंतर का दर्द यदि निकालना है, तो गुरु की ज़रूरत होती है।*** *हमें क्रोध आता है, हमें मान चाहिये या अहंकार के लिये हम झगड़ते हैं। हम अपने आप मान लेते हैं कि मुझ में ये है, इसलिये ये होता है। नहीं,* ***गुरुजी के पास जाकर उन्हें बताओ और फिर वे जैसा कहें वो करो।***
- ***दादुकाका सत्यकाम जाबाल*** *का एक प्रसंग बताते थे। माँ का नाम जबाला था और उनके लड़के का नाम जाबाल था।* ***माँ ने जाबाल से कहा—बेटा तू युवा है और मेरी ख़्वाहिश है कि तू गुरुजी के पास जा, वो ब्रह्मस्वरूप हैं और तुझे भी ब्रह्मस्वरूप बनायेंगे। तेरे जीवन***

का मोक्ष हो जायेगा। *पर, गुरु को तेरा स्वीकार करना चाहिये। गुरुजी स्वीकार करेंगे, तो ही ये काम होता है। वह आश्रम में गया, तो गुरुजी ने एक बार उसे देखा मगर तीन दिन तक उससे कुछ कहा ही नहीं और उसकी तरफ देखा भी नहीं। अपनी माँ के बताये अनुसार उन्होंने पक्का किया था कि गुरुजी को छोड़कर जाऊंगा ही नहीं।*

गुरुजी ने देखा कि ये लड़का सच में कुछ सीखने आया है, तो पूछा—तुम कहाँ से आये हो और तीन दिन से यहाँ क्या कर रहे हो?

वह बोला—आप मुझे स्वीकार करो, मैं आपके पास आया हूँ, मुझे ब्रह्मविद्या पढ़नी है।

गुरु ने पूछा— सच में ब्रह्मविद्या पढ़नी है?

उसने बोला—हाँ, ब्रह्मविद्या पढ़नी है, गुणातीतभाव प्राप्त करके आपके रूप मुझे होना है।

गुरुजी ने कार्यकर्ता को बुला कर पूछा—अपनी गौशाला में कितनी गायें हैं?

उसने गिनती बताई।

गुरुजी ने कार्यकर्ता से कहा— जाबाल को 50 गाय दे दो।

फिर जाबाल से कहा— तू ये गाय लेकर जा और जब 200 गाय हो जायें, तब वापस आश्रम में आना।

सोचो! लड़का युवान, बुद्धिमान, शक्तिशाली था। गुरुजी से कुछ प्राप्त करने के लिये आया था। लेकिन, उसकी माता ने सिखाया था कि ***ब्रह्मस्वरूप अवस्था के लिये गुरु जो भी आज्ञा करें, उसका पालन करना ही ब्रह्मविद्या की राह है।*** *वर्ना, आमतौर पर क्या कहा जाये कि गुरुजी मैं ब्रह्मविद्या पढ़ने के लिये आया हूँ, गाय चराने के लिये नहीं आया हूँ। आमतौर पर तो एकदम स्थिर अवस्था में माला लेकर बैठे रहें, उसे ब्रह्मविद्या मानते हैं। लेकिन, जाबाल ने तुरंत 'हाँ' करी और गाय लेकर निकल गया।* ***फिर चार-पाँच साल बाद 200 गाय होने के बाद जब वह आश्रम की ओर रवाना हुआ, तो मार्ग में एक विस्फोट हुआ और वह गुरु की प्रसन्नता से ब्रह्मस्वरूप अवस्था को प्राप्त कर गया। जो कुछ भी प्राप्त होता है, वह गुरु की प्रसन्नता से होता है, अपने साधन से हो ही नहीं सकता। गुणातीतानंदस्वामी ने कहा है कि सौभरि ऋषि ने कितने साधन किये, लेकिन उनसे कुछ भी हासिल नहीं हुआ। गुरुजी की प्रसन्नता से ही होता है। उनकी प्रसन्नता क्या कि उनके साथ घूमें-फिरें, खायें-पियें, तो ख्याल आ जाता है कि उन्हें क्या पसंद है। उनकी पसंद का करने लग पड़ें, तो काम हो***

जाये। *दोनों सेवक भाग्यशाली हैं कि गुरुजी ने उन्हें स्वीकार करके अपनी नारायणी सेना में दाख़िल किया और स्वयं जिम्मेदारी ली।*

- ***जब 51 संतों को बापा दीक्षा दे रहे थे, तब उन्होंने कहा था कि खाली भी मैं करूँगा और ब्रह्मरस भी मैं भरूँगा...*** *त्यागी, गृहस्थ, शिक्षित, अशिक्षित, छोटा, बड़ा या वृद्ध जो भी हो, सबके लिये* ***गुणातीतानंदस्वामी ने एक ही सूत्र दिया है कि सत्संग यानि क्या? तो, बड़े पुरुष के समक्ष दो जोड़ कर प्रार्थना करें और वे जैसा कहें, वैसा करने से प्रभु राज़ी होते हैं।*** *संप, सुहृदभाव और एकता से मिलजुल कर जीवन जियें। शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज ने उपासना की महत्ता हमें समझाई है। काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामीजी और बा के सान्निध्य में 1966 में हमारे गुणातीत समाज की स्थापना हुई...* ***साधक को यह विचारने की ज़रूरत नहीं कि मुझ में या अन्यों में यह दोष है। पर, जैसे गुणातीतानंदस्वामी ने कहा कि देखने जैसे तो सिर्फ ये साधु ही हैं। उनकी ओर देखना अर्थात् वे जिस प्रकार राज़ी हों, इस प्रकार विचार, वाणी और वर्तन करना। तब भीतर का सब कुछ अपने आप निकल जायेगा। उसे निकालने के लिये प्रयत्न नहीं करना पड़ेगा...***

  बापा ने हमें कहा था कि आपको संसार में नहीं जाना है। संन्यासी बनना है, लेकिन भगवा कपड़े वाले नहीं। आप सबका हृदय भगवा करना है। गृहस्थी हो या त्यागी सबके भीतर में संन्यास develop करना है। *इसलिये* ***निष्कुळानंदस्वामी*** *ने बोला कि त्याग न टके रे वैराग्य विना, करिये कोटि उपाय रे...* ***वैराग्य तभी टिकेगा, जब भगवान या भगवान के सत्पुरुष के अलावा किसी जगह पर राग या attachment नहीं रहे... जिसका ऐसा वैराग्य होगा, उसका त्याग उजला होगा। ऐसा वैराग्य गुरुजी, संतों के प्रेम से उत्पन्न होता है। आप मेरे और मैं आपका ऐसा भाव हो जाता है।***

- *गुणातीतानंदस्वामी के समय में जूनागढ़ के नवाब का दीवान खाने में पक्षियों की जीभ खाता था। उसका बावर्ची हिन्दू और बहुत भक्ति वाला था। उसे भीतर से बहुत ग्लानि-जलन होती थी कि नौकरी की खातिर मैं बहुत हिंसा कर रहा हूँ। भगवान मुझे माफ़ नहीं करेंगे। हिंदुओं में सब लोग नये वर्ष के दिन मंदिर में दर्शन करने के लिये जाते हैं। तो नये साल पर वो भी मंदिर दर्शन करने के लिये जूनागढ़ मंदिर में गया। उसने भीतर से प्रार्थना करी कि प्रभु मुझे माफ़ करना, मैं बहुत पाप कर रहा हूँ। वह दर्शन करके निकल रहा था, तो*

वहाँ सभा चल रही थी और वो वहाँ जाकर बैठा। ***गुणातीतानंदस्वामी ने बातें करते हुए कहा कि घूमते-फिरते भी साधु के कपड़े का भी यदि स्पर्श हो जाये, तो लाखों वर्ष का पाप जल कर भस्म हो जाये।*** *उसने यह बात सुनी। मानो उसके संकल्प से गुणातीतानंदस्वामी ने यह बात करी। उसे मन हुआ कि जो मैं सोच रहा था, वही बात इन्होंने एक मिनिट में कह दी। सौभाग्य से उसे* ***जागास्वामी*** *मिले, तो उसने उन्हें रोक कर पूछा कि ये स्वामी जो बात कह रहे थे, वो सत्य है? जागास्वामी ने कहा एकदम सत्य बात है।* ***गुणातीतानंदस्वामी ऐसे साधु हैं कि लाखों नहीं, करोड़ों जन्म के पाप जल कर भस्म हो जायें।***

बावर्ची ने पूछा—मेरे बहुत पाप हैं, क्या वो भस्म हो जायेंगे?

जागास्वामी ने पूछा—तुम कौन हो?

उसने अपनी बात की—मैं ऐसा हूँ, मैंने बहुत पाप किया है।

जागास्वामी ने उसे कहा—तुम 4 बजे आना, उस समय गुणातीतानंदस्वामी आराम करके बाहर निकलते हैं, तब उन्हें दंडवत् करना। गुणातीतानंदस्वामी तुम्हें पूछेंगे कि आप कौन? उन्हें कहना कि मैं आपका हूँ।

बावर्ची ने ऐसे ही किया। 5 दंडवत् करने के बाद उसने गुणातीतानंदस्वामी के पांव छुए, तो उन्होंने पूछा कि तुम कौन हो?

उसने कहा—बापजी मैं आपका सेवक हूँ।

गुणातीतानंदस्वामी ने कहा— ऐसा! तुरंत अपने पास बुला कर उसकी पीठ पर 2 धब्बा मारे। सो, ***उसने जो पाप किया था वो भस्म हो गया। गुणातीतानंदस्वामी के धब्बा लगाने और उसे स्वीकार करने के बाद, उसके अंतर की जलन एकदम शांत हो गई। ऐसे ही ये गुरुजी ने आपका स्वीकार कर लिया, तो भीतर में शांति हो जायेगी। गुरुजी को वश करना है, तो प्रार्थना-भजन करके उनके पास आना। मानवरूप में जब प्रभु संत द्वारा मिलते हैं, तो उनमें सम्यक् निर्दोषबुद्धि रखना ही हमारी श्रेष्ठ भक्ति है। वे जो बोलें-करें, घूमें-फिरें, खायें-पीयें, जो भी करें वो हमें नहीं देखना है, उनमें प्रभु देखने हैं। उन्हें ऐसा करना चाहिये, वैसा करना चाहिये ऐसी सोच नहीं होनी चाहिये। वो जो करें उनके द्वारा प्रभु कर रहे हैं, उनमें से प्रभु बोल रहे हैं। ये खाते हैं तो प्रभु खाते हैं। इनकी हरेक क्रिया को हमें निर्दोषभाव, दिव्यभाव से देख कर, उनके समक्ष अहंकार रहित होना है। ऐसा करेंगे तो***

हिमालय की गोद में-गुफा में नहीं जाना पड़ेगा। जहाँ हैं, वहीं निर्दोष हो जायेंगे... सबको निर्दोष मानोगे, निर्दोष हो जाओगे। *ऐसा बोलने से हो जायेगा, इस बात में कुछ माल नहीं है।* ***इसके लिये आत्मा में ताक़त-बल चाहिये।***

- *High way पर 800 CC की एक मारुति (CC means cubic cm. 800 CC-Engine cylinder का displacement volume होता है।) और उसके बगल में 3 लीटर की Mercedes खड़ी है। इसमें ज़्यादा बुद्धि लगाने की ज़रूरत नहीं है। यदि दोनों कारों की race लगायें, तो Mercedes ही जीतने वाली है। क्योंकि 800 CC कार का accelerator कितना भी दबाओगे, तो भी दौड़ नहीं पायेगी। Mercedes को हल्का-सा raise देंगे, तो वो फट् से भागेगी। क्योंकि उसके engine में इतनी power है, वर्ना गाड़ी में कुछ नहीं है।* ***ऐसे ही powerful आत्मा की बात है। जिसकी 800 CC जैसी कमज़ोर हो, वो दोष इत्यादि दिखने पर उदास हो जाये, प्रभु का बल ले न पाये।*** *तो, उसे क्या करना चाहिये?* ***'नल आख्यान'*** *सुना या पढ़ा होगा।* ***नल राजा*** *को* ***राजकुमारी दमयंती*** *के स्वयंवर में जाना था। सवारी के तौर पर उन्हें टट्टू यानि 800 CC कार मिली। उसे एक ही दिन में स्वयंवर के लिये पहुँचना था, तो सोचने लगा कि इससे मैं पहुँच नहीं पाऊँगा। Garage में जाकर mercedes का engine लगवा कर वह पहुँच गया। वो engine क्या कि टट्टू के कान में अश्व मंत्र पढ़ा, तो टट्टू mercedes बन कर पहुँच गया। ऐसे ही* ***अगर सोचते हैं कि निर्दोषभाव नहीं रहता, तो क्या करना है? अपनी पावर बदलनी है। इसके लिये गुरुजी की आज्ञा से स्वाध्याय, कथावार्ता, माहात्म्य, धुन-प्रार्थना और सेवा करो। रसोई, decoration वगैरह तो paid आदमी भी कर लेते हैं। पर, गुरुजी को हम सबको दोषरहित बनाना है। 24 घंटा तो हम धुन कर नहीं सकते। लेकिन, हमारा talent, liking, hobby के मुताबिक़ सेवा मिलती है, तो आनंद आता है। तो, physical सेवा, भजन-प्रार्थना-धुन करवाते हैं।*** *अभी 7 मार्च को काकाजी की पुण्यतिथि पर धुन कराई थी।*

स्वाध्याय, कथावार्ता, प्रार्थना-भजन और सेवा—ये तीन चीज़ें करने से, योगीजी महाराज के अति प्रिय वचनामृत मध्य 63 में अनुसार मन-कर्म-वचन से भगवान और भगवान के भक्तों की माहात्म्य युक्त सेवा करने से तत्काल बल मिलता है। बल मिलने से क्या फ़ायदा होगा? गुरुजी के प्रति विशेष सम्यक् निर्दोषबुद्धि और भक्तों में सम्यक् निर्दोषबुद्धि

दृढ़ होती जायेगी। गुरुजी को जीवन के केन्द्र में रखकर आप निर्दोष हो गये, तो आपकी साधना सरल हो जायेगी। योगीजी महाराज कहते थे कि भगवान स्वामिनारायण हमारे ईष्ट हैं और सत्पुरुष भगवान का स्वरुप हैं। हमें गुरुजी के द्वारा भगवान मिले हैं।

- ***कंपनी से कितना भी fast mobile ले लो, पर जब तक उसमें sim card नहीं होगा, तो किसी का भी नंबर नहीं लगेगा। हमारा भाव होता है, लेकिन भगवान के पास हमारा message जाता नहीं है। जब सत्पुरुष रुपी sim card डालेंगे, तो भगवान के पास हमारा message जायेगा। गुरुजी के प्रति आत्मबुद्धि-प्रीति को जीवन के मध्य में रखकर करेंगे, तो भगवान के पास पहुंचेगा।*** *गुरुजी के पास ये दोनों लड़के बहुत नसीबदार हैं कि जो करना है, वो छोटी उम्र में कर लिया है। अब गुरुजी सब करायेंगे। महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी, गुरुजी को योगीजी महाराज ने दीक्षित किया।* ***योगीजी महाराज की प्रसन्नता के लिये, उनके वचन से सबको योगी रुप मानकर भक्ति की, तो गुरुजी खुद योगीरुप बन गये। स्वामिनारायण भगवान, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी ने गुरुजी की बहुत बड़ी भेंट दी है, तो उनका सेवन करना ही हमारी भक्ति है।*** *इसके लिये प्रभु हम सबको बल, बुद्धि, प्रेरणा दें यही प्रार्थना करते हैं। दोनों युवकों की संन्यास यात्रा-जीवन खूब आनंददायक-सुखदायक बना रहे और जल्दी गुरुरुप बन जायें ऐसी प्रार्थना है।*

सभा समापन के पश्चात् रात्रि 12 बजे चिदाकाश हॉल में **प.पू. गुरुजी** के **87वें प्राकट्य दिन** निमित्त केक का प्रसाद, केन्द्रों से आये मुक्तों एवं उत्सव की तैयारियों में जुटे कुछ स्थानिक मुक्तों को वितरित किया गया।

पू. नवीनभाई शाह के पौत्र एवं **पू. आशीष शाह** के सुपुत्र **पू. नक्षत्र** ने एक महीना पहले निश्चित कर लिया था कि प.पू. गुरुजी के वरद् हस्तों से सेवक की ड्रेस लेकर जीवन धन्य कर लेना है। परंतु, मुंबई के **पू. अनिलभाई माणेक** के पौत्र तथा **पू. मिलन माणेक** के सुपुत्र **पू. नीरेक** ने तो मध्यरात्रि को तय किया कि उसे भी प.पू. गुरुजी के वरद् हस्तों से सेवक की ड्रेस लेकर जीवन धन्य करने का सुअवसर गँवाना नहीं है। यूँ, वर्तमान समय में technology की दुनिया को ठुकरा कर, छोटी आयु में प्रभु को धारण करने के मार्ग पर ये दोनों अग्रसर हुए। कोटि-कोटि नमन इन मुक्तों को और कोटि-कोटि धन्यवाद इनके परिवारजनों को कि उन्होंने सहर्ष इन्हें साथ देकर अपना पुण्य एकत्र कर लिया।

13 मार्च प्रातः
प.पू. गुरुजी का 87वाँ प्राकट्य दिन

गुणातीत स्वरूपों से भागवती दीक्षा प्राप्त करते
पू. वत्सलस्वरूपदासस्वामी एवं पू. शीतलदासस्वामी

गुणातीत स्वरूपों के वरद् हस्तों से
सेवक की दीक्षा लेते पू. नक्षत्र व पू. नीरव

नारायणी सेना के चारों सैनिकों का हार्दिक अभिनंदन...

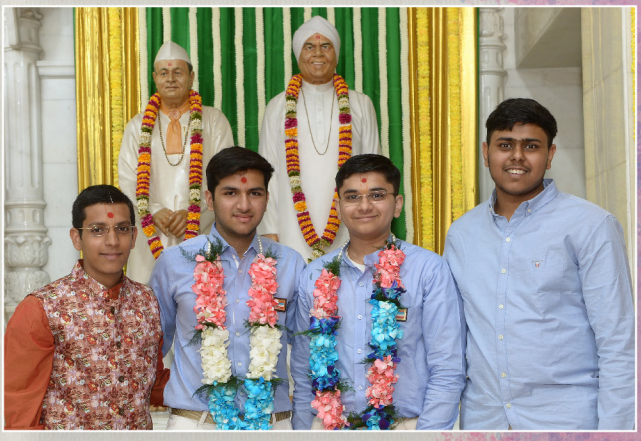

गुणातीत समाज की एकता और अखंडता ही हमारा ध्येय है... -प.पू. गुरुजी

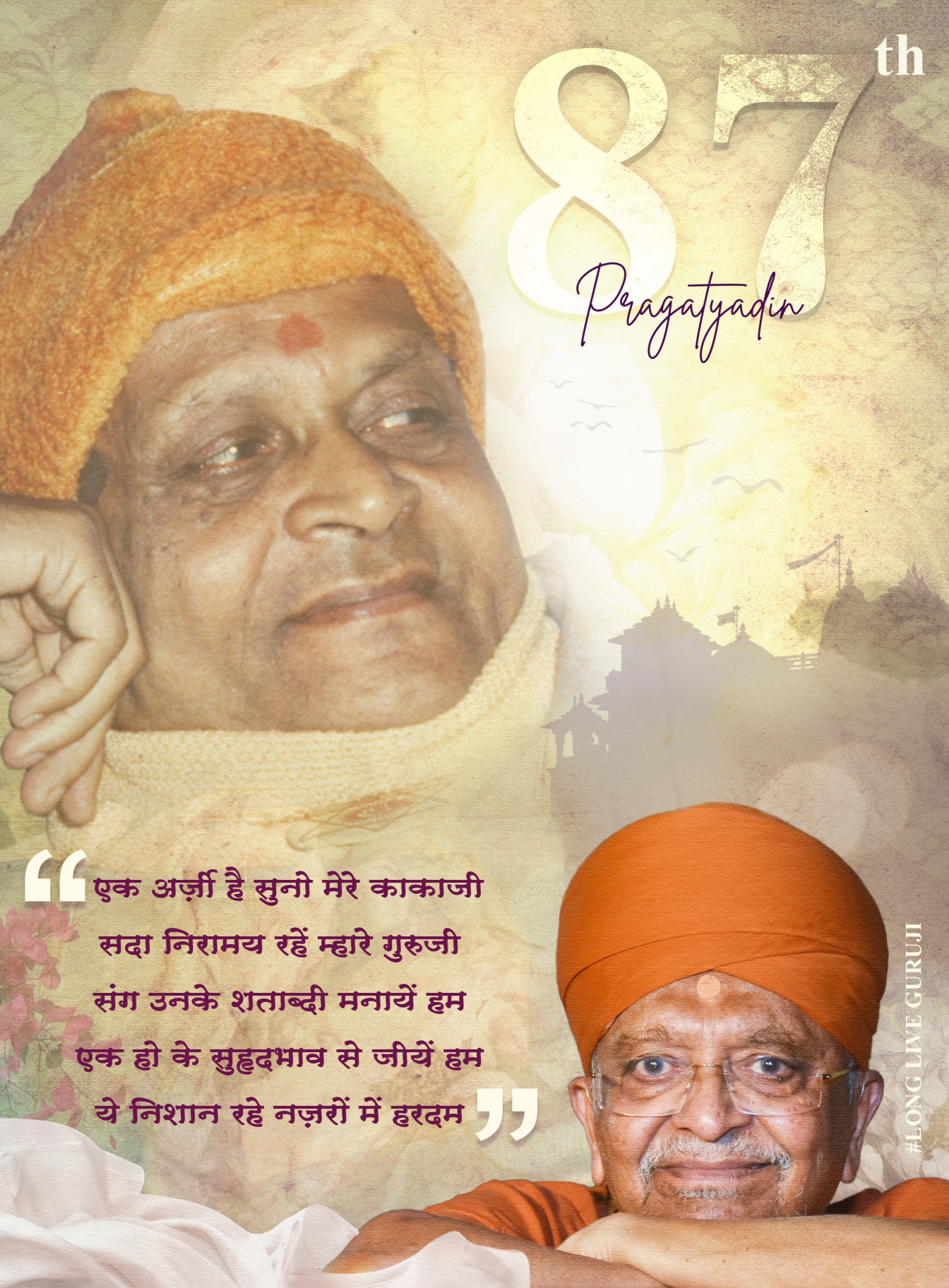

87th
Pragatyadin
एक अर्ज़ी है सुनो मेरे काकाजी
सदा निरामय रहें म्हारे गुरुजी
संग उनके शताब्दी मनायें हम
एक हो के सुहृदभाव से जीयें हम
ये निशान रहे नज़रों में हरदम
#LONG LIVE GURUJI

13 मार्च सायं– 'योगी परिवार आनंदोत्सव' में स्वरूपों का आगमन...

काकाजी की भावना थी कि अक्षरधाम पृथ्वी पर लाना है। गुरुजी दिल्ली-उत्तर भारत में साक्षात् अक्षरधाम पृथ्वी पर लाये हैं।

— प.पू. वशीभाई

चारों नवदीक्षितों द्वारा संतभगवंत साहेबजी एवं प.पू. गुरुजी को हार अर्पण...

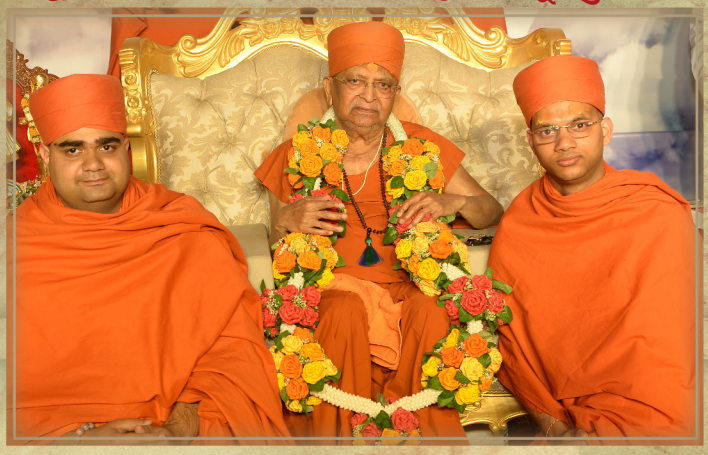

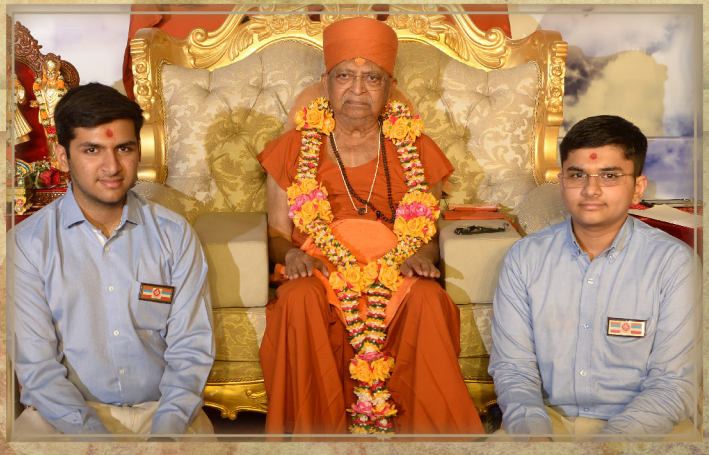

नवदीक्षित संतों द्वारा स्वरूपों का अभिवादन...

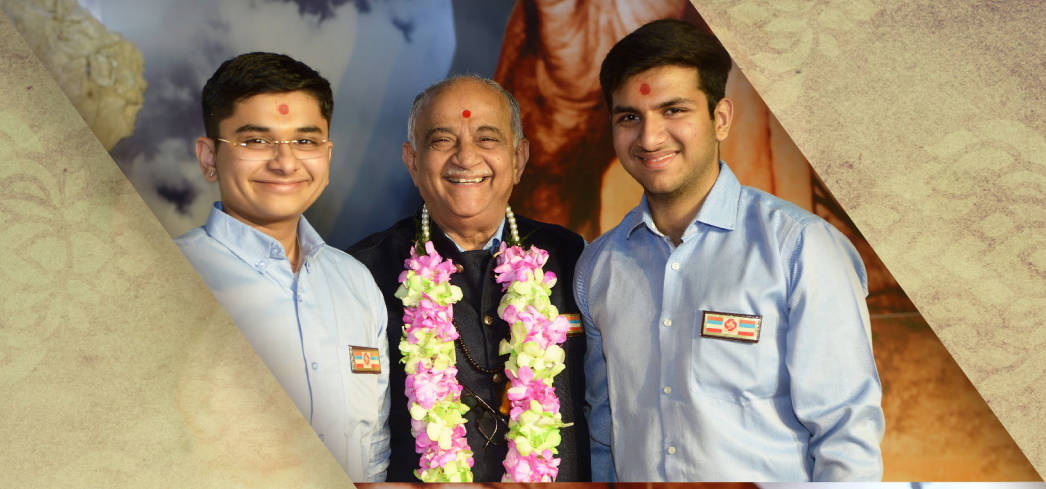

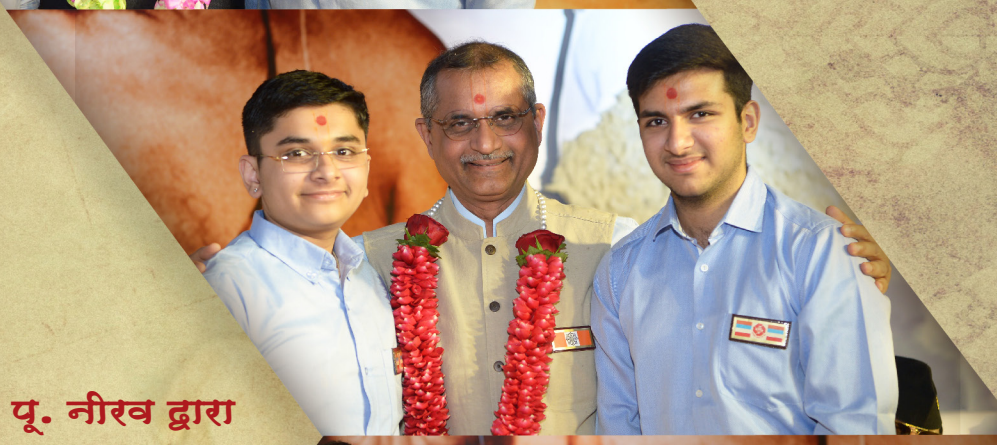

पू. नक्षत्र व पू. नीरव द्वारा
सद्गुरु संतों का अभिनंदन...

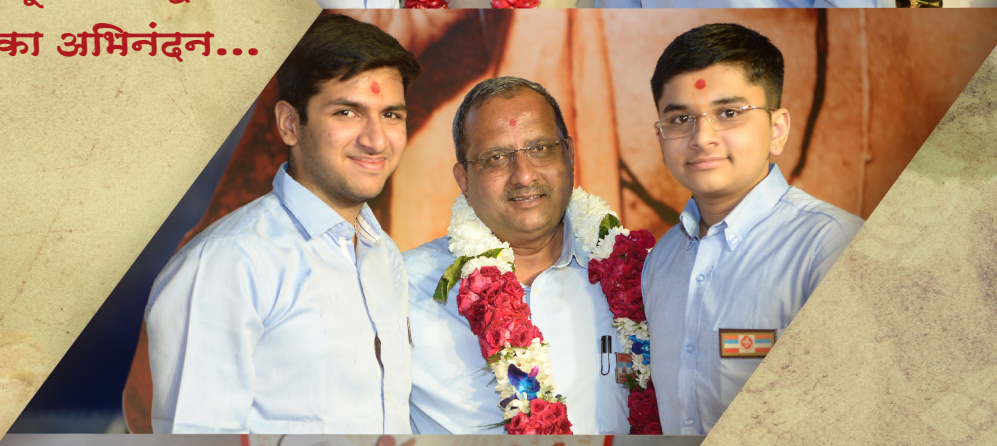

केन्द्रों के प्रतिनिधियों द्वारा प.पू. गुरुजी को हार एवं स्मृति भेंट अर्पण...

गुणातीत समाज की बहनों का अभिवादन...

❖ संतों, सेवकों, बहनों, भक्तों की power क्या है ? वो है गुरुजी – प्रभु के धारक साधु!
इतना भक्तिमय माहौल जब होता है, तब 'स्व' का भाव अपने आप छूट जाता है।
और... भीतर से आनंद प्रगट होता है।
जहाँ भी ऐसी अनुभूति हो,
तो मान लेना कि वहाँ
प्रभुधारक साधु गुरुजी की
हाज़िरी है, है और है...

-संतभगवंत साहेबजी

❖ मेरी यही भावना है कि
गुणातीत समाज में सेवा करते हुए
हम सब *'अक्षरधामरूप'* बनें...

-प.पू. गुरुजी

❖ छोटा-सा बालक हो या कोई वृद्ध हो,
गुरुजी उनमें भगवान देख कर उनकी सेवा करते हैं...

-प.पू. दिनकरभाई

❖ गुणातीत समाज के सभी केंद्रो से सब दिल्ली आने के लिये तत्पर रहते हैं,
ये आसान बात नहीं है। सबको अपनापन लगता है कि ये तो अपना घर है...

-प.पू. दासस्वामीजी

❖ गुरुजी ने कुटुंबभाव केवल बोला नहीं है, बल्कि वैसा जीये हैं
और साथ ही सर्वदेशीयता के बीज भी बोए हैं। *-प.पू. भरतभाई*

❖ हमारे पूरे गुणातीत समाज के लिये गुरुजी, दिल्ली मंदिर एक 'Benchmark' है!
गुरुजी यानि कुटुंबभाव...

-प.पू.वशीभाई

13 मार्च को **प.पू. गुरुजी** के **87वें प्राकट्य दिन की मंगल प्रभात** पर, **पार्षद पू. शिवम् भगत-पू. सरल भगत** की **भागवती दीक्षा** तथा **पू. नक्षत्र-पू. नीरेक** को **सेवक ड्रेस अर्पण** का कार्यक्रम प्रातः 9:30 बजे आरंभ हुआ। **लाल-सुनहरे रंग की पगड़ी सिर पर बाँध कर हरिभक्तों ने भांगड़ा करके अपनी खुशी व्यक्त की। प.पू. वशीभाई** ने दीक्षार्थियों को **संकल्प** करवाया और फिर चारों ने श्री ठाकुरजी एवं गुणातीत स्वरूपों का पूजन करके, उन्हें फूलों के हार अर्पण किये। दीक्षा विधि के कार्यक्रम में सर्वप्रथम **पू. सुहृदस्वामीजी** ने दोनों पार्षदों को **मंगलस्वरूप कलावा** बांधा, **प.पू. बापुस्वामीजी** ने पूजन करके **जनेऊ** पहनाया और **प.पू. दासस्वामीजी** ने पूरे कपाल पर चंदन की अर्चा करके **कंठी** पहनाई। तत्पश्चात् **पू. नक्षत्र** एवं **पू. नीरेक** को प.पू. गुरुजी ने सेवक की ड्रेस दी और उसे पहन कर महापूजा में पुनः आने के लिये कहा। भागवती दीक्षा के कार्यक्रम को ज़ारी रखते हुए, **प.पू. गुरुजी ने दोनों पार्षदों** को **भगवा गातरिया** ओढ़ा कर कान में **गुरुमंत्र** दिया। ड्रेस पहन कर आये **पू. नक्षत्र** एवं **पू. नीरेक** को **प.पू. गुरुजी** ने **मंगलस्वरूप कलावा** बांध कर, **कंठी** पहना कर **गुरुमंत्र** दिया। तत्पश्चात् **संतभगवंत साहेबजी** ने संतों को **पाघ** पहनाई और **पू. नक्षत्र** एवं **पू. नीरेक** को **बॅज** दिया, **प.पू. दिनकर अंकल** ने चारों को **पूजा** दी और **प.पू. भरतभाई** ने प.पू. गुरुजी की निश्रा में **चारों दीक्षार्थियों** के निम्न नये नाम घोषित करके, प्रत्येक के नाम में निहित सार बताये, जो साधक को पल-पल प्रभु की ओर निगाह रख कर अग्रसर होने की प्रेरणा देते थे।

पू. शिवम् भगत का **साधु वत्सलस्वरूपदास**

पू. सरल भगत का **साधु शीतलदास**

पू. नक्षत्र का **पू. नक्षत्र** (दीक्षा के समय हंसदेव दिया था, परंतु बाद में प.पू. गुरुजी ने नक्षत्र ही रहने दिया, क्योंकि यह भी उन्होंने ही दिया था)

पू. नीरेक का **पू. नीरव**

इस प्रकार दीक्षाविधि संपन्न होने के बाद, श्री ठाकुरजी की आरती करके दीक्षार्थियों ने पाँच साष्टांग दंडवत् प्रणाम किये।

तत्पश्चात् **प.पू. दासस्वामीजी** ने निम्न आशीर्वाद दिया और संतभगवंत साहेबजी से आशिष याचना करी—

...प.पू. गुरुजी और संतभगवंत साहेबजी आशीर्वाद देने योग्य हैं। मैं आशीर्वाद देने योग्य नहीं हूँ। साहेब कहते हैं कि आप स्वामीजी का स्वरूप हैं, वो उनकी महिमा है। दीक्षार्थी संतों और

सेवकों को मित्रभाव से एक ही बात कहने की इच्छा होती है। ***योगीबापा कहते थे—इस समय में अपने जैसा भाग्यशाली दूसरे को मानना ये बड़ी भूल है। मैं guarantee के साथ कहता हूँ कि आज काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी और अक्षरविहारीस्वामीजी बहुत खुश होते होंगे। गुरुजी तो गुणातीतभावना वाले साधु, परम एकांतिक सत्पुरुष बन ही गये हैं। वो मानते हैं कि मैं योगीबापा और काकाजी की कृपा से हुआ हूँ। लेकिन, दीये से दीया प्रगटाये वो साधु हैं, जिन्हें पिछले कई सालों से हम देख रहे हैं।*** *No. 9 is a very good number! आज मेरी गिनती के हिसाब से दिल्ली मंदिर में गुरुजी के साथ 9 संत हो गये हैं और भी बढ़ते जायेंगे। हमारे यहाँ संख्या महत्त्व की वस्तु नहीं है, लेकिन* ***गुरुजी के प्रति प्रेम की भावना-समर्पण का दर्शन है। Only yesterday night it was decided by Nirek कि उसे भी सेवक की दीक्षा लेनी है। ये कोई आसान बात नहीं है। जो चार दीवारी में रहकर साधना करते हैं, ऐसे साधकों, संतों और सेवकों को ख्याल पड़ता है कि पूरी जिंदगी का जुगाड़ है। इस जुगाड़ में हारने की तो कोई संभावना ही नहीं है।*** *Always win-win solution हैं, क्योंकि गुणातीत स्वरूपों ने हमें ग्रहण किया है... मेरी विनती स्वीकार करके साहेबदादा आशीर्वाद दें...*

सब पर अपनी करुणा बरसाते हुए **संतभगवंत साहेबजी** ने निम्न आशीष वर्षा करी—

...सही अर्थ में गुरुजी का प्राकट्य पर्व मना रहे हैं। साधु वत्सलदास, साधु शीतलदास, नक्षत्र यानि हंसदेवजी महाराज और नीरव चारों को खूब-खूब अभिनंदन... नक्षत्र का नाम हंसा दीदी के नाम पर हंसदेव रखा है, तू वैसा ही बनेगा। ***सभी पूर्व के साधु हैं।*** *स्वामिनारायण भगवान जब प्रगट हुए, तब उन्होंने संकल्प किया था कि पापी, पुण्यशाली, बाई, भाई, पढ़ा-लिखा, अनपढ़, गांव या शहर का जो भी मेरे और मेरे साधु के संबंध में आयें, उन सबका कल्याण करना है। सो,* ***स्वामिनारायण भगवान के समय से, संतों के योग से जुड़ी हुई आत्मायें माहात्म्य की कसर टालने के लिये जन्म लेती हैं। फिर जब प्रभुधारक सत्पुरुष का दर्शन होता है, उनके योग में आते हैं तो पूर्व का संबंध जाग्रत होने से संसार छूट जाता है।*** *इन युवाओं को बालक अवस्था में देखा है। नक्षत्र तो गुरुजी के पैरों में ही बैठा रहता था। एक बार तो छोटे सोफे पर गुरुजी के पास उनके जैसे कपड़े पहनकर बैठा था। उसके प्रिंसीपल साहब भी यहाँ आये हैं।* ***डेविड सर पुण्यशाली हैं कि ऐसे लड़के को पढ़ाने का मौका आपको मिला, यह आपका पुण्य है राजा! हमारा सेवक अर्पित बचपन से शांतिभाई के साथ जुड़ गया, तो वो संसार में जा ही नहीं पाया और सेवा में आ गया। डेविड सर के स्कूल में1100 लड़के हैं, लेकिन नक्षत्र अलग-सा दिखाई पड़ता होगा। पूर्व का साधु है, इसलिये गुरुजी की दृष्टि पड़ गई।*** *प्रिंसिपल साहेब को तो*

स्वामिनारायण का नाम भी मालूम नहीं होगा, लेकिन नक्षत्र को देखकर मालूम हुआ। ***नक्षत्र अलग-सा है, मतलब प्रभु का है और गुरुजी के साथ में भगवान का काम करने के लिये आया है।*** *अब काम करने के लिये जुड़ गया...*

जब गढडा में 1961 में गुरुजी ने महंतस्वामी के सान्निध्य में दीक्षा ली, तब का माहौल और अब आज का माहौल देखते हैं। तब योगीजी महाराज का 70वाँ प्राकट्य दिन और गढडा मंदिर की कलश विधि थी। उस समय बापा का संकल्प था कि 51 पढ़े-लिखे लड़कों को साधु बनाना है। पूरे गुजरात-स्वामिनारायण संप्रदाय में हलचल मच गई थी। आमतौर पर पहले गुजरात में ऐसा बोला जाता था कि जिसे नौकरी नहीं मिलती और शादी के लिये लड़की नहीं मिलती, वो स्वामिनारायण का साधु बनता है। इसलिये कोई माँ-बाप अपने बेटे को साधु बनाने के लिये राज़ी नहीं थे। उन्हें ऐसा होता था कि हमारे पास क्या खाने को नहीं है या बेटे की शादी नहीं होगी! हमारी आबरू जायेगी...ऐसा माहौल था। पर, ***शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना द्वारा जो कार्य किया, उससे भूतकाल का माहौल बदल गया। अब तो युवाओं के लिये साधु बनना गौरव की बात बन गई है, माँ-बाप खुश होते हैं।***

...आज हम देख रहे हैं कि योगीजी महाराज ने जिन 51 युवकों को दीक्षित किया, उनमें से महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी, गुरुजी, दासस्वामी, कोठारीस्वामी, भक्तिप्रियस्वामी, विवेकसागरस्वामी, डॉक्टरस्वामी, त्यागवल्लभस्वामी जैसे एक-एक साधु ने योगीजी महाराज, स्वामिनारायण भगवान की प्रसन्नता से पूरे स्वामिनारायण संप्रदाय को विश्व के फ़लक पर रख दिया। कितना बड़ा कार्य हो गया और उस कार्य में शामिल होना-भगवान भजना अब तो बहुत आसान हो गया है। गुरुजी की तपस्या, भक्ति और भगवान की प्रसन्नता से अब यहाँ आनंदपूर्वक प्रभु भजन कर सकते हैं। *पहले तो मार खाते थे, पर भगवान भजते थे। अभी तो पालकी में सोते-सोते शक्कर और हलवा खाकर भगवान भजने का समय आया है। शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, निर्गुणस्वामी, काकाजी, पप्पाजी, बा, बहन, हरिप्रसादस्वामी, महंतस्वामी, गुरुजी जैसे संतों के प्रताप से हमको ये मिला है।*

जैसे गुणातीतानंदस्वामी ने कहा है, तो एक ही बात ध्यान रखने जैसी है कि ***भगवान और गुरु के सामने देखते रहना।*** *शास्त्रों में लिखा है सूर्य का ध्यान करना, तो क्या सूर्य के सामने देखते रहो? अरे, सूर्य के सामने देखा करोगे, तो अंधे हो जाओगे।* ***गुरु और प्रभु के सामने बैठ कर देखते ही नहीं रहना। बल्कि कोई भी विचार या क्रिया यह सोच कर करना कि मुझे***

गुरु-प्रभु को प्रसन्न करना है, उनकी आज्ञा में रहना है। ऐसी सोच से करना ही उनके सामने देखा कहा जाये...

दिल्ली वालों से प्रार्थना है कि कभी सोखड़ा आओ, तो जो गांव का पुराना मंदिर है, उसका दर्शन करने जाना। दादुकाका कई दफ़ा मर्म में कहते थे कि आमळी वाली पोळ के दर्शन करना जहाँ हमारे दो भगवान रहते थे। आज संस्था में जाहोजलाली दिखाई देती है, लेकिन शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, निर्गुणस्वामी, प्रमुखस्वामी महाराज आमळी पोल में कैसी जगह रहे? आस-पास कपड़ों की धुलाई होती रहती है। घर का छप्पर इतना नीचे था कि झुक कर आना-जाना पड़े। ऐसे ही जब हरिप्रसादस्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी, गुरुजी इत्यादि जून के महीने की तपती गर्मी में पुराने मंदिर में रहने आये, तो वहाँ खप्परैल की छत थी। पर, योगीजी महाराज के प्रति भक्ति, तपस्या से भगवान की प्रसन्नता प्राप्त करके, हमें सानूकूलता से अक्षरधाम का सुख दे दिया। ***गुरुजी ने हम पर बहुत कृपा करके दृष्टि करी और हमें अपनी गोद में लिया। लड़कों को दीक्षा दी-व्रतधारी बनाया।*** *जैसे कि* ***दासस्वामीजी ने कहा कि गुरुजी की आज्ञा में रहें। सुहृदस्वामी और संतों के साथ सुहृदभाव से भक्तों की सेवा करें। गुरुजी की आँख के इशारे पर हम सेवा करें, ऐसी भक्ति करते हुए कोई भी पक्षपात रखे बिना, किसी की झंझट में न पड़ें...*** *अहंकार की निशानी क्या है? किसी का दोष देखते हो, किसी की टीका-चर्चा करते हो, उससे ego उत्पन्न होता है... ताड़देव में जो पधारता है, उसे गुरुजी का स्वरूप मान कर सेवा-भक्ति करें।* ***मिलजुल कर, संप-सुहृदभाव-एकता से गुरुजी के दिल में ठंडक हो जाये, ऐसा विचार, वाणी और वर्तन हो।*** *उनकी प्रसन्नता का पात्र बन कर अंदर से साधुता प्रगटे-अंतर भगवा हो जाये, ऐसी प्रभु चरणों-गुरु चरणों में प्रार्थना...*

तत्पश्चात् **पू. मुकुल वर्मा, पू. निमित्त शाह** ने दोनों संतों एवं **पू. जॉय शर्मा** और **पू. पुण्यम् मल्होत्रा** ने दोनों सेवकों का हार से अभिनंदन किया। तदोपरांत **प.पू. गुरुजी** ने साधकों को सूचन देते हुए आशीर्वाद दिया—

...साहेब की उपस्थिति-हाज़िरी-निश्रा में ये चार संतों ने जगत छोड़ा, पर भीतर का जगत तो साथ में ही रहेगा। तो, ***समझदारी से उसकी ओर न देखते हुए, उसके तांडव को भी नज़रअंदाज़ करते हुए ये चारों विभूतियाँ-लड़के... विभूतियाँ—इनके भविष्य की तरफ देखकर बोलता हूँ। साहेब की हाज़िरी में दीक्षा ली है, तो आगे जाकर खूब बड़े संत बन जायेंगे। काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामी, साहेब, अश्विनभाई इन सबकी शोभा में अभिवृद्धि करेंगे।*** *मेरी यही भावना है कि गुणातीत समाज में सेवा करते हुए अक्षरधामरूप सब बनें, यही साहेब आज आशीर्वाद दें...*

तदोपरांत **प.पू. दिनकर अंकल** ने भी निम्न आशीर्वाद दिया—

...गुरुजी के प्रागट्य दिन पर हर साल ऐसे ही महोत्सव मनाते आये हैं और इस बार सोने में सुहागा कि चार संतों ने दीक्षा ली। मैं हमारे डेविड सर को बता रहा था कि ***हमारा नक्षत्र छोटा था, तब से उसकी high level की आत्मा-चेतना का दर्शन हो रहा था।*** *2012 में वो करीब 5-6 साल का होगा, तब हम यहाँ आये थे और नीचे कल्पवृक्ष हॉल में बैठे थे। तब अक्षरविहारीस्वामीजी की तबियत थोड़ी नाजुक हो गई थी। तो, गुरुजी अक्षरविहारीस्वामीजी से कह रहे थे कि हम प्रार्थना करते हैं कि आपकी तबियत अच्छी हो जाये। नक्षत्र भी यहाँ बैठा था, उसने यह सुना। उसके घर वाले बताते हैं कि* ***जब वह night prayer कर रहा था, तो बोल रहा था कि हे महाराज, हे काकाजी, हे पप्पाजी, हे स्वामीजी, हे साहेबजी, हे गुरुजी... अक्षरविहारीस्वामीजी की तबियत अच्छी हो जाये इसके लिये मैं धुन करता हूँ। उसने तो सिर्फ गुरुजी को कहते हुए सुना था और उसके हृदय में ये भाव आ गया कि हमारी ये प्रार्थना भगवान को पहुंचेगी।***

जब वह अमेरिका आया था, तब उसे swimming करने में थोड़ा डर लगता था। हमारे डॉक्टर सपनभाई के Farm House के swimming pool में मैं उसको अंदर लेकर गया और कहा कि मैं पकड़ता हूँ चिंता मत करना, हाथ-पांव हिलाओ। उसने शुरु किया तो 1 घंटे के बाद उसे इतना इश्क हो गया कि दूर से दौड़ते हुए आकर कूद कर डुबकी लगाता। खाने का टाइम हुआ तो सबने बुलाया, तो वह बोला 2 डुबकी लगा कर आता हूँ। वो सब अभी याद आता है। साहेबदादा, दासस्वामीजी, गुरुजी सबने आशीर्वाद देते हुए कहा कि जो गुरुजी-साहेबदादा करवाना चाहते हैं, ऐसी सबकी स्थिति हो जाये। हमारी मुट्ठी छोटी है और उनकी बड़ी है। तो, उनके आशीर्वाद में हम आगे बढ़ते रहें और शोभा बढ़ायें। हंसदेव 'ह' के ऊपर बिंदी आती है, महंतस्वामी के 'ह' के ऊपर भी बिंदी आती है। तो, ***हमें महंतस्वामी-हंसादीदी को आदर्श मान कर, ऐसे गुणातीत स्वरूपों को आगे रखकर जीना है और प्रार्थना करनी है।*** *मैं भी आपकी तरह प्रार्थना करना सीख जाऊं, बेटा-ऐसी प्रार्थना...*

तत्पश्चात् **पू. उज्जवल अग्रवाल** ने सभी के हृदय को छू जाने वाला भजन—**'शास्त्रीजी स्वप्न स्वरूप काकाजी, शत्-शत् प्रणाम कोटि प्रणाम'** अपनी भावभरी मधुर आवाज़ में गाकर, मानो सबका एक connection प्रभु के साथ जोड़ दिया।

भजन के बाद **P. David Sir** ने नये संतों के प्रति शुभेच्छा व्यक्त की—

...I just remembered reading some beautiful lines from a book a few days back. To come across me at such a time actually means something. It goes like this very clearly: ***"When the replacement from the creator arrives, you will forget what you lost."*** *Simple words, yet profound in meaning. The creator who made you knows what to take away and what to give. I think that resonates well today. Taking away something and giving you something more, the creator knows that. I would like to tell this to both of you.* ***I don't think you have chosen to do this task; it is the creator who has chosen you.*** *No one else. So many of us are here, but you have been specially called today. He knows, he wants you to be with him to do the sewa, and he knows who should be outside to support you. That's what I truly feel about today's function—that you have come forward, but the call is from* ***God.*** *This call isn't for everyone; it's a special call to both of you, and you have answered it. I remember the Bible testament very clearly says that he gets a call,* ***"samuel samuel."*** *Again and again, this voice comes, and he gets scared. Then he goes and asks, "I am getting this call. What do I say?" He is told, "Next time, when you hear the call, say 'Yes, I am here'." And he gets a call,* ***"samuel samuel,"*** *and he says,* ***"Lord, I am here."*** *I think both of you,* ***Nakshatra*** *and* ***Nirek****, have said yes to the call today, and the call has been given by* ***P.P Guruji*** *to you. Done by the creator, and you have said,* ***"Yes, I am yours."*** *I think the blessings of all these Gurus, I know, it was the call for sacrifices. Lots of sacrifices. It's not something any ordinary person can take.* ***P.P. Dinkar uncle*** *shared this incident of yours with me as soon as I sat with him. At the age of 5, how you prayed. That doesn't happen to everyone. For the good health of the* ***P.P. Guruji*** *who was unwell, so many people would have heard that* ***P.P. Guruji*** *is unwell, but only one, who has listened and prayed. See, that makes a big difference. And I'm sure this difference, that whatever you say will be heard. The day before yesterday when* ***P.P. Guruji*** *was giving the blessing, finally, I was reminded of this.* ***P.P. Guruji*** *has been giving the same satsang every time. All the devotees know this. Repeating the same thing again and again. Week after week, he's not changing it. So, someone would ask* ***P.P. Guruji****, "You're giving the same discourse every time, no difference even in the words.* ***P.P. Guruji*** *would say, "Yes, I speak the same thing". Unless you are here and change yourself. Because we listen, but nobody changes. Listening to that, someone has said yes to it and changes the life. That's the change that I think all of us require." So I'm sure you have all the* ***Gunatit saint's*** *blessings. Also* ***God*** *is blessing you. I'm sure you will do great* ***sewa*** *in the presence of God. Wish you all the best. We keep praying for you, and now you must pray for all of us so that we also become closer to* ***God*** *and* ***P.P Guruji****."*

तत्पश्चात् **गुरुहरि पप्पाजी महाराज** के मानसपुत्र के रूप में परम प्रकाश के **पू. विरेनभाई** ने स्वानुभव से प.पू. गुरुजी का निम्न माहात्म्यगान किया—

*...**जब भी यहाँ आते हैं, तो कोई अनोखा अनुभव होता ही है।** आज सुबह से दीक्षा का जो कार्यक्रम चल रहा है, तो ऐसे ही लगा कि ये दो संत और दो सेवक ही दीक्षा नहीं ले रहे, बल्कि हम सब ले रहे हैं। संत जब प्रतिज्ञा पढ़ते हुए कह रहे थे कि एकांतिक धर्म सिद्ध करना है, तो ऐसा लगा कि आज हम फिर से वो संकल्प ले रहे हैं...*

साहेबजी ने जैसे बताया कि 1961 में जब साधुओं ने दीक्षा ली, तब सानुकूल माहौल नहीं था, कितने विरोध होते थे। काफ़ी संतों की बातें हमने सुनी हुई है। जैसे विज्ञानस्वामी को बापा ने एक post card लिखा कि साधु होने आ जाओ, तो वे आ गये। जिस दिन स्टीमर से उतरे उसके अगले दिन गोंडल में पार्षदी दीक्षा और दूसरे दिन भागवती दीक्षा लेकर मुंबई आ गये। मंदिर में जहाँ उनका कमरा था, वहाँ की gallery में खड़े होकर वे एक बार बाहर का traffic देख रहे थे।

महंतस्वामीजी ने उन्हें देख कर पूछा—स्वामी क्या कर रहे हो?

विज्ञानस्वामी ने कहा—स्वामी, बस मुंबई नगरी देख रहा हूँ।

महंतस्वामी ने कहा—स्वामी, अब आप साधु हुए हैं, अब इस तरफ नज़र नहीं करनी है, हमारा नियम है।

विज्ञानस्वामी ने कहा— स्वामी, मुझे तो पता ही नहीं है कि बहनों की तरफ नहीं देखना है।

महंतस्वामी ने पूछा—आपको दीक्षा लिये हुए कितने दिन हो गये?

विज्ञानस्वामी ने बताया—8 दिन हो गये।

महंतस्वामी ने कहा—जिंदगी ऐसे ही निकालनी है।

*अब हम लोग देख रहे हैं कि **इन साधु-संतों ने संघर्ष करके हमारे लिये जो राजमार्ग तैयार किया है, जो गौरव दिलाया है वो अलग ही बात है। आज कोई साधु होने जाता है, तो हम गौरवान्वित होते हैं। ये सब जो हम से पहले साधु हो चुके हैं, हमारे जो गुणातीत स्वरूप हैं उन्होंने गौरव दिलाया है।***

*हमारे गुणातीत प्रकाश के भाइयों की एक शिविर में एक साधक ने पप्पाजी से पूछा— पप्पाजी अभी तो आप इस पृथ्वी पर हैं, हमारी परवरिश कर रहे हैं। पर, जब आप नहीं होंगे, तब हमारा क्या? साधक को ऐसे प्रश्न होते हैं। तब **पप्पाजी** ने जवाब दिया—**आज कोई सामान्य बाप अपने लड़के के लिये सब कुछ set करके जाता है, तो क्या गुणातीत स्वरूप ऐसे ही छोड़ देंगे...***

*गुरुजी, **काकाजी** का कहा याद करते हैं कि एकांतिक को एक बार उल्लू बना दो, तो आपका काम पूरा हो जाये। **पप्पाजी** हमें ऐसा कहते थे कि एकांतिक के जीव में स्थान ले लो, फिर आपको कुछ नहीं करना। तो, ऐसी कृपा में आप और हम सब आये हैं...*

*गुरुजी का आज प्रागट्य दिन है। आज से 21 साल पहले 2003 में पप्पाजी 8 मार्च से14 मार्च के दौरान सूरत में आये थे। 13 तारीख को गुरुवार का दिन था... पप्पाजी आराम कक्ष से बाहर आये, तो सब युवक उनके पास जाकर बैठ गये। थोड़ा आनंदब्रह्म-jokes चल रहे थे... पप्पाजी ने अचानक एक युवक पर नज़र की। युवक पप्पाजी की तरफ देख रहा था और पप्पाजी युवक की तरफ और धीरे-धीरे उसकी आँखों में से आंसू निकलने लगे। जो शोर, हंसी-मज़ाक चल रहा था, उसकी बजाय अचानक ही pin drop silence हो गया। फिर सबकी आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। पीछे खिड़की से **ज्योति बहन** ये देख रही थीं और भजन की पंक्ति गाने लगीं—अंतरनी प्रसन्नता कांई सस्ती नथी, बजारे के हाटे ए मळती नथी। वो स्मृति दिन आज है। उस दिन हमें समझ में नहीं आया कि ये क्या हुआ? चंद महीनों के बाद हम सब यहाँ गुरुजी के पास आये थे, तो उन्हें ये बात बताई। तब **गुरुजी** ने सूझ दी कि **आपको पता चला कि ये क्या हुआ? उस दिन पप्पाजी ने आप सबकी देह और आत्मा को अलग कर दिया। वे दृष्टा रूप में आपके दिल में बैठ गये। एक युवक** ने पूछा—गुरुजी, **फिर आँखों में से आसूं क्यों निकले?** गुरुजी ने बताया—**शरीर और आत्मा की बहुत हज़ारों साल की मित्रता जब टूटती है, तो दुःख होगा न! स्थूल रूप से कहाँ से निकलेगा? वो आँखों से ही निकलेगा और पप्पाजी जो दृष्टा के रूप में बैठ गये हैं, वो हमेशा दृढ़ रखना। इस प्राप्ति का कैफ़ रखना कि पप्पाजी हमारे अंदर स्थापित हुए हैं, वो कभी भूलना मत।** आज गुरुजी के प्रागट्य अवसर पर गुणातीत स्वरूपों से प्रार्थना है कि बस ऐसी प्राप्ति का कैफ़ हमेशा हमारे जीवन में बना रहे, ऐसी कृपा करें...*

पंजाब के मुक्त सुबह 4 बजे निकल कर दिल्ली पधारे थे, लेकिन प्रभु-प.पू. गुरुजी के प्रति भक्ति अदा करने में उन्हें आलस बाधारूप नहीं बना, इसलिये जगरांव के **पू. अनूप टाँगरीजी** ने हमेशा की तरह अपनी जोशीली आवाज़ और लयलीन होकर '**घनश्याम तेरी बंसी पागल कर जाती है**' भजन प्रस्तुत करके अपना भाव प्रभु तक पहुँचाया। तत्पश्चात् सभी ने प्रसाद के लिए प्रस्थान किया। साथ ही साथ कुछ मुक्त शाम को मनाये जाने वाले प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव के लिये फूलों का गलीचा, सजावट और प्रसाद बनाने की सेवा में लग पड़े।

सायं 5:30 बजे **संतभगवंत साहेबजी, प.पू. गुरुजी, सद्गुरु संतों** एवं महानुभावों के साथ बैटरी कार में विराजमान होकर सभा मंडप में पधारे। स्वागत हेतु पुष्पों की बहुत ही सुन्दर रंगोली

गलीचे के रूप में बनाई थी। पृष्ठभूमि पर गुरुहरि योगीजी महाराज की विशाल मूर्ति के समक्ष दो संतों की आकृति लगाई थी, जो **'नारायणी सेना'** में भर्ती होकर, अध्यात्म मार्ग की सीढ़ियों द्वारा अक्षरधाम की ओर जाते हुए नज़र आ रहे थे। इसलिये सीढ़ियों के छोर पर आकाश में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति लगाई थी और आसपास बादलों में गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियाँ भी लगाई थी। इसके द्वारा यह रहस्य उजागर किया था कि समर्थ गुरु की निश्रा में भगवान भजता मुमुक्षु सहजता से प्रभु की प्राप्ति करता है।

दूसरी बात—**प.पू. गुरुजी** ने अपने प्राकट्योत्सव का नाम '**योगी परिवार आनंदोत्सव**' दिया है। वो इसलिये कि उनके प्राकट्य पर्व निमित्त प्रति वर्ष सभी केंद्रों और प्रांतों के मुक्त-हरिभक्त आते हैं, तो **प.पू. गुरुजी** को ऐसा होता है कि पूरा दिव्य परिवार इकट्ठा हो गया है, तो सब मिल कर आनंद करेंगे। सो, **प.पू. गुरुजी** के **87वें प्राकट्योत्सव** का कार्यक्रम प्रारंभ करते हुए **पू. राकेशभाई शाह** ने सभी स्वरूपों का स्वागत व अभिनंदन किया। साथ ही उन्होंने ज़ाहिर किया कि **25 मार्च-धुलेन्डी** को **संतभगवंत साहेबजी** का भी **85वाँ प्राकट्य दिन** है, तो दिल्ली के स्थानिक मुक्तों को लाभ देने वह भी साथ में मना रहे हैं। तत्पश्चात् पृष्ठभूमि का विवरण देने के बाद, **पू. राकेशभाई** के साथ **पू. डॉ. दिव्यांग, पू. ऋषभ नरुला** एवं **सेवक पू. विश्वास** ने **संतभगवंत साहेबजी** का भजन **'सोणे साहब की हँसी, सबके दिलों में बसी...'** प्रस्तुत करके भाव अर्पण किया कि उनकी हँसी इतनी निखालिस है कि दर्शन करके ही जीव मंत्रमुग्ध हो जाता है और हृदय में वह मूर्ति बैठ जाती है।

भजन के बाद **प.पू. वशीभाई** ने अपने आशीर्वचन का लाभ दिया—

...सभा के इस माहौल से ऐसा लगता है कि यहीं अक्षरधाम है। 3 दिन से दीक्षा विधि का जो प्रोग्राम हो रहा है, तो ऐसा लगता है कि समय रुक गया है और बस ऐसे ही बैठे रहें, कुछ करना नहीं है...

गुरुजी ऐसे creator हैं, जिसका ज़िक्र गुणातीतानंदस्वामी की एक बात है कि जिसका कार्य इतना महान है, वो करने वाला-creator कितना महान होगा! ये माहौल, मंदिर के कल्पवृक्ष हॉल में मूर्तियाँ और चिदाकाश हॉल का माहौल, फिर अभी योगीजी महाराज का जो explanation दिया, ऐसी एक-एक बारीक चीज़ में गुरुजी की creativity है and creativity is bless. गुरुजी ऐसे creator क्यों हैं? क्योंकि युवकों को दीक्षा देना वगैरह, इन सबमें एक ही भावना है कि मैं काकाजी को राजी कर लूं। इसके अलावा और कोई भाव ही नहीं है। काकाजी

की भावना थी कि अक्षरधाम पृथ्वी पर लाना है, तो गुरुजी दिल्ली-उत्तर भारत में साक्षात् अक्षरधाम आज पृथ्वी पर लाये हैं। हमें अभी कुछ करना नहीं है, कुछ चाहिये नहीं क्योंकि हमारे सभी गुणातीत स्वरूपों ने बहुत कृपा करके सब दिया है। ये करने के लिये गुरुजी की 50, 60, 70 साल की साधना है। पहले गुरुजी ने उसका infrastructure create किया। जानी साहेब, नवीनभाई शाह, बच्छराजजी जैसी 2-4 families से शुरुआत की और slowly-slowly ओ.पी. अग्रवाल, मासा जैसे जुड़ कर आज 400 परिवार हुए। स्वामिनारायण भगवान गढडा में दादा खाचर के घर में एक कुटुंब के सदस्य की तरह रहे और वो भावना गुरुजी ने उत्तर भारत में व्यापक कर दी... Hardware में पहले ये मंदिर नहीं था, मंदिर तो A103 नंबर की कोठी में था। वहाँ से फिर ***मंदिर, काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, 3 फरवरी पार्क, स्वामिनारायण अंडरपास hardware और फिर मंदिर का system. मंदिर के system को चलाने वाले software engineer ने कुटुंबों में आध्यात्मिकता का सिंचन किया, जो राष्ट्र, समाज और कुटुंब के प्रति कैसे responsible होकर जीये। स्वामिनारायण भगवान की यही भावना थी। करोड़ों धन्यवाद हो गुरुजी को कि स्वामिनारायण भगवान की ऐसी philosophy को आपने personify और implement करके सबको एक benchmark के रुप में दिया है।***

नक्षु जब पैदा हुआ तो 1-2 साल का था कि जन्माष्टमी पर उसे कृष्ण बनाया। It was symbolic that this child is a Godhood child and he has come for the specific purpose in the life. जगत में ऐसा कहा और सोचा जाता है कि किसी को ज़्यादा लाड़ करके spoil कर देते हैं। But यहाँ गुरुजी का क्रियेशन देखो कि उसे education में अच्छी तरह mould किया और इस हद्द तक mould किया कि उसके Principal pure catholic को स्वामिनारायण के बारे पता नहीं है, लेकिन नक्षु के कारण वो गुरुजी, दीदी और मंदिर से प्रभावित होकर accept करते हैं कि Guruji is the great. क्या creation किया है!

एक small level से बढ़ते-बढ़ते आज गुरुजी काळातीत है... He is living the life beyond the life. उनके लिये उम्र नहीं है, ये 87 या 70 तो हमारी calculation है। पर, आज जो हंसदेव और नीरव को जो दीक्षित किया, वो इसलिये कि he knows that they are going to work for next 50 years और पिछले 20 सालों के परिश्रम से गुरुजी ने ये creation किया। हमें कभी लगता होगा कि वे ज़्यादा सो रहे हैं, लेकिन उनके दिमाग़ में किसी न किसी भक्त का चिंतन रहता है। परसों किसी के घर पधरामनी में गये थे, वो भाई साहेब के पिताजी का स्वर्गवास हो गया। कल रात को 12.30 बजे गुरुजी ने उसे फोन किया कि तू चिंता मत

करना, पूरा मंदिर तेरे साथ है। You have not lost your father, we are always with you. तो ये गुरुजी की care है, जिसे दिनकरभाई tender care बोलते हैं। भक्तों की छोटी से छोटी चीज़ ध्यान रखना, senior citizens, नये-पुराने सब सत्संगियों की वो care करते हैं और इन सबसे भी ज़्यादा आज सुबह साहेब दादा ने कहा कि ***आत्मा की care करते हैं।*** *आत्मा यानि हठ, मान, ईर्ष्या के भावों और worldly power को भी balance करके संतों, युवकों, बहनों, गृहस्थों—सबको अपने-अपने level पर प्रेम देते हैं, वर्ना पहले तो बहुत firing भी देते थे। पर अब तो ऐसा प्रेम देते हैं कि व्यक्ति का रूपातंर हो जाता है...* ***हमारे पूरे गुणातीत समाज के लिये गुरुजी, दिल्ली मंदिर एक benchmark है...*** *तो हम कितने भाग्यशाली हैं कि जिसका कोई पार नहीं है। ये अक्षरधाम की सभा-नैमिषारण्य का तीर्थ-कल्पवृक्ष है। यहाँ आप जो भी संकल्प करोगे, भगवान सिद्ध करेंगे। काकाजी कहते थे—एक आध्यात्मिक संकल्प करना और एक व्यवहारिक संकल्प करना। हम समाज-परिवार में हैं, तो व्यावहारिक problem आता ही है। आध्यात्मिकता में हम जहाँ हैं, वहाँ से एक डिग्री आगे जाना है। गुरुजी ने जो मेहनत, जिस खून-पसीने से ये सब सींचा है, उसका ऋण कैसे अदा करें? पूरा गुणातीत समाज ऋण कैसे अदा करे? तो, काकाजी और आपकी जो जीवनभावना है और आपने काकाजी से ऐसा प्यार किया कि दुनिया की कोई भी समस्या आये, लेकिन आपको काकाजी को राज़ी करने से रोक नहीं पायी, अटका नहीं पायी, ऐसा सुंदर दर्शन आपने पूरे विश्व को कराया, ऐसा हम जी पायें। हे गुरुजी! आज आपके जन्मदिन पर आप सबका संकल्प पूरा करना और हे साहेबदादा! हे गुरुजी! हे दिनकरदादा! सबको आशीर्वाद देना। पूरा गुणातीत समाज जहाँ है, वहाँ से आगे बढ़े... जिस कक्षा पर महाराज, गुणातीतानंदस्वामी, हमारे प्रत्यक्ष स्वरूप ले जाना चाहते हैं, उसके लिये हम अपने आपको तैयार करें-क़ाबिल बनें... गुरुजी आप बल, बुद्धि, प्रेरणा देकर हमसे आप करवा लेना यही प्रार्थना...*

तत्पश्चात् **गुरुहरि काकाजी** द्वारा बनाये स्नेहलमंडल में से एक **प.पू. दासस्वामीजी** ने **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी** का प्रतिनिधित्व करते हुए आशीर्वाद दिया—

...प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने न्यूज़ीलेंड से गुरुजी, साहेब दादा और मंचस्थ सभी महानुभावों एवं अक्षरधाम के सभी संतों-मुक्तों को बहुत हृदय के भाव से प्रणाम और जय स्वामिनारायण कहा है। मैं अपने आप को बहुत भाग्यशाली मानता हूँ कि योगीजी महाराज ने दीक्षा दी और उन्होंने व काकाजी महाराज ने मुझे हरिप्रसादस्वामीजी को सौंपा। आध्यात्मिक विकास में काकाजी, पप्पाजी और स्वामीजी ने ऐसा अद्‌भुत जतन किया कि जिसके कारण आज मैं यहाँ स्टेज पर

बैठा हूँ। लेकिन मेरा कहने का भावार्थ दूसरा है। मुझे जीवन में कोठारीस्वामी, शास्त्रीस्वामी, गुरुजी, प्रेमस्वामीजी और निर्मळस्वामीजी जैसे अनुभवी भगवदी एकांतिक संत मिले। पहले कोठारीस्वामीजी धाम में पधारे और उसके बाद स्वामीजी और शास्त्रीस्वामीजी धाम में पधारे। तो, थोड़ा समय मुझे बहुत अकेलापन लगा, लेकिन मैं स्वयं को बहुत भाग्यशाली मानता हूँ कि गुरुजी ने मुझे बहुत प्रेम दिया है।

वशीभाई ने कहा कि गुरुजी एक दिव्य समाज के creator हैं। और... गुरुजी यानि कुटुंबभाव। जब मेरे पैर की surgery हुई, तो Hospital में उसका बिल लगभग 1 लाख 34 हजार रुपये था। Max जैसी बड़ी Hospital में जब तक payment न हो, वो relieve नहीं करते हैं। तब राकेशभाई वहाँ आये। उन्होंने गुरुजी को पूछा भी नहीं और मुझे कहा कि आप payment की कुछ चिंता मत कीजिये। **जैसे गुरुजी के लिये payment करना है, वैसे आप के लिये करना है।** ऐसा बोलना आसान नहीं है। 1 लाख 34 हजार रुपये is not small amount और मुझे बोल दिया कि आपके लिये गाड़ी आई है, उसमें मंदिर चले जाइये। आप आराम करें, ये सब तो होता रहेगा। मेरी आँख में आंसू आ गये। आज के ज़माने में सगा भाई भी होगा, तो ऐसा नहीं करेगा। गुरुजी ने ऐसा समाज तैयार किया है। फिर मैंने प्रेमस्वामीजी को फोन किया कि हमें शीघ्रता से हरिधाम से ये amount का draft भेजना है। प्रेमस्वामीजी ने कहा कि हो जायेगा चिंता मत करो। वो तो ठीक है कि प्रेमस्वामीजी ने बोल दिया चिंता मत करो, लेकिन मैं यहाँ 10-12 दिन रहा, पर राकेशभाई और गुरुजी ने कभी पूछा भी नहीं कि वो amount का क्या हुआ? ये मैं अपने आप में समझता हूँ कि real आत्मबुद्धि और प्रीति भगवान के संत और भक्तों के लिये है। ये सिंचन, ये जतन, ये परवरिश गुरुजी ने की है, तब जाकर ये possible है। **आज कंथारिया, सांकरदा, सोखड़ा, अनुपम मिशन से सब दिल्ली आने तत्पर रहते हैं, ये आसान बात नहीं है। सबको अपनापन लगता है कि ये तो अपना घर है। अपनेपन से सब जीते हैं, कोई formality-दिखावा, प्रदर्शन नहीं होता है।** love is love. तो मुझे ये बात इतनी touch कर गई कि इतने आसानी से राकेशभाई ने बोल दिया कि स्वामी आप चले जाओ। गुरुजी अगर Hospital में होते, तो हम क्या करते? ये जो भाव है, उसके लिये मैं तो बहुत छोटा हूँ। मुझे गुरुजी का मित्र-सखा कहते हैं, पर हम मित्र-सखा नहीं, सेवक हैं और सेवक ही रहना चाहते हैं। वो मित्र मानते हैं, सखा मानते हैं। जैसा कि मैंने कल कहा था कि साहेबदादा ने मुझे कहा कि आप हरिप्रसादस्वामीजी की तरह उनके गौरव के हिसाब से यहाँ आये हैं। तो, मैं यहाँ आशीर्वाद देने नहीं आया हूँ, आशीर्वाद लेने आया हूँ।

गुरुजी की तो क्या बात करें? इनके साथ के इतने सारे प्रसंग हैं कि रातभर खत्म न हों। साहेबदादा का भी 85वाँ प्रागट्य दिन आ रहा है। सभी वरिष्ठ स्वरूप अक्षरधाम में जाने लगे हैं। घर की सभा है इसलिये बोल सकता हूँ। बैरिस्टर साहेब भी गये, उनके साथ बहुत गहरी दोस्ती थी। भारत साधु समाज में बैरिस्टर साहेब के साथ बहुत आनंद करते थे... फिर बहनों में देवी बहन चले गये। गुणातीत स्वरूप स्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी, निष्कामजीवनस्वामीजी चले गये। तो मेरी प्रार्थना है कि हे महाराज! हे स्वामी! हे योगीबापा! स्वरूपों को दीर्घायु और निरामय रखें...

गुरुजी को जिन्होंने सर्वस्व मानकर समर्पण कर दिया और भाईस्वामी के स्वधामगमन जाने के बाद जिन्होंने गुरुजी की अनुवृत्ति समझकर पूरा तंत्र, पूरा organisation संभाल लिया, ऐसे सुहृदस्वामी को भी कोटि-कोटि धन्यवाद और छोटे-छोटे संत सुहृदस्वामी का स्वीकार करते हैं, ये बड़ी बात है। मैं समझता हूँ कि काकाजी या गुरुजी के इन पर हृदय के आशीर्वाद है, तभी ये possible है। हरिधाम में हम सीख रहे हैं कि त्यागवल्लभस्वामी से लेकर निर्मळस्वामी, गुरुजी तक स्वीकार करें। गुरुजी तो आयु, अनुभव में प्रेमस्वामीजी और निर्मळस्वामीजी से हर तरह से बहुत senior हैं। लेकिन, स्वामीजी ने जब से सब तंत्र Spiritual और व्यावहारिक प्रेमस्वामीजी को सोंपा, तब से जैसे योगीबापा, काकाजी का स्वीकार था, वैसे गुरुजी, निर्मळस्वामीजी ने even साहेबजी ने भी प्रेमस्वामीजी का स्वीकार कर लिया, ये बड़ी बात है। ये गुणातीत समाज में ही possible है और कहीं नहीं।

कल रात को तो ऐसा लग रहा था कि मैं सभा में आ पाऊंगा कि नहीं। लेकिन ये तय किया था कि थूक में से भले blood आ जाये, लेकिन 5 मिनिट तो गुरुजी के लिये बोलना ही है। तो ***हे गुरुजी! हे साहेबदादा! आपने जैसे प्रेमस्वामीजी के उम्र, अनुभव में सब तरह से छोटे होते हुए भी उन्हें स्वामीजी का स्वरूप मानकर स्वीकार किया है; वैसे हम सब हरिधाम के संत प्रेमस्वामीजी का संपूर्ण स्वीकार कर सकें, तब जाकर हरिप्रसादस्वामीजी महाराज को अंतर में हाश होगी। ऐसा मैं personally मानता हूँ।***

यहाँ के समाज को एक suggestion दे रहा हूँ कि गुरुजी तो गुरुजी हैं, लेकिन सुहृदस्वामी और यहाँ जो पुराने वरिष्ठ हरिभक्त हैं उन सबका भी उतनी दिव्यता से स्वीकार करें और प्रसंग पर गुरुजी की अनुवृत्ति समझने की कोशिश करें। प्रसंग से पहले तो सब एकांतिक होते हैं, लेकिन जब प्रसंग चल रहा हो तब मन, बुद्धि में समानता-दिव्यता रहे ये बड़ी बात है। ये हम सबकी साधना है। योगीबापा ने गुणातीत सत्पुरुष के साथ संबंध कैसा करना चाहिये उसके

लिये सुनृत-योगी गीता में लिखा है कि इष्टदेव का दर्शन जँचे। मैं तो मानता हूँ हमारे लिये, particularly यहाँ के समाज के लिये गुरुजी इष्टदेव के स्थान में है। मैं महाराज और स्वामी की उपेक्षा नहीं कर रहा हूँ, लेकिन ये तो मानना ही पड़ेगा। ***इष्टदेव का दर्शन जँचे, इष्टदेव के पास रहना जँचे, इष्टदेव की क्रिया जँचे और इष्टदेव का स्वभाव जँचे। रात को 2 बजे भी गुरुजी पधरामणी में जायें और 4 बजे लौटें, कुछ भी करें, उनकी हरेक पल में अपना कुछ निजी स्वार्थ होता ही नहीं है। किसी न किसी भक्त का भगवान के साथ, अपने गुरुजी के साथ संबंध दृढ़ हो, इसीलिये उनका 24 घंटे, दिन-रात परिश्रम है...***

मैं तो भारत साधु समाज के वो दिन याद कर रहा हूँ, जब मैं, प्रेमस्वामीजी, निष्कामस्वामीजी, ज्ञानस्वामीजी बारी-बारी से आते थे। रविवार को नवलबा नाश्ता के डिब्बे लेकर आती थीं और पकई साहेब महापूजा में आते थे। पूरे सप्ताह कोई नहीं आता था। फिर आगे जाकर समाज बढ़ने लगा। यहाँ की पत्रिका भगवत् कृपा में किसी वरिष्ठ स्वरूप ने गुरुजी के बारे में लिखा है, वो मुझे बहुत पसंद आया कि यहाँ कोई भक्त था ही नहीं, कोई विकास नहीं था। लेकिन काकाजी ने कहा, इसलिये यहाँ चिपक कर रहना है, इसलिये कोई argument नहीं किया It is not the reason why, but do and die. ***गुरुजी बहुत बुद्धिशाली-विचक्षण थे, लेकिन सपने में भी काकाजी के बारे में सोचा नहीं होगा कि दिल्ली में कोई विकास दिखता नहीं और मुझे यहाँ रखा है। काकाजी दीर्घद्रष्टा पुरुष थे और उनके चरित्र-उनकी आज्ञा में 100 प्रतिशत विश्वास गुरुजी ने रखा, तो आज उसके फलस्वरूप सब प्रगति देख रहे हैं।*** *मंदिर बना, पार्क बना, ये सारी प्रगति की बात मैं नहीं कर रहा। जब गुरुजी दिल्ली आये, तो जोड़ के लिये सोखड़ा और सांकरदा के संत को बुलाना पड़ता था और सब आते भी थे। पर, आज 8-8 संत यहाँ विराजमान हैं। ये कार्य गुरुजी ने किया और सेवक भी कितने हैं! कोई छोटा हो या बड़ा, गुरुजी सबकी बात सुनते हैं, लेकिन फिर भी वे सबसे निर्लेप हैं।* ***वे जो कुछ भी करते हैं, उसका उद्देश्य यही है कि किसी भी तरह हमारा मन भगवान में लगे...*** *ओ.पी. अग्रवालजी और अनिल मासाजी भी बड़े विचक्षण हैं, लेकिन उन्हें संत की परख है। नीरव को कोटि धन्यवाद है कि गुरुजी के प्रति प्रेम और अपने दादा अनिल मासा व पिता मिलन का समर्पण देख कर एक ही रात में बहुत कठिन है, ऐसा त्यागाश्रम का जीवन उसने चुन लिया। तो, ऐसा ही विकास होता रहे, लेकिन पहली और अंतिम प्रार्थना ये है कि हे गुरुजी! हे साहेबदादा! आप अभी धाम में पधारने का विचार मत करना...*

उसके बाद **नव दीक्षित संतों-सेवकों—पू. वत्सलस्वरूपस्वामी, पू. शीतलस्वामी, पू. नीरव** तथा **पू. नक्षत्र** ने मंचस्थ स्वरूपों, सद्गुरुओं को हार के रूप में अपना भाव अर्पण करके आशीर्वाद प्राप्त किया। **पू. पुनीत गोयलजी** ने गणमान्य अतिथियों का हार से स्वागत किया। गुणातीत समाज के केंद्रों के प्रतिनिधियों ने प्राकट्य पर्व निमित्त **प.पू. गुरुजी** को हार एवं स्मृति भेंट अर्पण की।

दिल्ली मंदिर से जुड़े समस्त समाज की ओर से अक्षरज्योति की बहनों ने **प.पू. गुरुजी** के लिये संतों, युवकों, बहनों एवं हरिभक्तों द्वारा रंग-बिरंगे क्रेप पेपर्स पर लिखे **स्वामिनारायण महामंत्र** के गुलाब के फूल बना कर एक विशेष हार बनाया था और गुजराती भजन की निम्न पंक्ति द्वारा प्रार्थना की—

जुदा - जुदा हतां अमे फूलो, तारा हेते माळामां गूंथाया...

हे गुरुजी! ये पंक्ति तो हमने खूब गाई और सुनी, लेकिन हमारे प्रकृति-स्वभाव हमें आपकी प्रसन्नता रूपी माला में शामिल नहीं होने देते। आप तो काकाजी के लाड़ले राजा हो। हमारी सेवा से अतिशय राज़ी होकर, आप हमें हमारे दोषों से मुक्त कर दीजिये, ताकि आपके अभिप्राय की माला के मनके बन कर आपको हमारी ओर से निश्चिंतता प्रदान कर सकें।

पू. वत्सलस्वरूपस्वामी-पू. शीतलस्वामी ने सभी की ओर से यह हार प.पू. गुरुजी को अर्पण किया।

बहनों के विभाग में सत्संग की भाभियों-लड़कियों ने केंद्रों की प्रतिनिधि बहनों एवं गणमान्य अतिथियों का हार से अभिवादन किया।

हारविधि-स्मृति भेंट अर्पण के बाद, हमारी हर क्रिया-सेवा प्रभु-गुरु को याद करके करें, उनके भक्तों का दास बनकर रहें और प्रभु मेरे व मैं उनका... ऐसी भावना व्यक्त करता नया भजन **'काका रे गुरु रे, मैं तेरा तू मेरा...' पू. ऋषभ गोयल, पू.ऋषभ नरुला एवं सेवक विश्वास** ने प्रस्तुत करके भक्ति अदा की।

भजन के उपरांत **प.पू. भरतभाई** ने स्पर्श कर गये प.पू. गुरुजी के प्रसंगों का वर्णन करते हुए आशीर्वाद दिया—

...आज गुरुजी के प्रागट्य दिन का अद्भुत माहौल है। सब आनंद, उत्साह और उमंग से सारी कार्यविधि में जुड़े हैं, वो गुरुजी की महिमा और उनके प्रति प्रीति है। गुरुजी ने सबके साथ ऐसा संबंध बनाया है, तभी ये सब हो रहा है। ***दासस्वामीजी ने बहुत अच्छा बताया कि गुरुजी यानि कुटुंबभाव और हम हमेशा देखते हैं कि गुरुजी को कुटुंबभाव बहुत पसंद है। इसलिये उत्सव के***

कार्ड में नीचे गुणातीत कुनबा लिखते हैं। गुरुजी ने कुटुंबभाव केवल बोला नहीं है, बल्कि वैसा जीये हैं और साथ ही सर्वदेशीयता बीज भी बोए हैं। *किसी को ऐसा लगता नहीं है कि वे अलग हैं, ये अद्‌भुत भावना है।*

- *2-3 साल पहले मैंने एक प्रसंग सुना था कि गुरुजी एक भक्त के घर पधरामनी करने गये थे। उस भक्त ने नया टी.वी. लिया था, तो गुरुजी को उसका पूजन करने के लिये कहा। उसी समय एक भक्त का फोन आया, तो गुरुजी उन्हें कहने लगे कि हम यहाँ नये टीवी का पूजन कर रहे हैं। आपके घर टी.वी. है? उन्होंने कहा—नहीं, लेना था। लेकिन अभी व्यवस्था नहीं है, इसलिये अगले साल लूँगा। गुरुजी जिस भक्त के टी.वी. का पूजन कर रहे थे, उसे कहा यह उस भक्त के घर भेज दो। उस भक्त ने भी सहजता से कहा कि जी गुरुजी... फिर वह भेज भी देता है और उस भक्त ने गुरुजी के कहने पर वो टी.वी. रख भी लिया। तो, ये कुटुंबभाव है, पर ये कहना सामान्य बात नहीं है।*
- *गुरुजी जहाँ भी जाते हैं तो 1-2 जने नहीं जाते हैं, पूरे परिवार साथ में जाते हैं। अभी दुबई इतने सारे लोगों को लेकर गये थे, तो ऐसा लगे कि ये किस तरह से manage करेंगे? किस तरह से इतने सारे भक्तों के ठहरने, बिस्तर इत्यादि की व्यवस्था करेंगे? वहाँ उनके निजी भक्त तो एक या दो ही होंगे। मगर फिर भी सारी व्यवस्था एक-दूसरे के साथ हिल-मिल कर आनंद किया। ये कुटुंबभाव का दर्शन है... गुरुजी ने इसी तरह का संबंध योगीजी महाराज और काकाजी के साथ किया, वो हमने देखा है।*
- *आज सुबह मैं गुरुजी का प्रसंग याद कर रहा था कि एक बार गुरुजी ने स्कूल में कुछ गड़बड़ की होगी, तो principal ने father को बुलाने के लिये कहा। गुरुजी ने सोचा कि मैं अपने father को तो बोल नहीं सकता हूँ, सो काकाजी को अपने साथ लेकर गये। वहाँ principal के सामने गुरुजी को काकाजी ने डांटा और थप्पड़ लगाया। फिर principal ने मना किया कि मत मारो। ये कैसे हो सकता है? जब अपनेपन का भाव होगा, तो किसी बच्चे को थप्पड़ लगा सकता है या ऐसा कह सकता है। तो, ये अपनापन का भाव काकाजी के पास से आ रहा है। गुरुजी के पास कोई भी आये और उन्हें पता चले कि इसे ये पसंद है, तो जब वह दूसरी बार उनके पास आता है, तो उन्हें याद रहता है कि इसे ये पसंद है और उसे वो देते हैं।*
- *हम West Indies गये थे, वहाँ राज नाम के भक्त एक hotel में job करते हैं। उन्होंने बताया कि इस hotel की एक परंपरा है कि कोई ग्राहक ऐसा कहे कि मुझे ये drink चाहिये,*

तो उनका नाम और drink note किया जाता है, फिर वो chain hotel में कहीं किसी भी country में जायेगा, तो उसे वो मिलेगा। यह एक bench mark है और ऐसा गुरुजी के जीवन में हमने देखा है। **गुरुजी को हम जितना धन्यवाद दें, उतना कम है।**

- दूसरी बात **ऋषभ** ने **भजन** में बहुत अच्छा गाया कि **बहुत सारा finance मिल जाये या तपस्या, उपवास, व्रत, तप वगैरह कुछ नहीं करना, बस एक ही चीज़ चाहिये कि ऐसे गुणातीत स्वरूप से प्रीति हो जाये, बाकी सब अपने आप हो जायेगा। साहेबजी** ने कल प्रवचन में बताया था कि ये जो युवक साधु बने, उनसे पूछा जाये कि **आप क्यों साधु बने?** आपको घर में कुछ problem-तकलीफ़ है? तो, उसके पास एक ही जवाब होगा कि **गुरुजी से प्रेम है। इसलिये गुरुजी ने कहा, तो साधु बन गये।** और... **साधु बन कर खाली बैठे नहीं रहते हैं। Develop the quality कि जिससे गुरुजी राज़ी हो जायें। गुरुजी की किस तरह से हम शान बढ़ायें? वो देखते हैं।** ये साधुओं को भी बहुत-बहुत धन्यवाद है। इसी तरह से दो साल पहले सरयुस्वामी, योगीस्वामी और आनंदस्वामी तीन साधु बने थे। वो आज इतना अच्छी तरह जीवन जी रहे हैं, उसका कारण एक ही है कि उन्हें गुरुजी के प्रति प्रीति है और गुरुजी उन्हें जो भी कहते हैं, वो अच्छा लगता है।
- **नित्या दीदी द्वारा बनाई कविता आज सुनी कि आप हमें पसंद हैं, आप जो भी करते हो वो हमें पसंद है। यह बहुत बड़ी बात है और इतना ही करना है और कुछ चाहिये ही नहीं। ये कोई बड़ी साधना नहीं है, पर ये करना बहुत कठिन है। पर, काकाजी के प्रति गुरुजी को ऐसी प्रीति थी।** काकाजी के स्वधाम जाने के बाद गुरुजी, हम लोग कई भक्तों के साथ छपिया गये थे। गुरुजी ने वहाँ के महंत से कहा कि यहाँ काकाजी के नाम की एक तख़्ती लगवानी है। देखा जाये तो पहले भी हम लोग छपिया गये थे, पर ये विचार नहीं आया, जो गुरुजी को आया। तो, **धन्यवाद है काकाजी के प्रति उनकी प्रीति को... वे श्वास भी काकाजी के नाम का लेते हैं।**
- **मंदिर के बराबर में जो पार्क बना, उसका नाम काकाजी के साक्षात्कार दिन 3 फरवरी की स्मृति में रखा। छोटी-मोटी सब क्रियाओं में वे उन्हें ही देखते हैं। 'अक्षरतीर्थ' समाधि स्थान के आगे एक cabin में काकाजी की प्रसादी की जीप रखी है। वो भी काकाजी के प्रति प्रीति का एक प्रतीक है।** काकाजी ने जब शरीर छोड़ा, तो डोम्बीवली के **मनसुखभाई** की इच्छा थी कि उनकी जीप में काकाजी के पार्थिव देह को गुजरात लेकर जायें, पर ऐसे इज़ाज़त नहीं मिलती थी, तो ambulance में उन्हें लेकर गये। मनसुखभाई अपनी जीप लेकर पीछे-पीछे

चल रहे थे। रास्ते में ambulance बिगड़ गई और दूसरी नहीं मिल पाई, तो आख़िर उस जीप में काकाजी को गुजरात लेकर गये। उस प्रसादी की जीप के लिये गुरुजी ने मनसुखभाई से कहा कि तुम्हें जो क़ीमत चाहिये, वो ले लो और ये जीप मुझे दे दो। तो उस जीप का आज भी हम दर्शन करते हैं...

- गुरुजी ने ये मंदिर बनाया। स्वामिनारायण भगवान के समय से चल रहा है कि स्थावर मंदिर और जंगम मंदिर बनाते हैं। **स्वामिनारायण भगवान ने भी 500 से 2000 साधु-जंगम मंदिर बनाये और 6-7 बड़े-बड़े स्थावर मंदिर बनाये। स्थावर मंदिर की जितनी ज़रूरत है, उतनी ही जंगम मंदिर की भी ज़रूरत है और ये सब कार्य संत करते हैं। शास्त्रीजी महाराज ने अपनी 45 साल की उम्र में 5 जगहों पर 5 मंदिर बनाये थे।** फिर बाद में **योगीजी महाराज ने कहा कि मुझे अभी चैतन्य-जंगम मंदिर बनाने हैं। इसलिये 51 पढ़े-लिखे साधु बनाये। जिसमें गुरुजी, दासस्वामी, बापुस्वामी ये सब बापा की पसंद के हैं। योगीजी महाराज से कोई भी कहे कि मुझ में कोई योग्यता नहीं है। तो, बापा कहते— आप खाली 'हाँ' बोलो, आपमें पात्रता भी मैं गढ़ूँगा और ब्रह्मरस भी मैं भरुंगा। आज हम ये सब संतों को देखते हैं कि जिनके दर्शनमात्र से ही शांति होती है...**

- **गुरुजी के छोटे-छोटे action भी बहुत thoughtful और perfect होते हैं... मनोजभाई कहते हैं कि यदि केवल ठाकुरजी का (कल्पवृक्ष) हॉल देखना-दिखाना हो, तो कम से कम 2 घंटे उसे समझने के लिये चाहिये कि ये क्यों लगाया है और इसका क्या मतलब है?** दूसरी बात **गुरुजी बहुत disciplined हैं कि काकाजी का जो सूत्र है, उन्हें जो पसंद है, उन्होंने जो कहा है उसी के अनुसार जीवन जीना है।** काकाजी स्थूल रूप से जैसे हमारी परवरिश करते थे, अब और भी ज़्यादा अच्छी तरह से करते हैं।

- गुरुजी कई बार बताते हैं कि एक बार काकाजी ने उन्हें English brochure आणंद में छपवाने के लिये कहा था। विद्यानगर नज़दीक है, तो गुरुजी पप्पाजी का दर्शन करने गये। पप्पाजी ने उनसे पूछा कि कैसे आना हुआ? गुरुजी ने बताया कि काकाजी विदेश जाने वाले हैं, इसलिये English में एक brochure छपवाना है। पप्पाजी ने वो पढ़ा और कहा कि भला English कौन पढ़ता है? इसे छपवाने की कोई ज़रूरत नहीं है, यूँ मना कर दिया। गुरुजी सहजभाव से कुछ भी विचारे बिना manuscript लेकर सांकरदा लौट आये। बाद में काकाजी सांकरदा पधारे, तो उन्होंने उसके बारे में कुछ पूछा ही नहीं। गुरुजी को लगा कि काकाजी मुझसे क्यों पूछ नहीं रहे हैं? तो, गुरुजी ने खुद काकाजी को बताया कि आपने जो छपवाने

के लिये दिया था... तब काकाजी ने पूछा—हाँ, उसका क्या हुआ? तब गुरुजी ने बताया कि पप्पाजी ने छपवाने के लिये मना कर दिया। यह सुन कर ***काकाजी ने कहा—यह तुमने बहुत अच्छा किया। मैंने कुछ करने के लिये कहा और पप्पाजी के मना करने पर तुमने हाँ कर दी, इससे मैं बहुत राज़ी हूँ।*** *तो यह भाव हमारे अंदर आये, यही हम मांगते हैं। सब में वो प्रभु ही काम कर रहे हैं, काकाजी यह बताना चाहते थे।*

काकाजी कई बार कहते थे—स्वामीजी, पप्पाजी और काकाजी एक ही हैं, किसी भेदभाव में मत पड़ना। उनमें एक ही तत्त्व काम कर रहा है। आज गुरुजी खुद तो जीते हैं, लेकिन यहाँ जितने भी उनके साथ जुड़े हैं, उन सब में वो बोया है। *तो, गुरुजी को धन्यवाद है और ऐसी ही बात हमारे जीवन में आये, ये हम प्रार्थना करते हैं।* ***यह main discipline है कि हमें ये गुणातीत संतों के प्रति कैसा जीवन जीना है; कैसे सेवकभाव से रहना है, ये हमें गुरुजी से सीखने को मिलता है।*** *इससे भी आगे एक बात हैं कि गुरुजी 87 year के हैं, लेकिन he is with the time. आज computer युग में लोगों की जो thinking-changes हैं, उसके बावजूद भी* ***छोटे बच्चों को उनसे प्रेम है कि मैं गुरुजी का हूँ और गुरुजी को राज़ी करूं।*** *आज गुरुजी के चरणों में यही प्रार्थना है कि हम जिस भी संत के साथ जुड़े हैं, उनके प्रति हमारी प्रीति-प्रेम, दिव्यभाव, निर्दोषभाव बढ़ता ही रहे और उसके संबंध वालों को भी दिव्य दिव्य मानते हो जायें, जहाँ देखो वहाँ रामजी... ऐसा भाव हमारे अंदर में प्रगट हो जाये। गुरुजी सबको ऐसे ही देखते हैं।* ***'रुमला गोलार' से हमारे भाईलाल भाई आयेगें, उनमें भी गुरुजी काकाजी का संबंध देखते हैं और कोई बड़े से बड़ा भक्त होगा, तो उसमें काकाजी, पप्पाजी और स्वामीजी का संबंध देखते हैं...*** *हे गुरुजी! आप जो भी हमें कहना चाहते हैं, वो कभी भी any moment कह सकें, उसके लिये आपको ज़रा भी हिचकिचाहट न हो, हमारा ऐसा संबंध आपके साथ हो जाये यही प्रार्थना...*

पू. नक्षत्र के प्रींसीपल **पू. डेविड सर** पहले भी प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव पर आते रहे हैं, लेकिन इस बार तो दीक्षाविधि के कार्यक्रम से निरंतर आये और अब तीसरी बार उन्होंने **प.पू. गुरुजी एवं सत्संग समाज** के प्रति अपनी भावना व्यक्त की—

I know I am too small to wish anything for ***P.P Guruji*** *on his birthday. I would say I am unworthy to even untie his shoelace. Yet I would like to say something which will suit all of us so that the wish becomes true for* ***P.P Guruji***. ***The best way to find yourself is to lose yourself in the service of others***. *The happiest 87th birthday to the person who brings* ***light*** *into the lives of so many people. We could witness*

it here and also by people who are far off. ***Age is just a number. And P.P Guruji , you are proof of that****. You have lived an incredible life, and we are blessed to be a part of it. May your birthday be a time of celebration and gratitude for the positive change that you bring in all of us. Your* ***kindness*** *and* ***empathy*** *touch the heart of everyone. Your* ***unwavering dedication*** *to making a positive impact on people's lives is truly inspiring. You have always been a source of* ***guidance*** *and* ***inspiration*** *to every one of us. Your ability to make a difference in the lives of others is truly a blessing.* ***Your unwavering dedication to serving the community and helping others is truly commendable****. Ending on this note,* ***P.P Guruji*** *, it's not the years in your life that count; it's the life in your years ! May u live every day to make a beautiful life. You are an inspiration to all of us, and we are honoured to know you.*

Cheers to your life, well-lived. We are always with you and with your blessings. Wishing in the name of everyone, the 87th happy birthday to you.

तत्पश्चात् **गुरुहरि काकाजी महाराज** से स्थूल रूप से कई मील दूर रहने के बावजूद जो आंतरिक रूप से उनके करीब रहे, ऐसे **प.पू. दिनकर अंकल** ने आशीष दी—

...गुरुजी के अंतर की भावना मैंने यही देखी है कि शुरुआत में जब काकाजी यहाँ उनके प्राकट्य दिन पर आते थे, तो वे अपना प्राकट्य दिन भूल जाते थे और काकाजी के अंदर बैठे हुए अक्षरपुरुषोत्तम महाराज का ही गुणगान गाते थे, उन्हें ही आगे रखते थे। काकाजी के स्वधाम जाने के बाद जब पप्पाजी और फिर हरिप्रसादस्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी यहाँ पधारते थे, तो भी गुरुजी अपना प्राकट्य दिन भूल जाते थे और उन्हें ही अपने आसन पर बिठाकर गुणगान गाते थे। अब साहेबजी पधारे हैं, तो उनका 85वाँ प्राकट्य दिन नज़दीक होने के कारण, गुरुजी ने आज साहेब का प्राकट्य दिन भी मनाने के लिये कहा। कितना सुंदर भजन साहेब का सुनाया। ***स्वामिनारायण भगवान ने कहा है कि जोड़ में रहो, तो गुरुजी ने ये जोड़ की बात पकड़ के रखी है।*** *आज दो सेवक भी जोड़ में भगवा धारण करके साधु हुए। अक्षरपुरुषोत्तम महाराज जोड़ में साहेब के अंदर विराजमान हैं। काकाजी पाँच स्नेहल मंडल के साधुओं की बात करते थे। उनमें से आज दासस्वामी यहाँ आए हैं...*

इतने सालों में मैंने गुरुजी की एक अच्छी quality ये देखी कि छोटा-सा बालक हो या कोई बूढ़ा हो, गुरुजी उसमें भगवान देख कर उनकी सेवा करते हैं। *में जब यहाँ गुरुजी के प्राकट्य दिन पर1992 में आया था, तब फ़र वाला कोट पहने हुए काकाजी का कटआउट लगाया हुआ था। वह देखकर मुझे ऐसा ही लगा मानो काकाजी स्वयं बैठे हुए हैं। मैंने यह बात गुरुजी को*

बताई। फिर जब मैं दिल्ली से अमेरिका वापिस लौट रहा था, तो मेरे सामान के साथ मुझे एक parcel साथ में ले जाने के लिए दिया गया। पूछने पर पता लगा कि काकाजी की वही मूर्ति है, जो मुझे पसंद आयी थी। आज भी वह मूर्ति हमारे मंदिर में वहाँ पर रखी हुई है। उसके दर्शन करके मैं गुरुजी की स्मृति करता हूँ। साहेब को काका, पप्पा और बा ने पौषी पूनम के दिन 1966 के बाद वाले साल में दीक्षित किया और उसके भी 10 साल बाद ब्लू और क्रीम ड्रेस दी। ***2003 में जब मैं और पवई के भाई गुरुजी के प्राकट्य दिन पर दिल्ली आये, तो उन्होंने हम सबके नाप के अनुसार ब्लू और क्रीम ड्रेस बनवा कर रखी थी और हम सब को दी। इस तरह नारायणी सेना में हम भी शामिल हो गये।*** इसी तरह आज दिल्ली के हंसदेव और मुंबई के नीरव को भी इस सेना में शामिल किया। दोनों अभी स्नातक भी नहीं हुए। पहले तो सिर्फ़ हंस होने वाले थे, पर महाराज की आज्ञा और गुरुजी की भावना से जोड़ में हो गये। ***जोड़ में जीने से अपनी अस्मिता का भाव चला जाता है। ऐसा मानने लगते हैं कि मैं साधु और सामने वाले में महाराज है। यह भावना हमारे में आये, तो हमारी प्रगति खूब होगी...***

साहेबजी *ने सूत्र दिये हैं–*

- भगवान और भक्तों की महात्म्ययुक्त सेवा वही परमपद है। परमपद का मतलब बहुत बड़ी बात है। हमारे BAPS के भद्रेशस्वामी हैं। 2000 साल पहले से सांख्य, योग, वेदांत इत्यादि सनातन हिंदू धर्म के जो 6 दर्शन हैं, उसमें उन्होंने विशिष्ट अद्वैत से भी आगे परम अद्वैत उपासना का सातवें रूप में दर्शन कराया है। इसलिए 'परम' शब्द बहुत बड़ा है, जिसके बारे में ***साहेबजी ने बताया कि भगवान और भक्तों की महिमा एवं माहात्म्युक्त सेवा हमें परमधाम-अक्षरधाम की प्राप्ति करायेगी... गुरुजी और साहेब दोनों पर बापा और काकाजी के आशीर्वाद हैं और इन दोनों ने बापा और काकाजी दोनों का सेवन करके उन्हें राज़ी किया है। साथ ही भक्तों को राज़ी किया है।*** सो, भगवान और संत दोनों की महिमा समझना अनिवार्य है।
- साहेब दादा कहते हैं–***अतिशय हेत! विश्वास या प्रीति युक्त अपने इष्टदेव की आज्ञा का पालन करें, तो ब्रह्मरूप होने में समय नहीं लगेगा।*** ब्रह्मरूप होने के लिए कितने जन्म लेने पड़ते हैं, इतना कठिन और उसमें भी जो कोई गड़बड़ हो गई तो सांप-सीढ़ी के खेल की तरह हम नीचे उतर जाते हैं। पर, संत ने कितना आसान कर दिया।
- ***सेवा करने से माहात्म्य बढ़ेगा, तो आलस कम होगा और माहात्म्य समझ आयेगा तो कसर टल जाएगी।*** ये बहुत बड़ी बात है। हमारे अंदर जो आलस और प्रमाद जैसे तमोगुण के भाव हैं वो हमारी प्रगति रोक देते हैं। वो कैसे निकल जाये उसका उपाय बताया है।

- ***'स्व' का भाव छोड़ कर हे प्रभु! तेरा ही है और तुमको ही अर्पण करना है, ये भाव रखेंगे तो प्रभु की सेवा करने में कोई तकलीफ़ नहीं आयेगी।***

हमेशा सकारात्मक विचारधारा के साथ ऐसे कई सूत्र साहेबजी ने दिये हैं। पप्पाजी तो कहते थे कि साहेब कचरे में से भी कोई बढ़िया चीज़ निकाल सकते हैं। *इनकी इतनी सकारात्मक दृष्टि और सोच है। साहेब से आज प्रागट्य दिन निमित्त प्रार्थना है कि हम गुणातीत पुरुषों की ओर नज़र रखकर जीयें और उन्हें राज़ी करने के ही उद्यम में रहें।*

गुरुजी *ने सूत्र दिये हैं–*

- ***गुणातीत समाज की एकता और अखंडता ही हमारा ध्येय है, हमारा goal है। काकाजी ने बताया था कि एकता वही एकांतिकभाव है। हम में जब तक एकता नहीं आयेगी, एकांतिकभाव नहीं आएगा।*** *ऐसी एकता पूरे गुणातीत समाज में रखनी है। आप कोई भी साधुओं की या राजनेताओं की सभा में जाना। कभी भी इतने स्वरूप एक साथ बैठे हुए दिखायी नहीं देंगे।* ***ये गुरुजी की और गुणातीत समाज की speciality है कि सबको ऐसा सरीखा मानकर भक्ति करनी।***

- *कठिनाइयों में हम अपने दोष विचार छोड़कर, जब भी मुश्किलें आती हैं, तो भगवान को भूल जाते हैं और problem पर ही focus करते हैं। यदि* ***धुन भी करते हैं तो problem पर focus करके करते हैं, भगवान को याद करके नहीं करते। यह छोड़कर प्रभु को ही उपायभूत होने दें।*** *उनको ही आगे रख कर करें और सतत मंत्रजाप यानि धुन हर समस्या को हल करेगी ही।* ***गुणातीतानंदस्वामी और गुरुजी जैसे गुणातीत स्वरूपों के आशीष हैं कि धुन जो काम करेगी, वैसा और कुछ नहीं करेगा।*** *मगर हम सोचते हैं कि भाई इससे क्या होता है? मगर हमने उसकी mastery नहीं करी, इसलिए नहीं होता है।* ***डॉक्टर दवाई देगा, पर अगर उसे मुँह में डालने की बजाय कान में डालोगे तो काम नहीं होगा। वैसे ही धुन अगर गुणातीत स्वरूप की आज्ञा से करेंगे तो काम होगा।*** *अभी कल ही किसी भक्त की कुछ problem थी, तो गुरुजी पर फोन आया। गुरुजी ने कहा धुन करना। तो वो बोला मैं धुन तो करता ही हूँ। उसमें आपने कौन-सा कोई बड़ा उपाय बोल दिया? पर जैसे एक काग़ज़ है और Rs. 500/- की नोट है। दोनों दिखने में काग़ज़ हैं। मगर नोट पर RBI गर्वनर के हस्ताक्षर हैं। इसलिए उसका इतना मूल्य है। इसी तरह जब गुरुजी धुन करने को कहें, तो argument करने के बजाय कि मैं धुन तो करता ही हूँ, उनकी बात भाव से*

स्वीकार करके हम कहें कि हाँ, अब मैं आपके वचन अनुसार धुन करूँगा, तो अपना काम ज़रूर होगा। जो हमारा मन है वो हमेशा doubtful, confuse, argumentative रहता है। ***हमारा देहभाव-अहम्‌भाव है, वो निकल जाये तो गुरुजी का ये सूत्र बहुत फ़ायदा करेगा।***

- ***बड़े संत के वचन में दिव्यभाव रखकर उनके वचन को विश्वासपूर्वक मानें, तो उसके अंदर व्रत, तप, योग और दान जैसे साधन आ ही गये।*** *ये जो 500 साल पुरानी techniques ग़लत नहीं हैं, पर महिमा उनकी नहीं गाना। ये केवल बड़े पुरुष को राज़ी करने के एक साधन हैं। मानो किसी ने ऐसा तप किया और गुरुजी कहें कि लो, इस तप के फलरूप मैं आपको ये प्रसाद देता हूँ, तब ये नहीं सोचना कि ये प्रसाद तो मेरा व्रत तोड़ देगा। उस समय प्रसाद खा लेना ही गुरुजी की प्रसन्नता है और वो ही साधना का फल है।*

- ***सहन करना कायर आदमी का काम नहीं है। कोई विरोध करे-गालियाँ दें, तब सहन कर लेना शूरवीर का काम है।*** *हमारे गुणातीत समाज में भगतजी महाराज के समय से लेकर सहन करने की एक pattern बन गई है... हमारे समाज में ऐसी साधुता डालने के लिए ये स्वरूप कार्य कर रहे हैं। जब गांधीनगर अक्षरधाम में आतंकवादी हमला हुआ और हमारे संत की जान चली गई थी, तब अमरीकी राष्ट्रपति बुश ने तो declare कर दिया था कि हम उन्हें ढूँढकर मार डालेंगे। जब* ***ये समाचार प्रमुखस्वामीजी को मिला, तो वो बोले कि हम शांति यज्ञ करेंगे।*** *प्रमुखस्वामीजी का पूर्वाश्रम का नाम भी शांतिलाल था। तो* ***उस समय कोई action लेने के बजाय धुन-प्रार्थना करी। तो, उसका फल क्या मिला कि आज तक कभी भी ऐसे कोई स्थानों पर फिर से ऐसी आफ़त नहीं आयी। आफ़त को तो छोड़ो, आज UAE जैसे भिन्न प्रकृति वाले देश में भी महंतस्वामीजी द्वारा अक्षरपुरुषोत्तम महाराज का हिंदू मंदिर बना। ये बहुत बड़ी बात है।***

आज हमारे **David sir** *आये हैं। जब नक्षत्र को इनके school में admission देना था, तो houseful हो गया था। लेकिन, गुरुजी की request पर उन्होंने दिया।* ***गुरुजी इनकी इस gross body को नहीं देखते, वो चेतना देखते हैं और वो चेतना इस उम्र की नहीं है, सेकड़ों सालों की उम्र की है और आज हम देखते हैं कि उस चेतना से कैसा कार्य हुआ कि उनकी ही स्कूल में आज अपने मंदिर के कई सारे बच्चे पढ़ रहे हैं। यूँ दो अलग-अलग धर्मों का समन्वय हो रहा है।*** *कितना प्रेम और विश्वास? तो, आज गुरुजी के प्रागट्य दिन पर प्रार्थना कि ऐसे गुण*

हम में आयें और हम सब आत्मीयता से, सुहृदभाव से जीयें। कोई अकारण डांटे, तो भी उनका गुण लें ऐसा हमें बनाना।

प.पू. दिनकर अंकल के आशीर्वाद के बाद **प.पू. गुरुजी** के प्राकट्य दिन निमित्त **पू. डॉक्टर दिव्यांग** ने अपनी मधुर आवाज़ में **पू. राकेशभाई शाह** और **पू. नित्या दीदी** द्वारा बनाया नया भजन – '**कोई मोल न गुरु की सच्ची प्रीत का... मेरी थाम ली गुरुजी ने कलाई, मुझे और क्या चाहिए...**' प्रस्तुत किया।

यह मार्मिक भजन सभी के हृदय को बहुत छू गया और मंच पर बैठे **सद्गुरु पू. साधु मनोजदासजी** ने अपना भाव प्रगट करते हुए तुरंत कहा कि This kirtan needs and deserves a standing ovation और... सभी ने खड़े होकर तालियों की गड़हड़ाहट से प्रशंसा की। दरअसल, भजन की मुख्य पंक्ति 'मेरी थाम ली गुरुजी ने कलाई मुझे और क्या चाहिए' हमें मिले प्रगट प्रभु की जीवन में महत्ता बताती है कि गुरु ने हमें अपनी गोद में बिठा लिया, तो फिर हमें कोई भी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है।

इस भजन से सभी स्वरूप खूब राज़ी हुए, सो **प.पू. दीदी** ने **पू. नित्या दीदी** को आशीर्वाद रूप हार पहनाया। तत्पश्चात् **संतभगवंत साहेबजी** ने भी इस भजन के आधार पर आशीर्वाद देते हुए कहा –

गुरुजी के अद्भुत गुणों का दर्शन कराता हुआ कीर्तन दिव्यांग ने गाया, सुनकर सच में खूब आनंद हुआ। नित्या दीदी ने बढ़िया भजन बनाया, हमको यह बहुत 'पसंद' आया। अपना समाज कितनी अद्भुत भक्ति के मार्ग पर, कैसी ऊंचाई पर पहुंचा है उसका दर्शन इस कीर्तन में हुआ। ***मुझे कुछ चाहिये नहीं, मुझे कुछ पाना नहीं, बस गुरुजी आप राज़ी हों ऐसा हमें बनाओ।*** *भक्तों ने कैसा अच्छा माँगा!* ***ये गुरुजी की गुणातीत अवस्था का दर्शन है...*** *पूरे गुणातीत समाज को मिली हुई अपरंपार अद्भुत भेंट 'गुरुजी' हैं। भजन के लास्ट में गाया–*

एक अर्जी सुनो मेरे काकाजी, सदा निरामय रहें म्हारे गुरुजी।
संग उनके शताब्दी मनायें हम, एक हो के सुहृदभाव से जीयें हम...
हम सबकी अर्जी आप स्वीकार करना, यही गुरुजी के प्रागट्य दिन पर उनसे प्रार्थना है।

दिनकरभाई ने भद्रेशस्वामी की जो बात बताई कि हिन्दु सनातन धर्म में हज़ारों सालों से 'षड दर्शन' चलता है। छः दर्शन – न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त पर सनातन के सभी धर्म कार्यरत हैं। महाराज साकार परब्रह्म और गुणातीतानंदस्वामी साकार अक्षरब्रह्म इस ब्रह्मांड में पधारे। शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज ने उनकी पहचान करा कर,

अक्षरपुरुषोत्तम का स्वतंत्र दर्शन हमें कराया। इन स्वरूपों के प्रति भाव और प्रेम के वश इस बात को हम स्वीकारते हैं। सनातन धर्म में ऐसा स्वीकार नहीं होता, उसके लिये एक proper process है कि उपनिषद, श्रीमद् भगवतगीता और ब्रह्मसूत्र—इन 3 ग्रन्थों जब अनुमोदन दें और बनारस के विद्वानों के साथ चर्चा में खरे उतरें, तब स्वतंत्रत दर्शन स्थापित होता है। 1200 साल पहले से यह चलता है, कोई नया दर्शन नहीं आया था। प्रमुखस्वामीजी की आज्ञा और महंतस्वामीजी के आशीष से भद्रेशस्वामी द्वारा अक्षरपुरुषोत्तम सनातन धर्म का विजय हुआ। इतने process में से पास होकर यह अस्तित्व में आया, तो अब सब बोलेंगे कि ***भारतवर्ष में 'सप्त दर्शन' हैं न कि 'षड दर्शन'!***

इस तरह गुणातीतभाव में रहते हुए साधु का भी दर्शन है। गुणातीतानंदस्वामी ने अपनी बात में बताया है कि साधु भगवान में रहते हैं और भगवान देते हैं। *जो भजन दिव्यांग ने गाया, उसमें भी लिखा है कि प्रभु में रहकर प्रभु देते हैं। ऐसे जो साधु गुणातीतभाव और अखंड भगवान में रहते हैं, इनका लक्षण क्या? तो, वह यह कि* ***उनके सामने-उनके पास जो आता है, उसकी आत्मा में रहे परमात्मा को वे प्रकाशित करते हैं। गुरुजी ये कर रहे हैं। हमने देखा कि दो युवकों—वत्सलस्वामी और शीतलदासजी ने साधु की दीक्षा ली। इन्होंने क्या तप, व्रत या प्रार्थना की थी? कुछ नहीं किया था, पर एक बात बन गई कि गुरुजी की दृष्टि में आ गये। इन पर गुरुजी की दृष्टि पड़ी तो भीतर के परमात्मा प्रकाशित हुए। भगवान प्रकाशित होते हैं, तो अंधकार गायब हो जाता है और अज्ञान चला जाता है। इनका संसार चला गया और गुरुजी के शरण में आकर दीक्षित हुए। ये प्रभुधारक साधु के लक्षण है। ऐसे साधु मिलने से भीतर के राग-दोष निकल जाते हैं।*** *सुहृदस्वामी और संतों की team देखो, कितने प्रभु के भाव से सब भक्तों की सेवा करते हैं। यहाँ सुबह से शाम तक सेवा का अखाड़ा चलता रहता है। इतना आनंदपूर्वक सब सेवा कार्य चलता रहता है। ये power कहाँ से आती है? हम इतनी जगमगाहट-सब प्रकाशित देखते हैं, वो कहाँ से आती है? Light खुद प्रकाश नहीं देती, उसमें करंट का flow आता है, तब जाकर प्रकाश देती है।*

ये ***सब काम-काज, कारोबार चल रहा है, तो संतों, सेवकों, बहनों, भक्तों की power क्या है? वो हैं गुरुजी-प्रभु के धारक साधु! संतों, सेवकों, आनंदी दीदी और संत बहनों को देख कर मैं सोचता हूँ कि उन्हें थकान लगती है कि नहीं? सुबह से शाम तक इधर-उधर कितना प्रेम है, पूरा माहौल भक्तिमय है। किसी को कुछ आकार देखने का समय नहीं है, बस आनंद-***

आनंद-आनंद! इतना भक्तिमय माहौल जब होता है, तब 'स्व' का भाव अपने आप छूट जाता है और भीतर से आनंद प्रगट होता है। जहाँ भी ऐसी अनुभूति हो, तो मान लेना कि वहाँ प्रभुधारक साधु गुरुजी की हाज़िरी है, है और है। *संत बहनों ने भागवती दीक्षा ली है, पर अपने नियम-धर्म में पूरे-पूरे रहते हैं। फिर भी प्रभु के भक्तों को प्रभु का स्वरूप मानकर, उनके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार, भक्ति करते हैं। सच में* ***गुरुजी की महिमा गानी नहीं पड़ती है, सब में अपने आप प्रगट जाती है।*** *गुरुजी के प्रति सबको भाव आता है। संत बहनों के जोग से* ***नित्या बहन*** *ने ये कीर्तन बनाया, तो उनका गुरु कैसा होगा? फिर गुरुजी कैसे होंगे और उनके गुरु योगीबापा कैसे होंगे? ऐसा काकाजी कहते थे। इतने अच्छे* ***भजन में गुरुजी के माहात्म्य का पूरा दर्शन करवाया।*** *पहले के समय के भजन देखो, तो समाज की अपेक्षाएँ भरी होती थीं। अब समय कितना बदल गया है, वो भजन के बोल से पता चलता है...*

दादुकाका कहते—आनंद करो, भाई आनंद करो, यही हमारी प्रार्थना है और गुरुजी करवाते भी हैं। ***गृहस्थ भक्त—नवीनभाई, बच्छराज, हमारे मंगला, अग्रवालजी, विजयपाल, राकेशभाई—ये सब भी खड़े पैर सेवा में लगे हैं। सामान्य नहीं हैं, बहुत कार्यकर्त्ता, बहुत प्रवृत्तियाँ, बहुत समृद्धिवान, इतना कारोबार है। फिर भी गुरुजी के प्रति दासत्वभाव रख कर सेवा करते हैं। गुरुजी में ही इतना दासत्व हैं, वे बहुत प्रेमालु हैं। भले खड़े होकर किसी को गले नहीं लगाते हैं, पर उनमें बहुत प्यार है। उसके बावजूद भी वे निर्लेप हैं।*** *गुरुजी लेटते ही गहरी नींद में चले जाते हैं, यही निर्लेप अवस्था का दर्शन है। यहाँ पर सेवा में रहते संतों, युवकों, बहनों और गृहस्थों को guide करते हुए भी एकदम निर्लेप अवस्था से जीते हैं। शास्त्रीजी महाराज ने जो उपासना दी है उसके बारे में सोचें तो अहोभाव आ जाये कि हमें क्या चीज़ मिली है!*

कुछ भी छोड़ना नहीं है, धीर-गंभीर होकर बैठना भी नहीं है। फिर भी ***भीतर का हठ, मान, ईर्ष्या, काम, क्रोधादिक दोष कैसे अहंकाररहित हो जायेंगे? ऐसा कैसे हो सकता है?*** *बस एक ही चीज़ करनी है कि जैसे* ***पप्पाजी कहते थे कि भगवान के धारक सत्पुरुष को ढूंढने जाने की ज़रूरत नहीं। भगवान का भजन करेंगे, तो सत्पुरुष आपको ढूंढ लेंगे।***

- *ऐसे सत्पुरुष मिलने से ही आत्मा का कल्याण होता है।*
- *उनके साथ आत्मबुद्धि और प्रीति होने से ही जन्म-मरण का चक्कर छूट जाता है।*
- *उनकी आज्ञा का पालन करने से हमारे भीतर में बदलाव आता है*

और

✸ *उनकी सैद्धांतिक प्रसन्नता प्राप्त होती है।*

दिनकरभाई ने बताया कि निर्दोषभावयुक्त सेवा करने से सुख-शांति और आनंद के भोक्ता बन जायेंगे। ऐसे सत्पुरुष मिलने के बाद सात्विकभाव तक हम पहुंचेंगे, पर निर्दोषभाव और निष्कामभाव तक नहीं पहुँच पायेंगे। निर्गुणभाव में जाने के लिये उनसे जुड़ जायेंगे, उनकी आज्ञा में रहेंगे, तो उनके संबंध से निर्गुणभाव आ जायेगा। लेकिन, हमें वासनारहित निखालिस, egoless बनना है। सो, उनकी आज्ञा पालो और उनके संबंधवाले सभी में निर्दोषभाव रखो। यह क्यों रखना? ये सब प्रश्न छोड़ देना। बस, ***मेरे गुरु रूप प्रभु को जो पसंद है, वो ही मुझे करना है। ऐसा भाव जब आये तो हमारी पसंद छोड़ कर उनकी पसंद के मुताबिक़ जी पायेंगे।***

यहाँ सब कितने विनय और उत्साह से लगे हुए हैं। इन्हें तैयार करके गुरुजी ने कैसे अपने गुरु की प्रसन्नता पाई है! बापा की इन पर कृपादृष्टि है। काकाजी के प्रति इनका असाधारण प्यार और उनकी आज्ञा से बापा के कहने पर 1961 में महंतस्वामीजी के साथ, उनकी अगुवानी में साधु हुए और 1961 से 1966 तक fully महंतस्वामीजी की आज्ञा में रहकर ही सब काम किया। 1966 में सोखड़ा आये तो हरिप्रसादस्वामीजी की आज्ञा में रहे। फिर काकाजी की आज्ञा से दिल्ली आये और यहाँ पर शून्य में से सर्जन किया। ***काकाजी अक्सर कहते—जहाँ बादशाह, वहाँ बाज़ार।*** *मतलब बादशाह को बाज़ार नहीं जाना पड़ता। वो जहाँ खड़ा रहे, वहीं बाज़ार लग जाता है।* ***इस तरह जहाँ प्रभुधारक हों, वहीं अक्षरधाम! गुरुजी अकेले आये थे, जोड़ में प्रेमस्वामी, दासस्वामी वगैरह थे। सेवक में हमारे यहाँ से अरुण, बैरिस्टर वगैरह आते थे।*** *तब कुछ भी नहीं था। पधरामनी पर जाने के लिये भी कोई नहीं था और यहाँ खूब ठंड पड़ती थी।* ***पर, काकाजी की आज्ञा से न चाहते हुए भी वे यहाँ आते रहे। गुरुजी एकांत प्रिय नहीं हैं, Mass प्रिय साधु हैं। हम सब साथ में हों, तो वे खुश रहें। अगर उनको उदास करना हो, तो सब हॉल में से निकल जायें ऐसी प्रकृति। लेकिन, बापा और काकाजी की प्रसन्नता के लिये धुनी लगा कर इतने समय से बैठे हैं। देखते ही देखते कैसा अद्‌भुत समाज तैयार हो गया!*** *गुजरात में तो स्वामिनारायण के 7 रास्ते। इसलिये किसी को भक्त बनाना हो, तो उसके mind में से शिक्षापत्री वगैरह दूसरे misconceptions इत्यादि washout करने पड़ें। कितना मेहनत का काम? पर,* ***यहाँ तो आप सब कोरी स्लेट हो। कोई स्वामिनारायण जानता ही नहीं है, इसलिये गुरुजी जो***

बोले वही सत्य, वही ब्रह्मवाक्य! *आपके लिये सरल बन गया। ये चीज़ फ़ायदा कर गई।* ***गुरुजी के साथ प्यार हो गया-दिव्यभाव हो गया, तो देखते ही देखते चारों पंखुड़ियों का ये समाज तैयार हो गया। प्रेमस्वामीजी*** *अभी न्यूजीलैंड में हैं, सो नहीं आये। दासस्वामी, कोठारीस्वामी, शास्त्रीस्वामी इन सबका बापा से इतना प्यार कि काकाजी की आज्ञा से मिलजुल कर प्यार से रहे।* ***दासस्वामी*** *अपनी नादुरुस्त तबियत होते हुए भी गुरुजी के साथ सखाभाव के कारण प्राकट्य दिन पर आ ही जाते हैं।* ***बापुस्वामी, दिनकर अंकल*** *भी आये। इतना सब होते हुए भी* ***गुरुजी सब के साथ आत्मीयता और दास का दास बनकर रहते हैं। स्वामीजी 'भुल्का' की जो definition देते थे कि छोटे से छोटा बालक बनें, तो गुरुजी एकदम वैसे ही हैं।*** *कहते हैं कि भगवान के धाम का दरवाज़ा सुई के छेद जितना छोटा है, इसलिये वहाँ जाने के लिये 'भुल्का' जैसा छोटा बनना पड़ेगा।* ***'भुल्का' जीवन का मतलब—सहजता।*** *छोटा बालक किसी से झगड़ेगा, तो थोड़ी देर बाद उसी के साथ खेलेगा, झगड़ा भूल जायेगा। Chocolate की ज़िद्द करता हो, पर अगर किसी और बात में उलझा दो, तो Chocolate भूल के बातों में लीन हो जायेगा। उसका कुछ भी fix नहीं होता।* ***गुरुजी भी ऐसे हैं, 87 साल का कोई 'भुल्का' हो, तो वो गुणातीतभाव को पाये हुए साधु का लक्षण है।*** *आज के दिन प्रार्थना करें कि हे गुरुजी ऐसा संबध मिला है और जैसे कीर्तन में लिखा है कि* ***आपकी शताब्दी आपके साथ मनायें, हिलमिल के जीयें और आपकी प्रसन्नता प्राप्त करें।*** *ऐसी जाग्रतता, बल, बुद्धि और प्रेरणा देना ये आपके चरणों में हम सबकी प्रार्थना...*

उत्सव के समापन में **प.पू. गुरुजी** ने भी संतभगवंत साहेबजी द्वारा समझाये गये भजन का जिक्र करते हुए सिर्फ दो मिनिट आशीर्वाद देकर दिशा निर्देश किया—

अभी-अभी हमने ***नित्या द्वारा भजन के रूप में लिखी आशीष याचना सुनी, साहेब ने इसे बहुत अच्छी तरह से समझाया।*** *इससे आगे नई कोई आशीष हम प्राप्त नहीं कर सकते और न ही मिल सकती है। परंतु* ***एक चीज़ है कि रोज़ सुबह और रात को ये आशीष को याद करते रहें और प्रार्थना करें कि ये आशीष हम भूलें नहीं, उसके नक़्शेकदम पर हम चलते रहें और अग्रसर रहें।*** *साहेब, भरतभाई, दिनकर अंकल, वशी ये सब हम सबके लिये प्रार्थना करें यही याचना...*

यूँ, सभी स्वरूपों से गुणातीत ज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् सभी ने प्रसाद के लिए प्रस्थान किया और दीक्षाविधि एवं प्राकट्योत्सव की पूर्णाहुति हुई।

25 मार्च– संतभगवंत साहेबजी के 85वें प्राकट्योत्सव निमित्त सभा...

संतभगवंत साहेबजी के
प्राकट्योत्सव की दिव्य स्मृतियाँ...

चूंदडोत्सव 2024
मळयो तुं मने कृपामां,
रंगी दे तारा रंगमां
रहेवाय अखंड आनंदमां,
तारी प्राप्तिनी मस्तीमां...
25 मार्च प्रातः

योगीजी और काकाजी के रंग में सब रंग डाले, रंग न उतरे ये मन से हमारे...

गुरुहरि योगीबापा के वारिसदार संतभगवंत साहेबजी का 85वाँ प्राकट्य पर्व

13 मार्च 2024, बुधवार को **प.पू. गुरुजी** के **87वें प्राकट्योत्सव** में सभी को अपने दर्शन का सुख देकर **संतभगवंत साहेबजी 15 मार्च** को दिल्ली से मोगरी लौटे। यूं तो पहले से ही अनुपम मिशन के संत, मुक्त समाज संतभगवंत साहेबजी के 85वें प्राकट्य पर्व की पूर्व तैयारियों में जुटा हुआ था, पर 15 मार्च के बाद तो सभी सेवाएँ वेगवान हो गईं, क्योंकि 23 मार्च की सायं से मुख्य कार्यक्रम आरंभ होने थे। दिल्ली मंदिर से **प.पू. गुरुजी**, संतों, सेवकों, कुछ हरिभक्तों तथा **प.पू. आनंदी दीदी** व बहनों को साथ लेकर, माहात्म्य सम्राट संतभगवंत साहेबजी के इस पर्व में सबको अपने दर्शन का लाभ देने के लिये जाने वाले थे। परंतु, **सद्गुरु संत प.पू. अश्विन दादा** ने गुजरात में बढ़ती गर्मी के कारण **प.पू. गुरुजी** की आयु एवं उनके स्वास्थ्य की चिंता करते हुए उत्सव में न पधारने की विनती की और साथ ही **प.पू. आनंदी दीदी** को अचानक आई पैर की तकलीफ़ को भी ध्यान में रखते हुए प्रेमयुक्त हक़ से स्पष्ट कहा– **तबियत की cost पर सुहृदभाव नहीं रखना**...

सो, प.पू. अश्विनभाई के वचन को महत्ता देते हुए प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दीदी का गुजरात जाने का कार्यक्रम रद्द हुआ। लेकिन, संतभगवंत साहेबजी के 85वें प्राकट्योत्सव की दिव्य स्मृतियाँ संजोने के लिये प.पू. गुरुजी की आज्ञा से **पू. सुहृदस्वामीजी** के साथ कुछ संत, मुक्त एवं अक्षरज्योति की बहनें गईं।

22 मार्च की सुबह 7 बजे दो गाड़ियों से मंदिर के कुछ सेवकों के साथ बहनें दिल्ली से मोगरी के लिये रवाना हुईं। करीब 17 घंटे में 23 की सुबह 3:30 बजे Vitthalbhai Ambalal Munshi Nature Cure Center पहुँचे, तो देखा कि संतभगंवत साहेबजी एवं उनके मुक्तों के प्रति निखालिस हास्य से भक्ति अदा करने वाले **साधु पंकजदासजी** स्वागत करने वहाँ उपस्थित थे। एक तो उत्सव में अत्यधिक व्यस्तता के बावजूद उनका आना और इससे भी अधिक slip disc की तकलीफ़ होने के कारण कमर पर belt लगाकर हँसते मुख से सेवा के लिये उनकी तत्परता देख कर, सभी का हृदय उनके प्रति नतमस्तक हो गया और अंतर में प्रार्थना हुई कि **हे प्रभु! ऐसे प्रेरणादायी मुक्तों की भाँति हम भी प्रत्येक परिस्थिति में सेवा के लिये हमेशा हँसते मुख से तत्पर रहें, ऐसा बल-बुद्धियोग दीजियेगा।**

23 मार्च को flight से **पू. सुहृदस्वामीजी** भी संतों व मुक्तों के साथ सायं 5:00 बजे तक पहुँच गये। सायं 6:30 बजे अनुपम मिशन के मंदिर के प्रांगण में पहुँचे, तो सर्वप्रथम **सद्गुरु**

संत अश्विन दादा का दर्शन हुआ। निज मंदिर में श्री ठाकुरजी की संध्या आरती के पश्चात् नीचे अक्षरमहोल में गये, तो उसके द्वार पर ही संतभगवंत साहेबजी का दर्शन हुआ। यहाँ उनके सान्निध्य में आरती का लाभ लेने के बाद महाप्रसाद लेकर सभा मंडप में पहुँचे। सभा मंडप में मंच के आगे **फूलों से 85 अंक** बना कर **संतभगवंत साहेबजी के प्राकट्य वर्ष** को दर्शाया था। मंच की पृष्ठभूमि पर भगवान स्वामिनारायण सहित गुणातीत परंपरा के स्वरूपों की मूर्ति का दर्शन हो रहा था, जिनके समागम के लिये कदम बढ़ाते मुक्तों और सबसे ऊपर प्रार्थना लिखी थी—

મારા સાહેબજીએ ઝાલ્યો મારો હાથ, મળ્યો પરમ પ્રભુનો સંગાથ
જીવન ધન્ય ધન્ય થયું... જીવન હરિરંગ થયું!

अर्थात्— **मेरे साहेबजी ने थामा मेरा हाथ, मिला परम प्रभु का साथ**
जीवन धन्य धन्य हुआ... जीवन हरिरंगमय हुआ!

मंच की एक ओर गुरुहरि योगीजी महाराज की मूर्ति के साथ संतभगवंत साहेबजी एवं उनके अष्ट सखाओं का दर्शन हो रहा था, तो दूसरी ओर गुरुहरि योगीजी महाराज की मनमोहक मूर्ति के आसपास उनके जीवन का सूत्र लिखा था—**युवक मेरा हृदय हैं। तुम सभी मेरे जीवनप्राण हो।** साथ ही दिल के आकार में गुरुहरि काकाजी, संतभगवंत साहेबजी एवं उनके अष्ट सखाओं का दर्शन हो रहा था। इस प्रकार प्रेरणादायी सुंदर सुसज्जा की थी।

प्रति मास की **23 तारीख** को **गुरुहरि योगीजी महाराज** की स्मृति में अनुपम सुरवृंद के संत एवं अक्षरमुक्त कीर्तन आराधना द्वारा सामूहिक प्रार्थना करते हैं। इस मास गुरुहरि योगीजी महाराज के स्मृति दिन के साथ संतभगवंत साहेबजी का 85वाँ प्राकट्य दिन होने के कारण विशिष्ट कीर्तन आराधना का आयोजन था। **गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. जसुभाई यानि अनुपम मिशन के प्राण पुरुष संतभगवंत साहेबजी को करीब 400 पत्र आशीर्वाद रूप लिख कर भेजे थे। सद्गुरु साधु मनोजदासजी** ने **'श्री अक्षरपुरुषोत्तम उपासना कथामंगल ग्रंथ'** के रूप में प्रसादी के इन पत्रों को समाविष्ट करवाया है। सो, सद्गुरु साधु मनोजदासजी ने उन्हीं पत्रों के कुछ अंशों-पंक्तियों पर आधारित इस भजन संध्या का शीर्षक— **'योगीनी लेखनीये प्रगटेली अध्यात्म गंगा...'** दिया। संतभगवंत साहेबजी एवं उनके साथीदारों को समय-समय पर अपने पत्रों द्वारा गुरुहरि योगीजी महाराज ने जो मार्गदर्शन दिया, उसकी स्मृति कराते भजनों से सभी दिव्यता से युक्त वातावरण में सराबोर हो गये। इससे भी अधिक, वर्षों पहले 1985 के नवंबर महीने में ब्रह्मज्योति की तपोभूमि पर ही मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की द्विशताब्दी

महोत्सव निमित्त संतभगवंत साहेबजी, प.पू. हरिभाई साहेब, सद्गुरु संत शांतिदादा-अश्विनदादा द्वारा गाये जाते भजन की video clip का दर्शन करके सभी भावाकुल हो गये।

कीर्तन आराधना संपन्न होने के बाद मंचस्थ स्वरूपों, संतों, मुक्तों-महानुभावों का पुष्प हार से स्वागत किया गया। **सरदार पटेल विश्वविद्यालय के 70वें vice chancellor-कुलपति श्री निरंजनभाई पटेल साहेब** को सम्मानित किया गया। तत्पश्चात् उन्होंने सभा को संबोधित किया और सद्गुरु साधु मनोजदासजी ने प्रासंगिक उद्बोधन किया। अंत में **संतभगवंत साहेबजी** ने गुरुहरि योगीजी महाराज, गुरुहरि काकाजी, गुरुहरि पप्पाजी के साथ के प्रसंग याद करते हुए निम्नलिखित आशीर्वाद देकर इस विशिष्ट कीर्तन आराधना का समापन किया—

मनोजभाई और उत्पलभाई की अगुवाई में सुर वृंद के सभी भाइयों ने theme पर बढ़िया भजन गाकर आनंद कराया। इनमें ***बापा के प्रिय भजन थे और उनकी स्मृति हो जाये ऐसी बातें भी थीं।*** *बापा की स्मृति रूप योगीबापा के आशीष पत्र का पठन भी हुआ। हमारे संतों को खूब thanks कि इन पत्रों को अभी तक अच्छी तरह संभाल कर रखा है...* ***बापा की दृष्टि से हम सब प्रभु के मार्ग पर तो चले, पर उसमें सुलभता रहे इसलिये उन्होंने पहले ही प्रभुदासभाई (हरिप्रसादस्वामीजी) और मंहतस्वामीजी के father मणीकाका का योग दिया।*** *बापा की आज्ञा कैसे पालनी उन्होंने वो सूझ दी।* ***बापा को हमसे जब field में काम कराना था, तब हम कॉलेज में पढ़ते थे। पढ़ाई के सिवा election इत्यादि अन्य activities थी। बापा को हमें इन सबमें से छुड़वा कर केवल प्रभु भक्ति करवानी थी, इसलिये सही समय आने पर उन्होंने हमें दादुकाका का योग दिया।*** *सत्संग में काकाजी का बहुत माहात्म्य था, पर हमें उसका ख्याल नहीं था। बापा के साथ ही फिरते, उनके आस-पास रहते, सिर्फ उनमें ही हमारा ध्यान था।* ***1963 में बापा ने काकाजी से मिलवाया। उन्होंने काकाजी को बुलवाया और मेरा हाथ उनके हाथ से मिलवाते हुए काकाजी से कहा—अब इन विद्यानगर के युवकों की ज़िम्मेदारी आप लो। काकाजी के बारे तो हम जानते ही हैं कि बापा का हर वचन अक्षरशः पालते थे। काकाजी की सूझ से हम में बापा को समर्पित हो जाने का भाव जगा।*** *छात्रालय के समय Constant 3 साल तक काकाजी का योग प्राप्त हुआ। किसी से टकराये बिना, भावफेर में पड़े बिना,* ***केवल बापा की तरफ ही नज़र रख कर निर्दोषबुद्धि युक्त सरलता से कार्य करने की practice तब काकाजी ने हमें कराई।*** *उसके बाद इस तरह नेकटाई साधु बनाने का आरंभ हुआ। 1966 में गुणातीत ज्योत में बहनों का रहने आना और हमारा छात्रालय छोड़ना, ये सब एक साथ हुआ। बापा के कहे मुताबिक़*

हम दादुभाई की आज्ञा में रहकर ही सब प्रवृत्तियाँ करते थे। **हमने काकाजी की आज्ञा को बापा की आज्ञा मान लिया था। फिर 1966 जुलाई में काकाजी ने हमसे कहा कि अब पप्पाजी की आज्ञा में रहने लगो। तब से पप्पाजी की आज्ञा में रहकर भक्ति करी।** Factory का कर्मयोग किया...1957 से बापा की आज्ञा से गुरुवार की सभा की जो शुरुआत की थी, वो जारी रखी और अश्विनभाई, शांतिभाई जैसे साथीदारों का साथ मिला। उसके बाद दिलीप-वासु वगैरह की पूरी team जुड़ती चली गई और बापा का कार्य गतिमान हुआ।

बापा यानि मूर्तिमान भक्ति का स्वरूप! अपने इष्टदेव को राज़ी करने की ही तान रहे, उसे भक्ति कहते हैं। योगीबापा द्वारा महाराज और शास्त्रीजी महाराज के प्रति 24 x7 भक्ति बहती थी। वे तो स्वयं स्वरूप थे, पर अपने आश्रितों को भक्ति मार्ग पर अग्रसर किया। **बापा कहते कि शास्त्रीजी महाराज और अक्षरपुरुषोत्तम उपासना को विकसित करना ही हमारी सच्ची भक्ति है। ये सब जो हो रहा है, वो सब उनकी बदौलत है। हम सबको उनके मिशन में involve किया, वो इनकी हम पर कृपा कही जाये। वर्ना देहभाव पिघालना संभव नहीं।** आज जो नये युवक-युवतियाँ संबंध में आते हैं, उन्हें भी बापा ही भेज रहे हैं। **संतों का काम क्या है—इन युवाओं को संवारना!** यह सेवा हम सब बख़ूबी कर पायें, ऐसे आप सब आशीर्वाद देना यही प्रार्थना।

निरंजनभाई पटेल सरदार पटेल university के vice chancellor नियुक्त हुए हैं, ये खूब आनंद की बात है। हम सब सरदार पटेल university में पढ़े हैं। सिर्फ व्रतधारी संत ही नहीं, बल्कि भगवाधारी संत भी वहीं पढ़े हैं। Even महंतस्वामी भी वहीं पढ़े हुए हैं, क्योंकि तब agriculture कॉलेज इसी university में था, बाद में separate हुआ। पहले तो विद्यानगर के 7 किलोमीटर के radius में आते सभी कॉलेज सरदार पटेल university के under आते थे। डॉ. स्वामी, हरिप्रसादस्वामी और प्रेमस्वामी भी इसमें पढ़े हुए हैं। **हम लोग तो 17 साल की उम्र में विद्यानगर आये थे, तब से यहीं धुनी जमा के बैठे हुए हैं।** मैं तो बोरिया-बिस्तर लेकर interscience के लिये इंदौर जाने के लिये निकला भी था। तब बापा अफ्रिका जा रहे थे। हमारे कई जानने वालों ने कहा था कि वहाँ चल, मेडिकल कॉलेज में एडमिशन दिला देंगे। मैंने सोचा कि अब 6 महीने तक बापा के दर्शन नहीं होंगे, इसलिये मुंबई जाकर उनके दर्शन कर आता हूँ। रात की ट्रेन से मुंबई गया और सुबह कपोलवाड़ी में बापा के दर्शन किये। बापा ने पूछा कि कहाँ से आया? तब सारी बात बताई। मैं अपने गुरु की आज्ञा नहीं ले रहा था या उनसे पूछ नहीं रहा था, सिर्फ inform कर रहा था। पर, वो कितने दयालु कि मुझे सीधा कह दिया कि

इंदौर नहीं जाना, विद्यानगर चले जाओ। ऐसे ही एक बार बापा के पास राजकोट जाकर वापिस आया। मेरी अमेरिका जाने की भी इच्छा थी। पर, बापा ने कह दिया कि नहीं, यहीं पर पढ़ाई करो। ***बापा का एक ही सपना था कि तुम मेरे होकर जीओ और महाराज के कार्य में अपनी आहूति दे दो। उनका संकल्प हमारे जीवन में येन-केन-प्रकारेण, किसी भी प्रकार से साकार हुआ। इसमें हमने क्या परिश्रम किया? हमने अपने तरीके से बहुत यहाँ-वहाँ की कोशिशें की। पर, बापा ने हमारा कुछ चलने दिया नहीं। सच में सब कुछ गुरु ने ही किया।*** *एक-एक प्रसंग के बारे में आज हम सोचें तो आश्चर्य होगा कि योगीजी महाराज ने कैसा कार्य किया?* ***मैं सोचता हूँ कि बापा न मिले होते, तो मेरा जीवन कितना बेकार होता, कहाँ भटक रहा होता! बापा की एक ही चाहना कि किसी की झंझट में मत पड़ो। केवल गुणगान किया करो। फिर कितने भी कठिन स्वभाव होंगे, वे ज़रूर छूट ही जायेंगे...***

24 मार्च, हुताशनी

फाल्गुन मास की पूर्णिमा का मंगलकारी दिन! इस दिन पूर्ण पुरुषोत्तम **भगवान स्वामिनारायण** के अनन्य आश्रित और **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी** के प्रति पूर्णतः समर्पित **अनादि महामुक्त भगतजी महाराज का 196वाँ प्राकट्य दिन** था। अतः **सद्गुरु संत प.पू. अश्विनदादा** ने व्यासपीठ पर विराजमान होकर अनादि महामुक्त भगतजी महाराज के जीवन प्रसंगों की स्मृति करते हुए, सत्पुरुष के प्रति अजोड़ भक्ति अदा करने की करामात बता कर अध्यात्म मार्ग पर चलते पथिकों को अद्भुत आशीर्वाद दिया—

...भगतजी महाराज और संतभगवंत साहेबजी का प्रागट्य दिन साथ-साथ आना एक दिव्य संकेत भी है। बापा ने साहेब को भगतजी महाराज के जीवन चरित्र का पारायण करने की आज्ञा दी थी...

भगतजी और जागास्वामी ने गोपाळानंदस्वामी से जब पूछा कि कल्याण और स्थिति प्राप्त करने के लिये क्या त्यागी होना अनिवार्य है? तब स्वामी ने कहा कि चाहे ***त्यागी हो या गृहस्थ दोनों महाराज को भगवान और गुणातीतानंदस्वामी को अक्षरब्रह्म मानेंगे तो अवश्य कल्याण होगा-स्थिति प्राप्त होगी, इसके बिना तो किसी का भी नहीं होगा।*** *हम साधकों में भी रतिकाका, मनोजभाई जैसे कई भाई हैं जो गृहस्थाश्रम करके फिर यहाँ आये हैं। जब भगतजी को साधु होने का मन था, तब गुणातीतानंदस्वामी ने कहा कि नहीं, तुम्हें महुआ में सत्संग का विकास करना है। ठीक उसी तरह हमारे जीतूभाई पोपट जो कुछ समय पहले धाम में गये, बापा ने उन्हें ज्योति दीदी से शादी करके कलकत्ता आने की आज्ञा करी थी...*

मुंबई जाने के बाद भगतजी का गुणातीतानंदस्वामी की मूर्ति धारना कम हो गया, तो स्वामी ने उन्हें बताया कि तुम्हारा प्रेम का अंग है, पर यदि साथ में ज्ञान भी होगा तो पूरे ब्रह्मांड का कार्य करने पर भी पल मात्र मूर्ति नहीं भूल पाओगे। ***बिना ज्ञान के सिर्फ वृत्ति से मूर्ति धारी होगी, तो मूर्ति भूल जायेंगे।*** *जैसे स्वरूपानंदस्वामी वृत्ति द्वारा मूर्ति सिद्ध थे, तो महाराज के लीला चरित्रों द्वारा उन्हें वापिस मूर्ति में लाये...*

डॉ. वी.एस. *को कभी किसी ने पूछा कि आप doctorate हो, university के vice chancellor रह चुके हो तो फिर भी आपका भौतिक विकास क्यों नहीं हुआ? जबकि उनसे सीखे हुए कई विद्यार्थी आज करोड़पति हैं। वो बोले—* ***यदि मैं चाहता तो उस रास्ते जा सकता था। पर मुझे पता चल गया था कि असली माल तो भगवान और उनके भक्त ही हैं। मैं बापा की आज्ञा से साहेब के पीछे-पीछे चलता रहा, तो आज देखो महाराज ने कहाँ बिठा दिया!***

यूँ सतत दो घंटे तक अपनी जोशीली वाणी से माहात्म्यगान करने वाले प.पू. अश्विनदादा पूर्णाहुति के समय अत्यंत भावुक हो उठे और संतभगवंत साहेबजी को **'मेरे प्यारे गुरुजी'** संबोधित करते हुए, दासत्वभाव से उन्हें साक्षात् दंडवत् प्रणाम किया और संतभगवंत साहेबजी ने उन्हें गले लगा कर पीठ थपथपाई। पूरे पंडाल में सभी ने खड़े होकर उनका अभिवादन किया।

बाह्य दृष्टि से आयु में संतभगवंत साहेबजी एवं उनके अष्ट सखा एक सरीखे, कॉलेज में एक साथ पढ़ते थे और एक-दूजे के साथ मित्रता थी। लेकिन, **गुरुहरि योगीजी महाराज एवं गुरुहरि काकाजी महाराज ने इनके भीतर संतभगवंत साहेबजी के अतिशय माहात्म्य का जो सिंचन किया, उसे उन्होंने अपने जीव में बसा लिया, इसीलिये कभी भी बराबरी का भाव न रखते हुए एक गुरु के रूप में संतभगवंत साहेबजी को स्वीकार कर, उनके साथ मर्यादित शिष्य की भाँति वर्ते।** यह बात कहना अथवा लिखना बहुत सरल है, लेकिन जो वाक़ई अपने आपको शून्य मानता होगा और अपने गुरु के वचन में जिसे अतिशय विश्वास होगा, वही इस प्रकार वर्त सकता है। जिसका प्रथम अष्ट भाइयों के वर्तन से पल-पल दर्शन होता है और उनके ऐसे वर्तन से ही अन्य मुमुक्षु भी प्रेरित हुए हैं तथा हो रहे हैं।

आज की इस विशिष्ट सभा में **प.पू. अश्विनदादा** ने सबको अनादि महामुक्त भगतजी महाराज के दिव्य प्रसंगों से तो अवगत कराया ही, लेकिन वे स्वयं **किस प्रकार केवल भगवान या सत्पुरुष के प्रति ही नहीं, बल्कि मुक्तों के प्रति भी कैसी भक्ति अदा करते हैं, उसका दर्शन उन्होंने सभा के प्रारंभ में कराया।** मंच पर व्यासपीठ के नज़दीक तीन सोफे रखे थे। इनका मुख पंडाल के दर्शकों की ओर था। एक सोफे पर पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी और एक पर

पू. अक्षरस्वरूपस्वामीजी बैठे थे। प.पू. अश्विनदादा को महसूस हुआ कि उनके व्यासपीठ पर विराजमान होने के बाद इन दोनों संतों को उनकी ओर टेढ़ा होकर बैठना पड़ेगा। तो, तुरंत ही सेवकों से कह कर उन्होंने सोफों को व्यासपीठ की ओर मुड़वा दिया, ताकि दोनों संतों को टेढ़ा होकर न बैठना पड़े। यह दृश्य देख कर नेत्रों में अश्रु आ गये कि **कहाँ हम सेवकों को पल-पल सत्पुरुषों की सुविधा के विषय में सतर्क रहना चाहिये, जबकि गंगा उल्टी बहती है कि सत्पुरुष सेवकों की अध्यात्म परवरिश से पूर्व तो दैहिक परवरिश करने जाग्रत रहते हैं।** देखा जाये तो आज जिन अनादि महामुक्त भगतजी महाराज का प्राकट्य पर्व था, उनकी अटूट सेवा का दर्शन प.पू. अश्विनदादा के ऐसे Jesture से हो रहा था। सभी स्वरूपों के चरणों में यही प्रार्थना कि आपने हमारे लिये जो आदर्श स्थापित किये हैं, उनका केवल गुणानुवाद ही न करें, बल्कि उनके जीवन प्रसंगों के अनुरूप वर्त कर आपका परिश्रम सफल करें।

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी, अनादि महामुक्त गोपाळानंदस्वामीजी से साधुता का हुनर सीख कर, साधकों के लिये प्रेरणास्रोत बने अनादि महामुक्त भगतजी महाराज की स्मृति करते हुए **संतभगवंत साहेबजी** ने निम्न आशीष वर्षा में सबको सराबोर करके इस सत्र का समापन किया—

*...**ब्रह्मस्वरूप प.पू. प्रागजी महाराज का आज प्रागट्य दिन—होली का मंगलकारी पर्व!** हम सब प्रागजी भगत का जीवन चरित्र पढ़ते हैं। लेकिन, ख़ासतौर पर प्रभु किस प्रकार प्रसन्न हों, वो बात अपने जीवन में कैसे apply करें, वह इसमें संक्षिप्त में सुंदर रीति से बताया है। अश्विनभाई को बहुत-बहुत धन्यवाद करते हैं और पंडाल में बैठे हुए सब अक्षरमुक्तों का मैं बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ कि सतत 2 घंटे तक तनिक भी अपनी जगह से उठे नहीं। विशेषतौर से दिल्ली के हमारे संत, संत बहनें, भक्त और उत्तरप्रदेश से सिंह साहेब आये हैं, जिन्हें गुजराती भाषा समझ में नहीं आती, मगर फिर भी हर्ष से सुनते ही रहे-सुनते ही रहे, बहुत-बहुत अभिनंदन!*

*गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज और गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा हम सबको अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना की बहुत बड़ी भेंट मिली है। जिसके कारण हम सब त्यागी और गृहस्थ, बाई और भाई, छोटे-बड़े सब अक्षरधाम के मार्ग के पथिक आनंदपूर्वक बन गये। **अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना द्वारा गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज-गुरुहरि योगीजी महाराज ने कितनी बड़ी भेंट दी। पर, इसकी शुरुआत ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज ने की।** गुणातीतानंदस्वामी तो जूनागढ़ के एक कोने में विराजमान रहे। वे अधिकतर सोरठ प्रदेश में घूमते थे और उत्सव के समय वड़ताल*

आते थे। गुणातीतानंदस्वामी गुजरात में बहुत कम घूमे हैं। इस प्रदेश में गोपाळानंदस्वामी बहुत घूमे हैं। **गोपाळानंदस्वामी ने अपने शिष्य भगतजी महाराज, जागास्वामी, झीणाभाई ये सब भक्तों को गुणातीत की सच्ची पहचान करवाई।** गोपाळानंदस्वामी अष्टांगयोगी पुरुष थे, उन्हें अपने अंत समय का मालूम हो गया था, सो भगतजी महाराज, जागास्वामी, झीणाभाई जैसे सब भक्त इकट्टे हुये थे और गोपाळानंदस्वामी से प्रार्थना की कि स्वामी, बड़ौदा की तरफ दृष्टि करो, वहाँ आप पधरामणी करो। तब गोपाळानंदस्वामी ने कहा कि देखो, अब तो जूनागढ़ के जोगी की ओर ही मेरी दृष्टि है, इसके अतिरिक्त कहीं नहीं हो सकती। यह सुन कर सब आश्चर्य में पड़ गये। **भगतजी महाराज को गोपाळानंदस्वामी के प्रति असाधारण प्रेम था, उनके बिना रह नहीं सकते थे। तो गोपाळानंदस्वामी ने सोचा कि मेरा भौतिक देह छूट जायेगा, तब क्या होगा भगतजी का? पर साधु हम पर कृपा बरसाते रहते हैं।** भले ही मांगें न मांगें, पर वे तो one side कृपा बरसाते रहते हैं। **भगतजी महाराज को अपने पास बुला कर गोपाळानंदस्वामी ने कहा कि प्रागजी याद रख, जब मैं मेरा भौतिक देह छोड़ दूँ; तो तू दुःखी मत होना, जूनागढ़ के जोगी के साथ जुड़ जाना। मैंने तुझे जो गुणातीतभाव में ले जाने का कॉल दिया है, वो सभी कॉल गुरु गुणातीत पूर्ण करेंगे, लेकिन तू उनके पास जूनागढ़ जाना।** ऐसा कह कर गोपाळानंदस्वामी ने देह छोड़ दिया। भगतजी महाराज एकदम उदास हो गये, किसी से बात नहीं करते थे-एकांत में बैठे रहते थे। वे गोपाळानंदस्वामी की कही बात भूल गये। 6 महीने के बाद उन्हें महुआ में हुआ कि चलो, गोपाळानंदस्वामी जहाँ रहते थे, जहाँ जाते थे या महाराज जहाँ भजते थे, वहाँ पर जाऊं तो मुझे स्मृति हो जायेगी। सो, वे गढड़ा गये और वहाँ से लौटने लगे, तो वड़ताल के संतों ने उन्हें रोक लिया। गुजरात के कुछ भक्त गढडा होकर, गुणातीतानंदस्वामी के समागम के लिये जूनागढ़ जा रहे थे। प्रागजी ने उन भक्तों से पूछा कि आप सब कहाँ जा रहे हैं? उन्होंने बताया कि हम गुरु गुणातीत के समागम के लिये जूनागढ़ जा रहे हैं। तुरंत प्रागजी को याद आ गया कि मुझे भी मेरे गुरु गोपाळानंदस्वामी ने कहा था कि मेरे जाने के बाद गुरु गुणातीत के पास जाना और उनके साथ जुड़ जाना। सो, वे भी जूनागढ़ गये। जब **जूनागढ़ मंदिर के चौक में भगतजी महाराज आये, गुणातीतानंदस्वामी सभामंडप में बैठे थे। आसन से उतरने के बाद बोले कि वन का मृग यहाँ कैसे आ गया? और... ऐसा कहकर उन्हें अपनी मूर्ति में खींच लिया। बस जैसे गोपाळानंदस्वामी के साथ प्रेम था, ऐसा ही प्रेम उसी क्षण से गुणातीतानंदस्वामी के साथ हो गया। भगतजी की गुणातीतभाव की यात्रा शुरू हो गई।** स्वामी ने भगतजी महाराज की

परीक्षा ली—मटके भर-भर कर पेड़ों को पानी दिलवाया, चूने की भट्टी में काम करवाया, कुत्ते को दण्डवत् कराया, झूठे पानी के कुंड में स्नान कराया इत्यादि सब प्रसंग हैं।

योगीबापा के समय ऐसे कोई प्रसंग नहीं बने थे। याद रखना, ***एक जैसे प्रसंग repeat नहीं होते। पर, अपने गुरु में constant निर्दोषबुद्धि और दिव्यभाव रख कर, अपनी बुद्धि का श्रेष्ठ उपयोग उनकी आज्ञा पालन करने में लगावें, तो गुरु की प्रसन्नता प्राप्त होती है और वही साधुता का कसब है। अश्विनभाई M.Sc. में पढ़ते थे, तब बापा की आज्ञा आई उनकी सेवा में आ जायें। तो, पढ़ाई अधूरी छोड़ कर अगले ही दिन से वे बापा के पास गये।*** *हम सब यह प्रसंग जानते हैं कि* ***उन्होंने घर पर बताया भी नहीं था।*** *जब उनकी माँ को पता लगा, तो उन्होंने उन्हें लेने के लिये दूसरे बेटे को भेजा। बापा ने भी अश्विनभाई को कह दिया कि जाओ और अपनी माँ को राज़ी कर लो। फिर उन्होंने* ***गाँव के मंदिर में एक पेड़ के नीचे खड़े रहकर 10 दिन माला फिराई। माँ को हुआ कि ये मेरा बेटा अपने गुरु के बिना रह नहीं पा रहा। फिर राज़ी-खुशी से टीका लगाकर उन्हें बापा को सौंप दिया। इस तरह अपने अंतर में से घर जला कर वे बापा के पास आये। 21 मई 1966*** *को बापा ने छोटा-सा पत्र लिख कर अश्विनभाई के हाथों ही वह भेजा कि ये वहाँ आ रहे हैं और युवा प्रवृत्ति, बाल मंडल की प्रवृत्ति करेंगे।* ***'प्रभुकृपा' बिल्डिंग में पप्पाजी, बा और सभी ने इनका स्वीकार किया। तब से अश्विन हमारी सेना में जुड़ गये। बापा ने उन्हें 'साधुराम' के नाम से नवाज़ा। जैसे भगतजी ने गुणातीत को राज़ी किया, वैसे ही अश्विनभाई, शांतिभाई, हर्षदभाई, वी.एस., रतिकाका, सनंदभाई, पूनमभाई, बेरिस्टर इन सभी संतों ने योगीबापा को राज़ी करने जीवन जीया।*** *उसके बाद* ***काकाजी-पप्पाजी के साथ भी ऐसा ही जीये। महाराज की प्रसन्नता प्राप्त की और गुणातीतभाव को पा गये। ऐसे संतों के सान्निध्य में हम भगवान के मार्ग पर चल रहे हैं। इसलिये हम अक्षरधामरूप बनने ही वाले हैं, ये 100 प्रतिशत है।*** *अब अगर इसी देह से, हंसते-खेलते हुए हो जाना हो, इसके लिये ही ये सारा उद्यम है। महाराज से लेकर हमारी गुणातीत परंपरा के सभी स्वरूप अभी जो हैं, उनके अखंड माहात्म्य में हम रहें। अश्विनभाई ने भजन में गाया—तेरा आश्रित तेरा ही स्वरूप है, ऐसी महिमा हम में बस जाये। भगवान और सत्पुरुष के योग में आये हुए उन्हीं के जैसे हैं, फिर दोष कैसे दिखे? पारायण में बताया कि भगतजी ने गोरधन कोठारी से कहा कि वड़ताल मंदिर के द्वार के अंदर आने वाले हर एक को ब्रह्म की मूर्ति मानो, तो सभी दोष और मायूसी चली जायेगी। देखो, कितना आसान उपाय है। पर, हमें इसमें देहभाव और अंतरशत्रु आड़े आते हैं।*

उन्हें कैसे हटायें, उसका उपाय ***वचनामृत गढडा मध्य 63*** *में* ***श्रीजी महाराज*** *ने बताया कि किस प्रकार जीव को तत्काल बल मिल जाये।* ***योगीबापा*** *का ये* ***प्रिय वचनामृत था कि साधु और भक्तों की मन, कर्म और वचन से सेवा करो। मन से उन्हें निर्दोष मानो, वचन से गुणगान व महिमा गाओ और सुनो। कर्म तथा देह से सेवा करो या देह से काम करके जो धन प्राप्त हुआ हो, वो उनके लिये उपयोग करो। निर्दोषबुद्धि से ऐसी सेवा भगवान को राज़ी करने करेंगे, तो आत्मा को तत्काल बल मिलेगा। 2 या 4 साल नहीं लगेंगे, तत्काल! उससे सारे देहभाव के हुल्लड़ अपने आप टल जायेंगे।*** *भगवान का रास्ता कितना सुगम है और संत से प्रीति। दो हाथ जोड़ के प्रभु को कर्ता-हर्ता मानकर संत की आज्ञा पालें।* ***संतों-भक्तों की मन, कर्म, वचन से सेवा करो। किसी की खटपट, निंदा, बहस में न पड़ें, तो इसी देह में प्राप्ति हो जाये। गृहस्थी हो या त्यागी, उसमें कोई फ़र्क़ नहीं है।***

एक दिन हमारे Computer Centre में बातचीत दौरान ***एक बहन*** *ने प्रश्न पूछा—भगवान राजी हों तो त्यागी, गृही का कोई फ़र्क़ नहीं? सबकी स्थिति एक समान है और प्राप्ति भी सरीखी है? तो, फिर क्यों न शादी करके भक्ति करें?*

मैंने *कहा— हाँ, उसमें भी कोई बंधन नहीं है।*

वो *बोलीं— फिर फ़र्क़ कहाँ पड़ता है?*

मैंने *बताया— एक फ़र्क़ पड़ता है कि अगर दो जने रास्ते पर जा रहे हों, तो एक के हाथ में 20 किलो के 2 bag हों और दूसरा खाली हाथ चल रहा हो, तो सफ़र का मज़ा किसे आयेगा, खाली हाथ चलने वाले को। ऐसे ही गृहस्थ को भी baggage उठाना है, पर अक्षरधाम एक साथ ही पहुंचेंगे। इसलिये त्यागी-गृही का कोई भेदभाव नहीं। त्यागी को ये आसान है कि कोई tension नहीं। पर, मुश्किल भी इतनी ही है कि अगर भगवान का भजन न हो; तो वो त्यागी किसी काम का नहीं, उसका जन्म बेकार जायेगा। इसलिये दोनों पक्ष में जाग्रतता रखनी पड़े कि मैं भगवान को राज़ी करने निकला हूँ, उनका होकर जीने, उनके लिये ही समर्पित होकर सब करना है। फिर त्यागी-ग्रही दोनों प्रसन्नता के पात्र बनते हैं।*

जैसे ***भगतजी, जागास्वामी और अदाश्री ने जीया और शास्त्रीजी महाराज तथा योगीजी महाराज ने त्यागी के रूप में जीकर दिखाया। काकाजी, पप्पाजी ने गृहस्थ होकर ऐसा दर्शन कराया और महंतस्वामी, प्रमुखस्वामी, अश्विनभाई, शांतिभाई इन सबने त्यागी होकर दर्शन कराया।*** *इसलिये* ***महाराज ने हमारे लिये इतनी सुलभता की कि अपने साथ गुणातीत को ले आये। शास्त्रीजी-योगीजी ने अक्षरपुरुषोत्तम उपासना जगाई, उस प्राप्ति के कैफ़ में रहें।*** *अश्विनभाई ने*

भगतजी का जो जीवन दर्शन कराया, हम ऐसे भाव से इन स्वरूपों के जीवन चरित्र पढ़ें कि जिससे हमें ऐसा जीवन जीने की प्रेरणा मिले। जैसे अभी प्रसंग सुना कि भगतजी को हेत था, पर ज्ञान की कसर थी। वो ज्ञान क्या? भगवान, संतों, भक्तों का माहात्म्य जानने की कसर। वो इस तरह स्वाध्याय, आधा घंटा धुन और हर सप्ताह सत्संग सभा attend करने से टल पायेगी। ये करने हम सबको खूब बल मिले। भगतजी महाराज की भाँति संबध वालों को प्रभु का स्वरूप मान कर, इस भाव से सेवा करने की हम सबको खूब जाग्रतता प्राप्त हो ऐसी प्रार्थना...

सायं 5:00 बजे **संतभगवंत साहेबजी** की **85वीं प्राकट्य तिथि** यानि **धुलेन्डी** की **पूर्व संध्या** पर, **सद्गुरु साधु मनोजदासजी** द्वारा रचित **'श्री अक्षरपुरुषोत्तम उपासना कथामंगल'** के पंचम अध्याय (संतभगवंत साहेबजी अमृत माहात्म्यधारा) का लाभ लेने के लिये सभी सभामंडप में एकत्र हुए। संतभगवंत साहेबजी के माहात्म्य प्रसंगों में सबको भिगोने के लिये, व्यासपीठ पर विराजित होने से पूर्व प.पू. मनोजदासजी ने मंचस्थ स्वरूपों, सद्गुरुओं एवं दिल्ली मंदिर के संतों को सेवकभाव से पंचांग प्रणाम किया। गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ संतभगवंत साहेबजी के संबंध, भक्तों के लिये हर प्रकार से की गई उनकी सेवा-भक्ति का निम्न प्रकार उल्लेख करते हुए वे कई बार अत्यंत भावुक हो गये—

बापा ने जो वचन साहेबजी से कहे कि आप लोग अब संसार में मत जाना। आप सबको साधु करने हैं, पर भगवा कपड़े नहीं देने। इन्हीं कपड़ों में साधु करने हैं। आप सब का हृदय भगवा करना है। ये वचन आध्यात्मिक इतिहास में नींव बनकर रहे...

Imagine करो कि किसी बड़े highway पर एक 5 वर्ष का बच्चा अपने मां-बाप के साथ luxury कार में जा रहा हो। माँ-बाप उसे chocolate और ice cream खिला के लाड़ लड़ा रहे हों और अचानक उसे गाड़ी से बाहर बीच सड़क पर अकेला छोड़ के वो गाड़ी चली जाये। उस बच्चे की मनोस्थिति क्या होगी? ठीक ऐसे ही हालात थे जब साहेबजी और अष्ट सखाओं को स्वयं बनाया हुआ छात्रालय बापा की आज्ञा से छोड़ना पड़ा। क्या करें, कहाँ जायें, कुछ पता नहीं था। फिर भी ***ये सब उदास हुए बिना, बापा का माहात्म्य जान कर उनकी आज्ञानुसार काकाजी-पप्पाजी के पास आये... यदि हम भगवान को सर्व कर्ता-हर्ता मानते हैं, तो उसमें साकारभाव और सर्वोपरिता का भाव निहित है...***

यदि हमें कहा जाये कि सभा मंडप के बाहर अपनी चप्पल उतार कर आयें और सभा के बीच में announcement हो कि व्यवधान के कारण भक्तों की चप्पलों को हटाकर किसी और जगह

रखा गया है। तो क्या होगा? बाकी की पूरी सभा हम इसी चिंता में रहेंगे कि मेरी चप्पल कहीं खो न जायें। विचार करें कि पहनने वाली साधारण वस्तु ने कैसे हमारे मस्तिष्क पर कब्जा कर लिया। इसीलिये अंतःकरण को स्थिर बनाने की अनिवार्यता है...

लगभग दो घंटे तक संतभगवंत साहेबजी के माहात्म्य की ज्ञान गंगा प्रवाहित करने के बाद अपनी वाणी को विराम देने से पूर्व, उन्होंने **सद्गुरु संतों** द्वारा निर्धारित एवं **संतभगंवत साहेबजी** द्वारा **मान्यता प्राप्त** निम्न **6 सूत्रों** का पठन इस भावना से किया कि इनमें से यदि एक सूत्र भी हम अपने जीवन में आत्मसात् करने तत्पर होंगे, तो उससे प्रभु हमारा हर प्रकार से श्रेय करेंगे।

1. *हम परिवार के सभी सदस्य प्रतिदिन कम से कम एक समय श्री ठाकुरजी को भोजन अर्पण करके, एक साथ बैठ कर वह प्रसाद लेंगे।*

   प्रति दिन सभी कम से कम 45 मिनिट घरसभा अर्थात् स्वामिनारायण धुन सहित वचनामृत जैसे सद्शास्त्रों का पठन तथा एक-दूजे के साथ दिनचर्या पर विचार-विमर्श करेंगे।
2. *हम प्रति दिन अचूक-नियमित रूप से प्रगट गुरुहरि साहेबजी की स्मृति के साथ आधा घंटा स्वामिनारायण महामंत्र की धुन करेंगे।*
3. *हमारे मंडल में होती साप्ताहिक सभा में हम अचूक-नियमित महिमासहित हाज़िरी देंगे और वहाँ से प्राप्त सत्संग मार्गदर्शन को जीवन में ढालेंगे।*
4. *प्रगट गुरुहरि संतभगवंत साहेबजी के अंतर की प्रसन्नता प्राप्त करके, देहभाव से परे और आसक्तियों से मुक्त होने के लिये हम हमारे गुरु की आज्ञानुसार हमारे मंडल, प्रदेश और उत्सवों में सभी के प्रति निर्दोषभाव, दिव्यभाव रख कर, संप, सुहृदभाव, एकता दृढ़ करते हुए तन, मन, धन की महत्त सेवा अहोभाव से करेंगे।*
5. *भगवान श्री स्वामिनारायण की आज्ञानुसार हम प्रमाणिक रूप से प्रति वर्ष अथवा प्रति मास हमारी का आय का पाँच या दस प्रतिशत प्रगट गुरु की आज्ञा से श्री ठाकुरजी की सेवा के दिव्य कार्य के लिये अर्पण करेंगे।*
6. *रात को आराम में जाने के पहले श्री ठाकुरजी को प्रणाम-प्रार्थना करके, अपने परिवार जनों के सद्गुणों का विचार करेंगे।*

प.पू. मनोजदासजी ने बताया कि 6 नंबर का नियम संतभगवंत साहेबजी ने अपने हस्ताक्षर में लिख कर दिया है। शायद अन्य कोई नियम का पालन कर सकें या नहीं, परंतु यह नियम तो जिन्हें नींद न आती हो, उनके लिये अत्यंत लाभप्रद है।

सद्गुरु श्री शतानंद मुनि ने भगवान स्वामिनारायण के 108 नाम से संस्कृत भाषा में **'जनमंगल स्तोत्रम'** रचा। परंतु, भगवान स्वामिनारायण के समय के नंद पंक्ति के संतों ने अपने भजनों में जिन नामों से श्रीजी महाराज को संबोधित किया है, उनके आधार पर गुजराती में **प.पू. मनोजदासजी** ने जनसाधारण के लिये **'श्री अष्टोत्तरशत हरिनाम स्तोत्र'** रचित किया है। सो, कथामंगल के समापन पर सुरवृंद ने वह प्रस्तुत किया।

गुरुपूर्णिमा एवं गुरु का प्राकट्य दिन—ये दो अवसर शिष्य के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि गुरु को प्रार्थना करने और भाव अर्पण करने का सुनहरा मौका प्राप्त होता है। सो, अनुपम मिशन से जुड़े अलग-अलग प्रदेश के मुक्तों-बालकों ने संतभगवंत साहेबजी को स्वहस्त से बनाये कलात्मक हार, कार्ड, भेंट, पुष्प गुच्छ, श्री मुक्ताक्षर की मूर्ति **वाले 85 चाँदी सिक्के** तथा शाल इत्यादि अर्पण करके आशीर्वाद प्राप्त किया। **प.पू. गुरुजी** एवं **प.पू दीदी** की आज्ञा से दिल्ली मंदिर के संतों, युवकों, बहनों एवं गृहस्थों की भावना एक छोटे गलीचे के रूप में **पू. सरयूविहारीस्वामी** एवं **पू. आनंदस्वरूपस्वामी** ने **संतभगवंत साहेबजी** को अर्पण की और **पू. राकेशभाई** ने सबकी ओर से निम्न प्रार्थना की—

हम जब सत्संग में आते हैं, तो सत्पुरुष के अनुग्रह से ही हमें प्रभु का संबंध प्राप्त होता है। फिर हमें सत्संग में टिकाये रखने के लिये अपने प्रेमरूपी toffee से हमारे हठ, मान, ईर्ष्या, कई स्वभावों को ये सत्पुरुष निभाते रहे हैं। इसलिये गलीचे की packing एक toffee के रूप में की है और प्रार्थना है कि ***ये गलीचा हमारे प्रकृति-स्वभावों का प्रतीक है, तो अपने श्रीचरण इस पर रख कर इन्हें कुचल दें, जिससे हम आपके शासन का सहज ही स्वीकार करके, इस सत्संग में आपकी मरज़ी के अनुसार चल सकें...***

संतभगवंत साहेबजी ने तुरंत ही मुक्तों की यह प्रार्थना स्वीकार करते हुए अपने चरणारविंद के नीचे वह गलीचा रखवाया। तत्पश्चात् समापन श्लोक गान के साथ इस पारायण-सभा की पूर्णाहुति हुई।

25 मार्च—रंगों के त्योहार धुलेन्डी की प्रातः 9:00 बजे दिल्ली-अशोकविहार के **श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर** के **कल्पवृक्ष हॉल** में **प.पू. गुरुजी** की निश्रा में **चंदनोत्सव** एवं **संतभगवंत साहेबजी** के **प्राकट्य पर्व** हेतु महापूजा में स्थानिक मुक्त एकत्र हुए। प.पू. गुरुजी की पूजा में धुलेन्डी के प्रतीक रूप रंगों से युक्त कटोरियाँ रखी थीं। सो, पूजा के बाद प.पू. गुरुजी ने प्यारे नमन-रघु जैसे छोटे बच्चों तथा कुछ मुक्तों पर प्रसादी के वे रंग डाल

कर निराली स्मृति दी। इसके अतिरिक्त सेवकों ने युवकों-हरिभक्तों को तथा अक्षरज्योति की बहनों ने भाभियों-युवतियों को प्रसादी चंदन लगा कर यह पर्व मनाया।

इसी समय अनुपम मिशन के सभामंडप में **संतभगवंत साहेबजी** के आगमन में प्रतीक्षारत मुक्त समाज सुरवृंद द्वारा गाये जाते भजनों में लीन था। हमें मिली गुणातीत विभूतियाँ किस प्रकार अपनी पल-पल की क्रिया से प्रभु को आगे रख कर जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं, उसका सम्यक् दर्शन संतभगवंत साहेबजी ने सहजता से कराया। 85वें प्राकट्य पर्व निमित्त **संतभगवंत साहेबजी** के लिये सुंदर रथ बनाया था, जिस पर विराजमान होकर उन्हें सभा स्थल में प्रवेश करना था। तो, रथ पर चढ़ने से पूर्व उन्होंने **श्री ठाकुरजी की मूर्ति को सर्वप्रथम नमन किया और फिर रथ की ओर कदम बढ़ाया।**

तब सहज ही उन्होंने गुणातीत समाज के सर्जक **गुरुहरि काकाजी** के वचन—

प्रभु के नाम का नमक डाल कर कार्य करो...

गुरुहरि पप्पाजी के वचन—*प्रथम प्रभु, फिर कदम बढ़ाना...*

की स्मृति करवा दी तथा प्राकट्योत्सव के प्रारंभ में ही सबको जीवनमंत्र दे दिया कि **जीवन में प्रभु को आगे रख कर चलेंगे, तो वे हमारा योग-क्षेम सब कुछ स्वयं संभाल लेंगे।**

मुक्तों द्वारा बनाये सुंदर रथ पर विराजमान होकर जब संतभगवंत साहेबजी ने सभामंडप में प्रवेश किया, तो सर्वप्रथम नवरचित भजन **'आवो पधारोने व्हाला अमारां, अर्पण भाव अंतरना अमारां...'** पर सत्संग के युवक-युवतियों ने नृत्य करके भाव अर्पण किया, इसी दौरान अनुपम मिशन के साधुओं एवं हरिभक्तों ने अपने प्रगट प्रभु की आरती भी करी। इस प्रकार स्वागत स्वीकार करके संतभगवंत साहेबजी ने मंच पर अपना आसन ग्रहण किया। तत्पश्चात् सभा का मंगल आरंभ करते हुए **पू. साधु पीटरदासजी** ने संतभगवंत साहेबजी का संक्षिप्त में माहात्म्यगान किया और मंचस्थ गुणातीत स्वरूपों, सद्गुरु संतों एवं केन्द्रों से आये प्रतिनिधि संतों का पूजन व हार से स्वागत कराया। भयंकर गर्मी को नज़रअंदाज़ करके, **88 वर्ष की आयु में प.पू. हंसा दीदी** संतभगवंत साहेबजी के प्रति दिव्य प्रीति के वश सबको दर्शन देने के लिये पधारी थीं। पुष्प हार से उनका अभिवादन किया गया। इसी दौरान पवई मंदिर से आये **प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई** एवं मुक्तों ने **संतभगवंत साहेबजी** को अनोखी 3D मूर्ति भेंट स्वरूप अर्पण की। इस मूर्ति में गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ युवा संतभगवंत साहेबजी का दर्शन होता था और उसे दायें या बायें हिलाने पर **गुरुहरि काकाजी, गुरुहरि पप्पाजी, ब्रह्मस्वरूप**

हरिप्रसादस्वामीजी एवं **ब्रह्मस्वरूप अक्षरविहारीस्वामीजी** के साथ **संतभगवंत साहेबजी** एवं उनके **अष्ट सखाओं** का दर्शन होता था।

तत्पश्चात् **सद्गुरु साधु मनोजदासजी** ने भगवान स्वामिनारायण एवं गुरुपरंपरा के स्वरूपों का आवाहन्-स्वागत करते हुए, गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों से प्रतिनिधि के रूप में आये, संतों, युवकों, बहनों एवं हरिभक्तों का हार्दिक अभिनंदन किया। संतभगवंत साहेबजी से आशीर्वाद प्राप्त करने आये **आणंद** के **सांसद श्री मितेशभाई पटेल**, **लेफ्टिनेन्ट जनरल श्री अरविंद महाजनजी** तथा लंडन से **पू. सतीषभाई चटवाणी साहेब** ने फोन द्वारा संतभगवंत साहेबजी के प्रति अपना भाव व्यक्त किया। **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी** की ओर से **प.पू. त्यागवल्लभस्वामीजी ने तथा प.पू. वशीभाई, प.पू. निर्मलस्वामीजी, सद्गुरु संत अश्विनदादा** ने संतभगवंत साहेबजी का माहात्म्यगान करते हुए सभी की ओर से प्रार्थना की। **प.पू. गुरुजी** तथा दिल्ली मंदिर के मुक्त समाज की ओर से **पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी, पू. अक्षरस्वरूपस्वामीजी, पू. राकेशभाई शाह, पू. ललित शर्माजी** एवं **पू. पुनीत मल्होत्रा** ने **संतभगवंत साहेबजी** को पुष्प हार अर्पण करके, चंदनोत्सव निमित्त चंदन से उनका पूजन किया। तत्पश्चात् **प.पू. गुरुजी** के आशीर्वाद पत्र का वाचन **पू. राकेशभाई शाह** ने किया।

प्राकट्योत्सव के अंत में **संतभगवंत साहेबजी** ने आशीष वर्षा करके, सबको प्रभु के रंग में रंग कर जीवन धन्य बनाने की प्रेरणा दी और **दोपहर करीब 1:00 बजे उत्सव का समापन हुआ।** उत्सव दौरान तापमान बहुत होने के कारण सेवकों ने पूरे पंडाल में तारों के माध्यम से, थोड़ी-थोड़ी देर में गुलाब की सुगंध से युक्त पानी की फुहार की व्यवस्था की, ताकि भक्तों को गर्मी न लगे।

फिर भी दोपहर की तपती गर्मी के बावजूद 2:30 बजे तक मंच पर बैठे रह कर, हार अथवा भेंट के रूप में संबंध वाले मुक्तों के भाव ग्रहण करके, संतभगवंत साहेबजी ने पराभक्ति का दर्शन कराया। महाप्रसाद लेकर भक्तगण जब सभामंडप के आसपास से गुज़र रहे थे, तब यह दर्शन किया। इसके अतिरिक्त गाड़ी में विराजमान होकर जब 'योगीप्रसाद' में प्रसाद लेने जा रहे थे, तब एक जगह अपनी गाड़ी से उतर कर, दूसरी गाड़ी में बैठे एक मुक्त से मिलने के लिये गये और 'योगीप्रसाद' के बाहर भी भक्तों से मिलने में लगभग दोपहर 3:00 बजे तक व्यस्त रहे। महोत्सव दौरान रोज़ 'योगीप्रसाद' में सबको दर्शन देने के लिये आते और सबने अच्छी तरह प्रसाद लिया है कि नहीं, ऐसा भी पूछते थे। एक दिन तो एक बहनजी से उनकी तबियत के

बारे पूछते हुए करीब 15 मिनिट वहाँ खड़े रहे और जो बहन उनकी सेवा में थीं, उनसे उनकी देखभाल अच्छी तरह करने का सूचन किया। **85 वर्ष की आयु में संतभगवंत साहेबजी का ऐसा परिश्रम देख कर आँखों में आसूँ आ गये कि सबके गुरु स्थान पर होते हुए भी वे तो अपने आपको गुरुहरि यागीजी महाराज का सेवक ही मान कर पल-पल जीते हैं, वैसा वर्तन करते हैं। लेकिन, हम सभी को यह भी समझना अनिवार्य है कि संतभगवंत साहेबजी आज्ञा से भक्तों की भक्ति करते सेवक सबकी सुविधाओं का इतना ख्याल रखते हैं, तो संतभगवंत साहेबजी के रूप में मिले प्रगट प्रभु तो गुणातीत समाज की एक अनमोल पूँजी हैं, तो उन्हें स्थूल रूप से हमारे लिये कम से कम परिश्रम करना पड़े, उसका हम ख्याल रखें, किसी भी प्रकार का आग्रह न रखें, प्रार्थना से उन्हें पुकार करें।** दरअसल, **ये गुणातीत पुरुष तो इतने समर्थ हैं कि संकल्प से हमारा हर प्रकार से पोषण करेंगे, करेंगे, करेंगे ही।** ऐसी दृढ़ता के साथ **धुलेन्डी** की सभा के निम्न उद्‌गारों एवं आशीवर्चनों से कृतार्थ हों–

प.पू. त्यागवल्लभस्वामीजी (हरिधाम)

मनोजभाई ने कहा कि हमें साहेबजी के दर्शन, उनकी शताब्दी पर इसी तरह होते रहें। प्रेमस्वामीजी पिछले 5 दिन से साहेबजी को याद कर रहे हैं। कल आस्ट्रेलिया से online सभा में उन्होंने बताया कि मैं खूब भाग्यशाली हूँ कि साहेबजी की गोद में परवरिश मिली। हरिप्रसादस्वामीजी ने भी साहेब के साथ के अपने संबंध का अद्‌भुत दर्शन करवाया है। होली पर प्रेमस्वामीजी ने बताया कि गुरु गुणातीत की आँखें कोई इशारा करतीं कि तुरंत भगतजी का देह उस सेवा के लिये तत्पर हो जाता। ***युगल उपासना के कार्य में जैसे गुणातीतानंदस्वामी ने भगतजी को निमित्त बनाया, वैसे ही बापा ने गुणातीत समाज के सर्जन में काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी के साथ साहेब को निमित्त बनाया।*** *हमारे चारों पंखुड़ियों के समाज में साहेब सबके खूब प्यारे हैं। जब मैंने दीक्षा ली, तब विद्यानगर में साहेब के दर्शन और प्रसाद का सौभाग्य मिला था। शांतिदादा और हर्षदभाई इत्यादि ने खूब जतन किया। जब मैं युवक था, तो वो मुझे बॉब कहकर बुलाते। इतना निःस्वार्थ स्नेह दिया कि उसके बल से भगवान भजने के मार्ग पर चल पाया।* ***अक्षरपुरुषोत्तम छात्रालय की स्मृति करवाते हुये प्रेमस्वामीजी ने कल बताया कि कैसे ONE MAN ARMY की तरह अनंत कठिनाइयों और उपेक्षाओं में ये कार्य हुआ है। वड़ताल के संतों ने भगतजी का कितना विरोध-अपमान किया था... ऐसे ही साहेब का दर्शन छात्रालय के समय हुआ था। पर, साहेब ने विरोध करने वालों के प्रति भी कोई गांठ नहीं रखी। स्वामीजी ने 1999 के प्रवचन में साहेबजी को याद करते हुए कहा था कि उन्होंने बापा का कोई वचन व्यर्थ नहीं जाने दिया। कभी***

कोई विचार या मन-बुद्धि को आड़े नहीं आने दिया। *स्वामीजी कहते थे कि देह के साथ-साथ मन और बुद्धि भी निरोगी होने चाहिये, क्योंकि इनमें अनंत प्रकार के राग और स्वभाव रहे हैं। हमें वो दिखते नहीं हैं, तो हम उन्हें टालेंगे कैसे? पर, ये पुरुष इतने समर्थ हैं कि केवल उनका गुण लेंगे, तो भी वे सब टाल के अक्षरधाम बख्शीश में दे देते हैं। आज के समय में हमसे कोई भी साधना नहीं हो पायेगी, हमारी ओर से ये पुरुष साधना करते हैं।* ***साहेबजी हमारे पूरे गुणातीत समाज की परवरिश करके अक्षरपुरुषोत्तम की सच्ची उपासना दृढ़ करवाने में लगे हैं।*** *प्रेमस्वामीजी ने कहलवाया है कि वे भले ही internet के माध्यम से live दर्शन कर रहे हैं, पर आज के मंगल दिन पर प्रत्यक्ष दर्शन न होने के कारण वे आपको miss करते हैं। उन्होंने हमसे कहा कि आप भाग्यशाली हो कि प्रत्यक्ष दर्शन का लाभ मिल रहा है। तो, हम सबकी ओर से आज ये प्रार्थना करना कि* ***उन्हें जो हमसे करवाना है, वो उनके बल व उनकी रीति से उन्हें राज़ी करने की भावना से निरंतर लगे रहें। साहेबदादा की पसंद ही हमारी पसंद बने...*** ***स्वामीजी*** *ने एक छोटी-सी कहानी बतायी थी कि एक योगी ने दूसरे योगी से कहा कि मुझे 84 प्रकार के आसन आते हैं। दूसरे ने कहा— 84 आसन तो ठीक हैं, पर मुझे 85वाँ आसन आता है। पहला योगी बोला—आसन तो केवल 84 होते हैं। 85वाँ कौन-सा? तब दूसरा योगी बोला— 'आस न' है, अर्थात् किसी भी प्रकार की आशा या कामना न हो,* ***किसी भी प्रकार की हेत, माया, प्रीति न हो—सिर्फ एक भगवान-ऐसे दिव्य स्वरूपों में ही प्रीति हो, ऐसा आसन हम सब सिद्ध कर सकें,*** *यही प्रार्थना।*

प.पू. वशीभाई (पवई)

...हम बहुत भाग्यशाली हैं। साहेबजी का 85वाँ प्रागट्य दिन मना रहे हैं। योगीबापा ने सालों पहले जो बड़ा कार्य किया, तो वो ये कि आध्यात्मिकता को पूरा change कर दिया। पढ़े लिखे मुक्तों को संत, साध्वी बनाया और ऐसा कहा कि बहनें भगवान भजें, उसमें क्या हरज़ है, महाराज जोग दे देंगे। साथ ही साहेबजी इत्यादि को ऐसा कहा कि भगवा कपड़े नहीं देने, इन सबका हृदय भगवा करना है। करोड़ों धन्यवाद हो अश्विनदादा और डॉ. मनोजभाई को कि उन्होंने साहेबजी और भाइयों के कार्य को जग ज़ाहिर किया। साहेबजी के विषय में हम सोचते हैं कि मोगरी, मुंबई, allentown इतनी जगह पर मंदिर किये हैं, नहीं। मेरा यह सोचना है कि ***साहेबजी ने अपने संबंध से ऐसे भक्तों तैयार किये हैं कि वो एक-एक मंदिर जैसे हैं, तो इन्होंने 500 मंदिर तैयार किये हैं।*** *इन मुक्तों की बातें सुनें, उनके पास बैठें तो ख्याल पड़ता है।*

एक उदाहरण बताता हूँ। दिनकर अंकल के साथ San Francisco जाना हुआ। साहेबजी ने अचानक भक्तों को कहलवाया कि सभा करनी है। आप मानेंगे नहीं कि एक ही दिन के notice

में सारे भक्त आ गये और महापूजा का लाभ लिया। उन भक्तों की बातें सुनकर ख्याल पड़ता है कि साहेबजी का कैसा अद्‌भुत सर्जन है? कैसे अद्‌भुत भक्तों दिये हैं? तो, बापा की जो परियोजना, आध्यात्मिकता का उनका vision कैसा होगा? मनोजभाई सोनी अकसर कहते हैं कि बापा के बारे में ऐसा लगता कि चौथी कक्षा तक पढ़े हुए, एकदम छुपे साधु, उन्हें क्या समझ होगी? पर, आज की technology और समाज के अनुरूप पढ़े लिखे विद्वानों से ख्याल पड़ता है कि बापा कैसे visinory पुरुष ***आज साहेबजी के पास Chartered Accountant, UPSC Chairman साधु हैं। आज world जो solution मांग रहा है; वो harmony साहेबजी ने हज़ारों भक्तों में प्रगटाई है और उनके द्वारा दुनियाभर में spread हो रही है। स्वामिनारायण भगवान का-अक्षरपुरुषोत्तम उपासना का जो सिद्धांत है, उन्हें जो करवाना है वो सालों पहले, अधिक बोले या दिखावा किये बिना बहुत सरल शब्दों में बताना उन्होंने आरंभ किया।*** *डॉ. मनोजभाई, साहेब के अक्षरपुरुषोत्तम उपासना प्रवर्तन के कार्य से पूरे स्वामिनारायण संप्रदाय को अवगत कराते हैं। डॉ. सोनी जब महंतस्वामीजी से मिले और उनसे सारी उपलब्धियों की बात की, तो वे बहुत impress हुए। हम भी स्वामिनारायण गुरुकुल इत्यादि गये और उनसे सारी बातें की, तो वो इतने खुश हुए कि आप लोग बहुत भक्ति कर रहे हो और इस पैंट-शर्ट की ड्रेस में भगवान का कार्य कर रहे हो। ये साहेबजी का छुपा कार्य है। बाहर की दुनिया में जाते हैं, तो पता लगता है। एक बार मैं दुबई एयरपोर्ट पर था। एक व्यक्ति मुझे इस ड्रेस में देख कर हंस रहा था। मैंने पूछा क्या हुआ? तो बोला— आपका ड्रेस बढ़िया है। अगर ये ड्रेस इतना impact करता है, तो साहेब का impact कितना होगा?* ***करोड़ों धन्यवाद हो काका-पप्पा-बा को... बापा ने साहेब के लिये कहा था कि आप 80 ब्रह्मविद्या पढ़े राहबर के महारथी हो। साहेबदादा आपको धन्य है कि इतने सालों पहले के वाक्य को आपने सही मायने में साकार किया। 80 नहीं पर करीब 150-200 संत ऐसे शुद्ध वर्तन वाले तैयार किये हैं।*** *पहले के ऋषि-मुनि यज्ञ की महिमा समझाते थे, साहेबजी ने उसे मूर्तिमान किया है। हर रविवार साधकों से यज्ञ करवाते हैं। एक बार घनश्यामभाई और इला भाभी यहाँ थे, तो उन्हें यजमान बनाया था। काकाजी की भी यही भावना थी, वे पवई में भी बहुत यज्ञ करवाते थे। यज्ञ यानि—आहुति! साहेबजी का कराया जाता यज्ञ symbolic है...* ***बहुजन सुखाय, बहुजन हिताय का सूत्र लेकर बढ़िया कार्य कर रहे हैं।*** *हे साहेबदादा आपको करोड़ों धन्यवाद हैं कि योगीबापा की जो भावना थी, उसे बहुत साकार करके भक्तों को अधिक से अधिक लाभ दे रहे हैं। आप महाराज, भगतजी और योगीबापा के तत्त्व को सांगोपांग*

धार कर जी रहे हो, हम भी गुणातीत स्वरूपों को धार कर आपकी सुहृदभाव की भावना को अपने जीवन में प्रगटा कर सुखी हों और अन्यों को भी सुखी करें...

प.पू. निर्मळस्वामीजी (समढियाला)

...1952 में मेरी आयु 8 वर्ष थी, तब योगीबापा ने खुद उठा कर मुझे बैलगाड़ी में बिठाया था। मैं आदिवासी वनवासी इलाके से अनपढ़ साधु हूँ, कभी स्कूल गया नहीं... बापा 72 घंटों तक मेरे साथ personally बैठे थे।

एक शरद्पूर्णिमा के दिन मैंने साहेब के प्रथम दर्शन गोंडल मंदिर में किये थे। तब साहेब आयु में छोटे और बड़े खूबसूरत-मोहक थे। वर्तमान समय में तो कुछ अलग ही दर्शन होता है... उस वक्त संस्था में युवा ज़्यादा प्रवचन नहीं करते थे। लेकिन, साहेबजी द्वारा इसकी शुरुआत हुई। सभा में बापा ने माईक पर खुद announce किया कि अब जसुभाई लाभ देंगे। आबाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुष, उनकी मूर्ति को निहारने के लिये और उनकी वाणी सुनने खड़े रहते और भक्तों आपस में उनकी महिमा गाते...

छात्रालय छोड़ने का जब निर्णय लेना था, तब सब विचार में पड़ गये कि साहेबजी को छोड़ने के लिये कहेगा कौन? बापा ने मुझसे कहा कि जसुभाई आ रहे हैं, वो सीधे मुझे आकर मिले, बीच में कोई अड़चन न आये ये ध्यान रखना। ***साहेब, बापा के पास direct पहुँचे और उनकी गोद में सिर रखा। तब बापा ने भी अपना सिर उनके सिर पर रखा और दोनों हाथों से आशीर्वाद देते हुए कहा—छात्रालाय के बजाय आपके द्वारा दूसरे अनेक कार्य कराने हैं। छात्रालय तो सामान्य है, पर आपसे बड़े कार्य करवाने हैं इसलिये यहाँ से आपको निवृत्त कर रहे हैं...***

साहेब को निहारने की दृष्टि हमारे पास नहीं है। *वे और प्रेमस्वामीजी हमारे गुणातीत समाज के पूजनीय-वंदनीय हैं, गुरु पद पर हैं... शास्त्रीजी महाराज ने मुझे कंठी पहनाई थी और गोद में बिठाया था। जब बापा ने दीक्षा दी तब मेरी 11 साल की उम्र थी। गोंडल मंदिर के कोठारी के पद पर 11 वर्ष तक रखा और 20 साल सारंगपुर मंदिर का कोठारी बनकर रहा। मैं इतना भाग्यशाली हूँ कि हमारे सभी स्वरूपों काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी सबका खूब लाभ मिला है। यदि सबसे छोटे से छोटे कोई सेवक हो, तो वो ये साधु निर्मळदास हैं। हम दास बनकर साहेब को राज़ी करने का उद्यम करें। प्रेमस्वामीजी हमारे गुरु स्थान पर हैं।* ***धरती पर जो किसी को नहीं मिले वो हमें मिले हैं। भले ही दिखने में इंसान लगते हों, पर ये अलौकिक मूर्ति है। अब हम समय न गंवायें।*** *आज प्रेमस्वामीजी और साहेबजी, स्वामीजी का पूरा वारसा रख रहे हैं। उनका समागम करने से*

*अंतर में शांति हो जाती है। **हम सदा सुहागन हैं, हमारे मालिक खूब समर्थ हैं, दिव्य है, साकार हैं। उन्हें हमें विवश और मोहताज नहीं करना है। उनके अंतर की प्रसन्नता पानी है।** हमारा ऐसा आत्मीयता तथा संप, सुहृदभाव और एकता का जीवन बने। ऐसे कितने ही सूत्र हमें मिले हैं। अभी संप-सुहृदभाव में entry नहीं ली थी कि स्वामीजी ने दास का दास बनने का सूत्र दिया, फिर आत्मीयता का सूत्र दिया। मुश्किल से वह कुछ समझ में आने लगा था कि प्रेमस्वामीजी ने और चार सूत्र दिये हैं। Class में entry तो मिल गई है, पर अभी हमारी शुरुआत ही है। तो, आज साहेब को प्रार्थना करें कि उनके मुताबिक़ हमारा जीवन बने।*

सद्गुरु संत प.पू. अश्विनदादा (मोगरी)

*...मेरे साथीदार **प.पू. शांतिदादा** ने वर्ष 2002 के 14 मार्च को अपनी डायरी में आर्टिकल लिखा था। वह ब्रह्मनिर्झर पत्रिका के इस बार अंक के मुख्य पृष्ठ पर छापा है। उसका शीर्षक है— **साहेब कौन हैं?** साहेब को हर एक व्यक्ति अपनी दृष्टि से देखता और पहचानता है। जैसे निर्मळस्वामीजी ने बताया कि साहेब को निहारने के लिये ऐसी दृष्टि की ज़रूरत है, ऐसी दृष्टि शांतिदादा के पास थी। आज से 20 वर्ष पहले उनके द्वारा लिखा हुआ ये आर्टिकल—*

साहेब कौन हैं?

जो बाह्य दृष्टि से दिखाई देते हैं, वो?
सबके साथ आनंद कराते हैं, वो?
हमारे ऊपर प्रेम बरसाते हैं, वो?
कथा-वार्ता द्वारा ज्ञान परोसते हैं, वो?
हमारे व्यावहारिक कार्यों में दिलचस्पी लेकर हमसे पूछें, वो?
हमारे सुख-दुःख में साथ खड़े रहें, वो?
हम जो चीज़ उन्हें दें, उसका बखान करके स्वीकारें, वो?
हम जो कुछ समर्पण करें, उसकी महिमा बतायें, वो?
हमारी मायिक दृष्टि, बुद्धि, अपनी कक्षा से हमने उनका जो मूल्यांकन किया, वो?
मगर साहेब तो सबसे विशेष हैं—
उनके रोम-रोम में श्रीजी-स्वामी का वास है, उन्हें गुणातीतानंदस्वामी का साथ है
वे योगीजी महाराज के वारिसदार हैं, उनके साथ उनका ऐक्य है।
उनका हलन-चलन और पल-पल का जीवन, श्वास केवल स्वामीश्रीजी को प्रसन्न करने के लिये है। स्वामीश्री उनके द्वारा इस ब्रह्मांड में विचरते हैं। वे सबके हृदय में प्रभु को पधराते हैं और परब्रह्म के दास हैं।

ब्रह्मस्वरूप अवस्था में वर्त कर सबको ब्रह्मदर्शन कराते हैं।

सबका मायिकभाव टालकर ब्रह्मभाव दृढ़ कराना ही उनका एकमात्र उद्यम है।

स्वामीश्री शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की महिमा समझाना ही उनका एकमात्र ध्येय है।

आज हमारी दृष्टि में मानवरूप में जो दिखते हैं, वो साहेब हैं? नहीं, वे साकार ब्रह्म का स्वरूप हैं। ऐसे दिव्य साहेब हमें मिले हैं। इन्होंने हमें स्वीकार कर अपना बनाया, प्रभु का होकर जी ही लेना है ऐसा भाव उन्होंने हममें जगाया। उनकी कृपा से हमारे लौकिक बंधन छूट रहे हैं। उनके संकल्प से ही हम दोषरहित हो रहे हैं और हमारे स्वभाव छूट रहे हैं। ***योगी बापा*** *ने उन्हें आशीर्वाद दिये हैं—*

हे जसुभाई साहेब, आपके द्वारा 6000 एकांतिक तैयार होंगे।

बापा का ये संकल्प साहेब द्वारा सिद्ध होगा। उस संकल्प में हम आ गये, इस बात का गौरव करना है। भारतीय सेना के लेफ्टिनेंट जनरल श्री अरविंद महाजनजी ने साहेब के पास आज नारायणी सेना में शामिल होने का संकल्प किया है। वो योगी बापा के संकल्प और आशीर्वाद का ही परिणाम है। ***अब साहेबजी को ब्रह्मस्वरूप मानना ही हमारी साधना है।*** *'ब्रह्म' सब में हर समय विचर रहा है, नियंत्रण करता है। हमारे आसपास सब मुक्तों में है। वो हमारे अंतर सिंहासन पर भी है। सब में वे ही खेल रहे हैं, जिस दिन सभी में सर्वथा यह दर्शन हो जायेगा-माना जायेगा, तब उन्हें ब्रह्मस्वरूप माना कहा जाये।* ***साहेब मानवरूप में हैं, पर मानव नहीं है। मानव स्वरूप में साकार ब्रह्म हैं, ये मानना ही हमारी साधना है। उनकी कोई क्रिया में मनुष्यभाव नहीं लाना।*** *अनंत जीवों के कल्याण के लिये हर पल जीते हैं।* ***बुद्धि में न बैठे-शंका हो, तो उसका निवारण करना हमारी साधना है। अखंड अहोहोभाव में रहना हमारी साधना है। उनमें श्रीजी-स्वामी विचरते हैं यूं मानना वो साधना है। उनकी एक भी क्रिया वो स्वयं नहीं करते। उनका हलन-चलन भी परब्रह्म पर नियंत्रित है, ये मानना ये हमारी साधना है।*** *आंशिक नहीं, पूर्णरूप से उनका स्वीकार करना। हमारे संकल्प वो पूरे करें तो माना जाता है, लेकिन अंतर्यामीरूप से जवाब दें तो भी मानना है। हमारी पसंद के मुताबिक़ वर्तते हैं, तो बहुत अच्छे लगते हैं और माने जाते हैं। इसी प्रकार जब वे हमारे संकल्प तोड़ें, तब मान पायें। हमारी पसंद को रोकें तो भी उन्हें मानें, वो हमारी साधना है।*

तो, हे मुक्तों! हमें यह सिद्ध-दृढ़ करना है। साहेबजी में श्रीजी-स्वामी को निहारें। स्वामी के अनुरूप होने के लिये हम साहेब के संतों के साथ आत्मबुद्धि और प्रीति बढ़ायें, जो साहेब को

अपनी आत्मा मानकर साधना कर रहे हैं। उन्होंने अपने जीवन को साहेब के चरणों में सौंपा है। उन्होंने साहेब का ब्रह्मस्वरूप के भाव से अनुभव किया है। उनकी हर क्षण साहेब की भक्ति में बीतती है। उनके समागम से, उनके वचनों में विश्वास करने से साहेब में ब्रह्मस्वरूप के दर्शन होंगे। साहेब में 'स्व' का समर्पण हो पायेगा। उनके लिये संबंध वालों की सेवा कर लें। अपने आत्म कल्याण की गरज दिखायें। सभी को संबंध से निर्दोष मानकर सेवा करें। वो सही अर्थ में हमारी गुरुभक्ति, प्रभुभक्ति होगी। ***किसी मुक्त को ज़रूरत है और हम मदद करें, वो भी सेवा है। वो भक्ति होगी, पराभक्ति नहीं। पराभक्ति तो निर्दोषबुद्धि के प्रताप से ही संभव हो पाती है। प्रभुस्वरूप को निर्दोष मानकर उन्हें राज़ी करने जो कुछ भी करें, वो प्रभुभक्ति। ऐसी पराभक्ति हमें साहेब में साकार ब्रह्मस्वरूप के दर्शन करायेगी।*** *इसके लिये साहेब के आदेश अनुसार भजन करते-करते क्रिया करें। जिससे कि क्रिया का पाश ना लगे। सारी क्रियाएँ पराभक्ति बनें। मुक्तों में महाराज को देखें, संबंध वालों की सेवा अहोभाव से हो पाये। अंतर में 'ब्रह्म' का आनंद प्रगटे। जगत के व्यवहार के बंधन छूट जायें। केवल ब्रह्मस्वरूप ऐसे गुरुहरि साहेब के साथ का संबंध पक्का हो। आज हम भक्तिभाव से प्रागट्यपर्व मना रहे हैं। उनके संकल्प से हम सब इस मार्ग पर हैं। तो, उनके चरणों में गद्‌गद कंठ से प्रार्थना करके निहाल हो जायें, ऐसा बढ़िया मार्ग शांतिदादा हम सबको देकर गये हैं। संप्रदाय में आज के उत्सव को फूलडोल कहते हैं। सद्‌गुरु निष्कुळानंदस्वामी द्वारा रचित पद– 'महाबळवंत माया तमारी' के अनुसार से हम वर्त पायें। स्वरूपों के साथ संबंध दृढ़ हो और उनकी दिव्य अलौकिक मूर्ति के प्रति का निर्दोषभाव सदैव रहे, यही मंगल प्रार्थना...*

प.पू. गुरुजी (दिव्य संदेश)

आज गुणातीत समाज के शिरछत्र संतभगवंत साहेबजी का 85वाँ प्रागट्य दिन!

हम जब दादर अक्षरभुवन में रहते थे, तब प.पू. योगीबापा की आज्ञा से गुरुहरि काकाजी, पप्पाजी अकसर सुबह संतों की सभा में लाभ देने आते। मुझे याद है कि तब साहेब की खूब महिमा गाते हुए काकाजी हमें कहते–

''हमारे जसभाई को देखना, खूब होशियार हैं। विद्यानगर कॉलेज में पढ़ते हैं। Hostel में रहते हैं, M.Sc. में हैं। भगवा कपड़े नहीं पहने, पर तुम्हारी तरह ही सब नियम पालते हैं... ब्रह्मविद्या पढ़े हुये 80 राहबरों के वे महारथी हैं। आपकी तरह उन्हें भी हमारे साथ खूब लगाव है।''

काकाजी जिनके प्रति ढले हुए दिखें, उनका मुझे सहज ही आकर्षण रहता। इसके अतिरिक्त, योगीबापा के प्रति इनकी अनन्य निष्ठा और खूब बुद्धिशाली होने के बावजूद काकाजी और पप्पाजी जैसे गुणातीत स्वरूपों के समक्ष अत्यंत सरल रहकर साहेब ने जो भक्ति अदा करी,

उनके वो जीवन के प्रसंग साधकों के लिये सच में आदर्शरूप हैं।

प्रथम मिलन में ही साहेब सबको अपने में खींचते हैं। वो इसलिये कि काकाजी की तरह खूबसूरत हैं? वो तो वे हैं ही, लेकिन उनमें निहित ब्राह्मीशक्ति और सुहृदभाव से वर्तने की उनकी सहज अभीप्सा, संबंध में आने वाले हर एक को स्पर्श करती है। योगी बापा के आशीर्वाद से बने अनुपम मिशन के नेकटाई साधु और सभी के प्यारे साहेब काकाजी के कहे अनुसार ठहरावरहित गुरुमुखी वर्त कर, आज गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के परिश्रम की ओर नज़र रख कर, श्री अक्षरपुरुषोत्तम युगल उपासना के राजमार्ग पर दृढ़ता से सबको अग्रसर कर रहे हैं।

हाल ही में मेरे जन्मदिन निमित्त वे दिल्ली मंदिर में सबको दर्शन देने पधारे थे, तब उनके साथ गोष्ठी करते हुए उनकी बातों में श्री अक्षरपुरुषोत्तम युगल उपासना के रहस्य का जयकार करने की तीव्र इच्छा देख कर, शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज के प्रति की उनकी भक्ति और जीवंत स्मृति की ख़ुमारी का दर्शन हुआ।

***काकाजी** कहते – सत्पुरुष की पहचान, उनके गुरु कैसे हैं, वो स्वयं कैसे हैं और उनके द्वारा सर्जित समाज कैसा है, उससे ख्याल पड़ता है...*

- *श्रीजी के अखंड धारक और अति समर्थ **योगीजी महाराज साहेबजी के गुरु**!*
- *उन **योगीबापा** ने – 'आपको भगवा नहीं देना, बल्कि आपका हृदय भगवा करना है... ' ऐसा कहकर अपना भागीदार बनाया, **ऐसी अलौकिक गुणातीत विभूति साहेब**!!*
- *आज उनके निःस्वार्थ प्रेम और सुहृदभाव से तैयार हुए, शुद्ध युगल उपासना का अनुसरण करते, सकारात्मक भावना और **माहात्म्य से युक्त मुक्त समाज** का हम सब दर्शन कर रहे हैं!!!*

*साहेब के 85वें प्राकट्य दिन के शुभ-मंगलकारी दिन भगवान स्वामिनारायण और सभी स्वरूपों के श्रीचरणों में प्रार्थना कि अपने गुरु के पास जिस प्रकार अपना मन, बुद्धि, चित्त छोड़ कर साहेब वर्ते और उनके अत्यंत प्रिय पात्र बने, वैसे ही हम सब उनकी मरज़ी में वर्त कर, उनके परिश्रम को सफल करने लगे ही रहें और **हम सबके श्रेयार्थ साहेब दीर्घायु निरामय रहकर सबको ब्रह्मानंद में सराबोर रखें, यही भावना**!*

संतभगवंत साहेबजी

... स्वामिनारायण भगवान की कृपा से योगीबापा, प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी, काकाजी, पप्पाजी, हरिप्रसादस्वामी, गुरुजी, प्रेमस्वामी, निर्मळस्वामी, संतों, अश्विनभाई, शांतिभाई, मनोजदासजी, सर्व व्रतधारी संतों और आप सबका आशीर्वाद मिल गया, तो जीवन धन्य हो गया! आज भी मुझे

स्मृति ईदम् है कि 1956 सोखड़ा में ***16 साल की उम्र में बापा की मुझ पर दृष्टि पड़ी, तो आज की भाषा में love at first sight हो गया! जो कुछ हुआ, जो कुछ हो रहा है और जो जीवन हम जी रहे हैं, उसका बल-हूँफ उन्होंने दी और जैसी ज़रूरत थी, वैसा योग उन्होंने दिया...*** *बापा ने अपनी हयाती में दादुकाका का योग देकर हमें उनसे जोड़ा। फिर काकाजी से पूछ कर सब कुछ करते और उन्होंने भी योगीजी महाराज की अपरंपार महिमा गाई।* ***3 फरवरी 1952 को योगीजी महाराज ने काकाजी को जो समाधि कराई, उसके बाद पूरे समाज को अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना समझ में आई।*** *72 घंटे की इस समाधि का विवरण करते हुए काकाजी ने बताया कि अक्षरधाम में जिन महाराज का उन्होंने दर्शन किया, वही महाराज योगीजी महाराज में विद्यमान हैं। उनके कहने का तात्पर्य यह था कि देह त्याग कर जिन महाराज को प्राप्त करना है, वे योगीजी महाराज के रूप में मिले हैं। यह स्वीकार कर लें, वही अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना कही जाये। दादुकाका ने जो अलख जगाई, उससे हम युवक निहाल हो गये... साथ ही बापा की आज्ञा से भगतजी महाराज के जीवन चरित्र पढ़ते थे, तो बहुत सूझ मिली। बापा ने छात्रालय का नाम* ***'अक्षरपुरुषोत्तम छात्रालय'*** *दिया था। उन्होंने बताया कि अक्षरपुरुषोत्तम उपासना का प्रवर्तन करने के लिये शास्त्रीजी महाराज मूल संस्था से बाहर निकले। सो, इसी दिशा में बापा ने हमें अग्रसर किया।* ***हम बहुत भाग्यशाली हैं कि इस युग में हमें भक्ति करने का अवसर प्राप्त हुआ है।***

एक राजा नगर में निकला, तो उसके पैर में धूल लग गई, क्योंकि तब चप्पल वगैरह कुछ होती नहीं थी। राजमहल में आकर उसने अपने दीवान को बुला कर कहा कि मैं नगर में नंगे पाँव जाता हूँ तो धूल पैरों में लग जाती है। तो पूरे नगर के रास्ते पर चमड़ा लगा दो, ताकि धूल न लगे। दीवान ने राजा से कहा कि मुझे सात दिन का समय दो। दीवान भक्त हृदय था, तो उसने प्रभु से प्रार्थना करी कि कितने जानवरों को मारूँगा, तब इतना चमड़ा इकट्ठा होगा। हे प्रभु, रास्ता बताओ कि इतनी हिंसा न हो। प्रभु ने उसे प्रेरणा करी और सात दिन के बाद उसने राजा से कहा कि आप केवल नगर में नहीं, कहीं भी जाओगे तो पैरों में धूल नहीं लगेगी। दीवान ने अपनी दो जेबों में से चमड़े के दो पट्टे निकाल कर राजा के पैर में बाँध दिये और कहा कि अब आप कहीं भी चल कर जाओ। तब से बूट की शोध हुई है।

जिस प्रकार पूरी दुनिया में कारपेट बिछाने से अच्छा है कि खुद चप्पल पहन लें, वैसे ही दुनिया सुधारने से अच्छा है कि खुद के स्वभाव छोड़कर हम सुधर जायें। *विज्ञान बाह्य रीति से कितना भी विकास करेगा, लेकिन आध्यात्मिक विज्ञान भीतर का है। काम, क्रोध, मोह, हठ, मान,*

ईर्ष्या, ईगो, अहंकार के भाव हमें दुःखी करते हैं, लेकिन इससे परे कैसे होंगे? ***हे भक्तों! हे श्रेयार्थी साधकों! सुख की खोज में निकले सभी भाई-बहन, सब यह तय करो कि सुखी होना है? आनंद में रहना है? परम शांति प्राप्त करनी है? तो, उसके लिये शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज ने हँसते-खेलते हुए अक्षरपुरुषोत्तम उपासना का श्रेष्ठ मार्ग बताया कि प्रभु संत द्वारा प्रगट हैं।***

हर एक के घर का एक address होता है, वैसे गुणातीत स्वरूप भगवान का address हैं। ये संत भगवान के रहने का धाम हैं, इनके द्वारा भगवान हमें मिले हैं... *सही बुद्धिशाली वही है कि जिसे परख है कि परमात्मा कहाँ है! प्रभु राम की कृपा से वानर वैकुंठ के वासी बने। गोपियों को श्री कृष्ण मिले, तो वे गोलोकवासी बन गईं। काठी, कोळी, कुम्हार, कणबी, बढ़ई, दरज़ी, मोची इत्यादि को स्वामिनारायण भगवान मिले, तो वे अक्षरधामवासी बन गये।* ***हमारे जैसी तूफानी, मस्तीखोर वानर सेना को योगीबापा मिल गये, तो नारायणी सेना बन गई।*** *ये प्रगट प्रभु की ताक़त है। युवकों में इतनी शक्ति नहीं थी कि मानव बन सकें और मानव में से नारायणी सेना में शामिल हो सकें। योगीजी महाराज की दृष्टि से सबका रास्ता बदल गया।*

वालिया साहेब, अरविंद महाजन जैसे soldiers हमारी रक्षा बार्डर पर शत्रुओं से करते हैं, वैसे नारायणी सेना भजन करती है, तो हमारे अंतर शत्रुओं से रक्षा होती है। *जैसे गुरुजी ने पत्र में लिखा कि किसी सत्पुरुष की पहचान उसके गुरु और शिष्यों द्वारा होती है।* ***आज चाहे स्वामिनारायण के कोई भी मंदिर खूब बढ़िया कार्य करते दिखाई पड़ रहे हैं, लेकिन भगवान और साधु की मरज़ी में जीवन जीयेंगे, तो अंदर या बाहर की कोई परिस्थितियाँ हमारा आनंद डिगा नहीं पायेंगी...*** *अभी रामलला की मूर्ति प्रतिष्ठा हुई, तो dry state घोषित किये गये। Dry state यानि liquor नहीं पीना, वैसे ही जब सत्संग सभा होती हो, उत्सव होते हों, तो* ***हमें dry mobile day बनाना चाहिये, क्योंकि सभा में बैठे हुए भी mobile देखते रहते हैं या उस पर काम करते रहते हैं। Mobile addiction से छूटना है।*** *पहले भगवान भजना जितना कठिन था, आज उतना ही आसान है...* ***किसी की अमहिमा, निंदा की बात न करने का संकल्प 24 घंटे 12 महीने करो।*** *बापा कहते कि कोई गाली देते हुए 'साला' बोले, तो positively जवाब देना कि धन्य है आप जैसा बहनोई पाकर में धन्य हो गया, तो वो शरमा जायेगा... 'होलिका और प्रहलाद' की कथा से ये सीखना है कि यदि भक्तों की झंझट करेंगे, तो भगवान भी निःसहाय होते हैं... धुलेन्डी भक्त की विजय का आनंद पर्व है। हमेशा दिव्यभाव और निर्दोषभाव रख कर प्रभु की भक्ति का सामूहिक आनंद प्राप्त किया करें, ऐसा हमारा तंत्र बनायें...*

17 अप्रैल प्रातः

रामनवमी- श्रीजी महाराज की जयंती निमित्त पंचामृत अभिषेक...

17 अप्रैल सायं

रामनवमी - श्रीजी महाराज की जयंती निमित्त 'कल्पवृक्ष' हॉल में सभा...

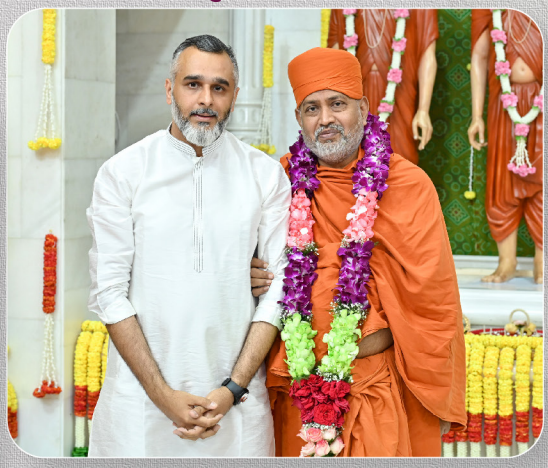

रामनवमी – भगवान स्वामिनारायण जयंती

रामनवमी का त्यौहार चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी को मनाया जाता है, जो मार्च-अप्रैल में आता है। हिंदू धर्मशास्त्रों के अनुसार इस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान **श्री रामजी** का अवतरण हुआ था। विक्रम संवत् के चैत्र मास की रामनवमी यानि **3 अप्रैल 1781** को **भगवान स्वामिनारायण** का प्रादुर्भाव उत्तर प्रदेश के अयोध्या के निकट **'छपिया'** गाँव में हुआ। उनके माता-पिता **धर्मदेव** और **भक्ति देवी** ने भारतीय परंपराओं के अनुसार, जन्म के छठे दिन उनका नाम **घनश्याम** रखा। बाल्यकाल से ही आध्यात्मिक जीवन के प्रति उनका झुकाव और अल्पायु में ही वेदों तथा हिन्दू शास्त्रों के ज्ञाता होना उनकी असाधारण व आध्यात्मिक प्रतिभा का प्रमाण है।

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी ने एक बार **भगवान स्वामिनारायण** से पूछा था कि साधना के चार रूपों – आत्मनिष्ठा को आत्मसात् करना, ध्यान करना, बीमारों की सेवा करना या कथा करना-आध्यात्मिक प्रवचन देना, उनमें से उन्हें किस पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए? तब **भगवान स्वामिनारायण** ने उत्तर दिया कि स्वामी को कथा करनी चाहिए। उन्होंने इसका मर्म भी समझाया कि कथा करने से उन्हें स्वयं और श्रवण करने वाले दोनों को आध्यात्मिक रूप से लाभ होगा। तत्पश्चात् स्वामी ने कथा करने पर अधिक ज़ोर दिया। वे जहाँ भी गये, उन्होंने अपने जीवंत आध्यात्मिक प्रवचनों में भगवान स्वामिनारायण के **पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण** रूप की महिमा का गुणगान किया और पंच विषयों (शब्द, रूप, रस, गंध और स्पर्श) का सरल भाषा में स्पष्टीकरण किया। उनके संपर्क में आये तत्कालीन संतों और हरिभक्तों ने उनकी वार्ता लिखीं, 19वीं सदी के अंत में गुजराती भाषा में **'स्वामीनी वातो'** नाम से यह संकलन प्रकाशित हुआ।

वचनामृत के पश्चात् श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संप्रदाय में इस ग्रंथ का अनोखा स्थान है। क्योंकि इसमें साधना के सिद्धांत, एकांतिक धर्म और भगवान स्वामिनारायण की महिमा का भरपूर सार है। रोज़ सायं चिदाकाश हॉल में धुन-भजन के बाद प.पू. गुरुजी **'स्वामी की बातें'** पढ़वा कर उसका हिन्दी में निरूपण करते हैं। **प.पू गुरुजी को तो यह ग्रंथ अत्यंत प्रिय है और अपने जीवन में साकार करके, बहुत सरल भाषा में सबको ये बातें समझा कर जीवन जीने की कला सिखाते हैं।** कई बातों की पंक्तियाँ तो उन्हें इतनी याद हैं कि पढ़ने वाले से पहले ही वे आगे की पंक्ति स्वयं बोल देते हैं या कहेंगे कि देखो, यह line underline करी हुई होगी। ऐसा प्रतीत होता है कि अनंत कोटि ब्रह्मांड जितना ज्ञान उनके पास है, परंतु वे अपनी दिव्यता को छुपा कर रखते हैं। बस, साधक को विचार करना है कि इस विशाल समुद्र में से कितना पानी वो भर सकता है?

कलयुग के अवतारी श्री नीलकंठ वर्णी कहो या श्री सहजानंदस्वामी ने 49 वर्ष की अल्प आयु में अपने आश्रित जीवों को अपनी मूर्ति का जो सुख दिया, वह तो अवर्णनीय है। लेकिन, उनका स्मरण-चिंतन जितना करेंगे, उतने शाश्वत् सुख की अनुभूति होती रहेगी। सो, उनके प्राकट्य पर्व निमित्त उनके लीला प्रसंगों के वांचन से ख्याल आता है कि जीवों के कल्याण हेतु उन्होंने

कितना परिश्रम किया। इस हेतु **2 से 17 अप्रैल** तक प.पू. गुरुजी की निश्रा में **'स्वामी की बातें'** के साथ-साथ **'श्रीजी चरित्र विहार'** का पारायण करना निश्चित किया गया। **पू. समीरभाई दवे** इसका पठन करते और प.पू. गुरुजी साथ-साथ निरूपण करते हुए सरल भाषा में समझाते।

17 अप्रैल—रामनवमी की प्रातः **प.पू. गुरुजी** ने नित्य पूजा में **श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज** की छोटी मूर्ति सहित **अ.म.मु. गोपाळानंदस्वामीजी की प्रसादी के लड्डू गोपालजी** का पंचामृत से अभिषेक करके तुलसी दल अर्पित किया। सायं 8:00 बजे से 'कल्पवृक्ष' हॉल में सभा का आयोजन किया था। प.पू. गुरुजी के आसन के पीछे सुंदर उपवन का दृश्य बनाया था, जिसमें एक मोर श्रीजी महाराज की मनोहर मूर्ति का दर्शन कर रहा था। गुरुहरि काकाजी एवं गुरुहरि पप्पाजी की मूर्ति के समक्ष पीले फूलों से सुशोभित झूले में भगवान स्वामिनारायण एवं मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी की मूर्ति का कटआउट विराजित किया था। सभा के शुभ आरंभ में **पू. डॉ. पंकज रियाज़ीजी** ने श्री रामजी की स्मृति कराते हुए भजन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् **पू. राकेशभाई शाह, पू.ऋषभ नरुला, पू. अमित शुक्ला** एवं **सेवक विश्वास** ने **भगवान स्वामिनारायण** के जीवन पर आधारित हिन्दी भजन **'जय जय स्वामिनारायण'** तथा **'व्हाला रुमझूम करतां कान मारे घेर आवो रे...'** गुजराती भजन गाकर मानो श्रीजी महाराज के साक्षात् आगमन का एहसास करा दिया। तत्पश्चात् **पू. आनंदस्वरूपस्वामी** ने रोज़ की भाँति 'स्वामी की बातें' प्रकरण 1 की 212 से 216 तक पढ़ीं और **पू. राकेशभाई शाह** ने भगवान स्वामिनारायण जयंती के निमित्त 'श्रीजी चरित्र विहार' के प्रकरण पाँच का प्रसंग **'अंतिम जन्म'** पढ़ा। इन दोनों पुस्तकों का निरूपण करते हुए **प.पू. गुरुजी** ने निम्न आशीर्वाद दिये—

- ***महाराज की ऐसी लगनी लग जाये,*** *उनके सर्वोपरिभाव का ऐसा निश्चय हो जाये कि हम वही बातें करें,* ***जिसमें केवल महाराज की स्मृति हो*** *और* ***यही संकल्प हो कि कब मंदिर जायें, कब स्वामी के पास जायें, यही एक लगनी लग जाये...***
- *मैंने पहले भी यह बात समझाई है कि एक राजा जंगल में घूमते-घूमते अपने समूह से अलग हो गया। उसे प्यास लगी तो कोई चाकर वगैरह उसके पास था नहीं। उसने दूर देखा कि एक झोपड़ी में बाबा बैठा है और उसके पास एक मटका रखा है। बाबा कुछ सिरफिरा होगा, उसने सोचा कि यह व्यक्ति ज़रूर पानी के लिए यहाँ आ रहा है, तो उसने मटका फोड़ दिया। यह देख कर राजा वहाँ से चला गया, लेकिन उसने सोचा भले उस बाबा ने मुझे पानी नहीं पिलाया, पर मैंने तो मन में सोचा था कि यदि वह मुझे पानी दे देगा, तो उसे एक गाँव भेंट में दे दूँगा। तो, अगले दिन राजा ने बाबा को बुलवाया। बाबा तो डर गया और माफ़ी मांगने लगा। पर, राजा ने कहा—डरो मत, तुमने भले पानी नहीं पिलाया, लेकिन मैंने संकल्प किया था कि जो मुझे पानी पिलायेगा, मैं उसे एक गाँव बख़्शीश में दूंगा। तो, ये ताम्रपत्र पर एक गाँव भेंट में लिख कर तुम्हें देता हूँ, उसकी आमदनी से तुम्हारा गुज़ारा चलता रहेगा। इस तरह* ***बड़े संत खुश हो जायें, तो अक्षरधाम हमें बख़्शीश में दे दें। ऐसी गुणातीत परंपरा में हमें***

रहने को मिला है। *हमारा इतना फर्ज़ है कि ऐसे संत की गोद में बैठ जायें और वे जैसे राज़ी हों, वैसे करते रहें।* ***उन्हें राज़ी करने के लिए संबंध वाले मुक्तों-भक्तों के साथ सुहृदभाव से रहें।*** *हम ऐसा मानते हैं कि हम यदि नियम इत्यादि से नहीं बरतेंगे, तो हमारा कल्याण नहीं होगा। पर, भगवान तो अपने भक्तों को लाड़ लड़ाने के लिए-कल्याण करने के लिए आते ही हैं, वे भी अपना स्वभाव छोड़ते नहीं हैं...*

- *महाराज ने संतों को समझाया कोई भी संबंध में आये, उसके साथ किसी भी तरह अपना संबंध बना रहे, सो उसे जो-जैसे चाहिए, उसे वो देकर टिकाये रखना।*
- *भगवान के हर चरित्र के अंदर—काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, महंतस्वामीजी जैसे अखंड* ***भगवान रखे साधु के हर चरित्र को जो दिव्य मानेगा, वो माया को तर जायेगा।*** *उसे और कुछ समझने का बाकी नहीं रहता है।*
- *रोटी तो भगवान और साधु को देनी ही है। देह छोड़ कर* ***अंतकाल के समय*** *यमदूत नहीं आयेंगे,* ***खुद भगवान आयेंगे या फिर उन्हें धारण करने वाले संत लेने आयेंगे...***

प.पू. गुरुजी के आशीर्वाद के पश्चात् **पू. राकेशभाई शाह, पू.ऋषभ नरूला** एवं **सेवक विश्वास** ने भजन प्रस्तुत किये और **भगवान स्वामिनारायाण** के प्रागट्य दिन एवं चैत्र शुक्ला दशमी के अनुसार **प.पू. गुरुजी के पार्षदी दीक्षा** दिन निमित्त **पू. गिरीश गुप्ताजी** व **पू. रामकुमार गर्गजी** ने **प.पू गुरुजी** को सभी की ओर से हार अर्पण किया। प.पू. गुरुजी की प्रसादी का हार **पू. सुहृदस्वामीजी** को **पू. अभिषेक नंदाजी** ने अर्पण किया और फिर प्रसादी का यही हार **प.पू दीदी** को **पू. बंसरी दीदी** ने अर्पण किया। तदोपरांत प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में सभी संतों ने **श्री ठाकुरजी की आरती** की और **'धर्म घेर आंनद भयो, जय बोलो घनश्याम की...'** गूंज से कल्पवृक्ष हॉल का वातावरण दिव्य-दिव्य हो गया। फिर रामनवमी का महाप्रसाद लेकर सभी ने प्रस्थान किया।

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 28.5.'24, मंगलवार — गुरुहरि पप्पाजी महाराज का शाश्वत् स्मृति दिन
(2) दि. 1.6.'24, शनिवार — गुरुहरि पप्पाजी महाराज का दृष्टा दिन
गुणातीत ज्योत स्थापना दिन
(3) दि. 3.6.'24, सोमवार — एकादशी, व्रत
(4) दि. 4.6.'24, मंगलवार — गुरुहरि योगीजी महाराज की प्राकट्य तिथि
प.पू. गुरुजी का 63वीं भागवती दीक्षा तिथि
(5) दि. 12.6.'24, बुधवार — गुरुहरि काकाजी महाराज का 106वाँ प्राकट्य दिन
(5) दि. 16.6.'24, रविवार — भगवान स्वामिनारायण का स्वधामगमन दिन
(6) दि. 18.6.'24, मंगलवार — भीम एकादशी, व्रत
(7) दि. 21.6.'24, शुक्रवार — वटसावित्री

भजन

(राग–इक्को मिक्के)

कोई मोल न गुरु की सच्ची प्रीत का,
उनसे हार के आनंद मिले जीत का,
करी जीव से हमारे सच्ची दोस्ती,
बस गई रूह में है सोणी मूर्ति,
मुखड़े से नज़र नहीं हटती।

दास भक्तों के तेरे बन पायें हम,
उनका प्रेरक तू ही मान जायें हम,
सब में दिखे बस तेरा ही नज़ारा
तेरा अल्प संबंधी भी हो प्यारा
मेरे आतम का जोगी तू है न्यारा
राह मोक्ष की तुमसे ही पाई
मुझे और क्या चाहिये! हाय...
मेरी थाम ली गुरुजी ने कलाई
मुझे और क्या चाहिये!

मेरे नाम संग जुड़ा तेरा नाम है,
तुमसे ही तो मेरी पहचान है,
ज़िम्मेदारी निभाऊं तेरे बल से,
मेरा वर्तन तेरा पैग़ाम है,
शान बढ़े तेरी ये ही निशान है,
बन पाऊं मैं तेरी परछाईं,
नहीं कुछ और चाहिये, हाय...
मेरी थाम ली गुरुजी ने कलाई
मुझे और क्या चाहिये...

मिले गुरु मेरे सच्चे दिलदारा
मुझे और क्या चाहिये! हाय...
मेरी थाम ली गुरुजी ने कलाई,
मुझे और क्या चाहिये!
करे सदा मेरे जीव की भलाई,
मुझे और क्या चाहिये!
मेरी थाम ली गुरुजी ने कलाई
मुझे और क्या चाहिये!

गुस्ताख़ियाँ नज़र में न लेते
हँस के माफ़ आज तक का हो करते } -2
फिर भूल वो न दोहरायें हम
भले निश्चिंत आप कर देते हो
प्रभु में रह कर प्रभु देते...
भूल-चूक तूने दिव्य बनाई
मुझे और क्या चाहिये! हाय...
मेरी थाम ली गुरुजी ने कलाई
मुझे और क्या चाहिये!!

एक अर्जी है सुनो मेरे काकाजी,
सदा निरामय रहे म्हारे गुरुजी, } -2
संग उनके शताब्दी मनायें हम,
एक होके सुहृदभाव से जीयें हम,
ये निशान रहे नज़रों में हरदम,
राज़ी गुरुजी हों वही है कमाई,
नहीं कुछ और चाहिये, हाय...
मेरी थाम ली गुरुजी ने कलाई,
मुझे और क्या चाहिये!
मेरी थाम ली गुरुजी ने कलाई,
मुझे और क्या चाहिये!
मेरी थाम ली गुरुजी ने कलाई,
मुझे और क्या चाहिये!

GET IT ON Google Play

Download on the App Store

Install Our Mobile Applications

Bhaav Samadhi - APSM

Bhaav Samadhi

This app contains...

Arti, Bhajan, Swaroop Dhun
Mahapooja Shlok
Vachanamrut, Swamini Vato
H.D. Kakaji Maharaj's Blessings
P.P. Guruji's Blessings

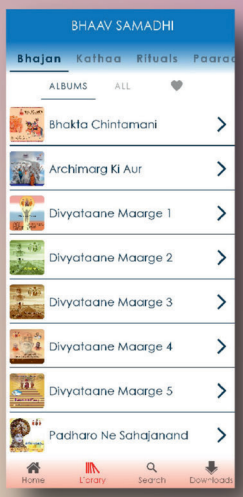

APSM

This app contains...

Calender, Murti Darshan,
Function Photo & Video
Mandir Books
Patrika - Delhi (Bhagwat Kripa)
Powai (Snehal Sindhu)

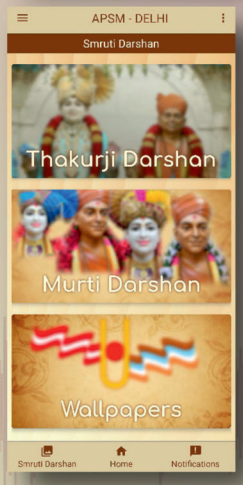

Most of you must be getting Mandir Information Messages about Functions, Events And Sabha, on WhatsApp.
Those who are not getting please save this number
7011521488
Save the above number by name –
Our Temple Updates
After saving, please send Jay Swaminarayan message on the above number and mention your name also.
Thanks!

आप में से अधिकांश मुक्त ***WhatsApp*** द्वारा मंदिर में होते उत्सवों, कार्यक्रमों एवं सत्संग सभाओं की सूचना प्राप्त करते होंगे।
यदि किसी को ये सूचनायें नहीं मिलतीं, तो कृपया
7011521488
नंबर को ***Our Temple Updates*** के नाम से ***save*** कर लें और एक बार अपने नाम के साथ इस नंबर पर जय स्वामिनारायण का संदेश भेज दें।
धन्यवाद!

R.N.I. 28971/77 ***(Air Mail)***
'Bhagwatkripa' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052